लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–1

ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं

जौर्ज डबल्यू बेटमैन

1901

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Seies–1
Book Title: Zanzibar Ki Lok Kathayen (Folktales of Zanzibar)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2019
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Zanzibar

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 5

ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं 7

1 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी 9

2 खरगोश और शेर 19

3 शेर हयीना और खरगोश 30

4 काइट चिड़ियें और कौए 35

5 गोसो मास्टर जी 41

6 बन्दर, साँप और शेर 52

7 बच्चा शिकारी एमको जीचूनी 64

8 जादूगर और सुलतान के बेटे 83

9 हामदानी 92

10 डाक्टर का बेटा और साँपों का राजा 138

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषाओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं

ज़ंज़ीबार पूर्वीय अफ्रीका का एक द्वीप समूह है जो उसके तनज़ानिया नाम के देश में आता है और उसके पूर्व में हिन्द महासागर में स्थित है। इसमें दो बड़े टापू हैं – ज़ंज़ीबार और पैम्बा और बहुत सारे छोटे छोटे टापू हैं। यहाँ लौंग, काली मिर्च, जायफल, दालचीनी बहुत होती है इसलिये इसको स्पाइस द्वीप भी कहते हैं। एक लाल रंग का बन्दर यहाँ की खासियत है। ज़ंज़ीबार द्वीप समूह ऐतिहासिक दृष्टि से एक बहुत ही मशहूर जगह है। आज से करीब 500 साल और उससे भी ज़्यादा पहले से सब समुद्री जहाज़ यूरोप यहीं से हो कर आते जाते थे इसके अलावा यहाँ से मसाले भी बहुत खरीदे जाते थे।

ज़ंज़ीबार की ये लोक कथाओं की यह पुस्तक बहुत पुरानी लिखी गयी है। या यो कहें कि अफ्रीका की लोक कथाओं की यह पुस्तक वहाँ की पहली पुस्तक है। जौर्ज डबल्यू बेटमैन ने ये लोक कथाऐं अंग्रेजी में अनुवाद करके 1901 में प्रकाशित की थीं।[2] उन्होंने अपने preface में लिखा है कि उन्होंने ये लोक कथाऐं खुद वहाँ के लोगों से सुन कर ही लिखी हैं। आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद करके अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं।

आशा है कि इन भूली बिसरी लोक कथाओं की यह पुस्तक आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये ये ज़ंज़ीबार की पुरानी लोक कथाऐं अब हिन्दी में।

---

[2] "Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa". Translated by George W. Bateman. Chicago, AC McClurg. 1901. All the 10 tales are given here. Since this book is old, it is widely available freely on Internet but the text is in English. Here these stories are given in Hindi. Download this book in English from http://www.forgottenbooks.com/books/Zanzibar_Tales_Told_By_Natives_of_the_East_Coast_of_Africa_1000655761 AND Read on the Web Site : https://www.worldoftales.com/Tanzanian_folktales.html

1 बन्दर, शार्क और धोबी की गधी[3]

एक बार की बात है कि कीमा बन्दर[4] और पापा शार्क बहुत गहरे दोस्त बन गये। बन्दर तो एक बहुत बड़े कूयू[5] के पेड़ पर रहता था जो समुद्र के किनार ही उगा हुआ था। उसकी कुछ शाखें जमीन की तरफ थीं और कुछ शाखें समुद्र के ऊपर थीं और पापा शार्क समुद्र में रहता था।

हर सुबह जब बन्दर कूयू पेड़ की गिरी का नाश्ता कर रहा होता तो पापा शार्क किनारे पर पेड़ के नीचे आता और आवाज लगाता — "मुझे थोड़ी सी गिरी दो न कीमा भाई।" और बन्दर उसके लिये कई सारी गिरी नीचे फेंक देता।

यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा कि एक दिन पापा शार्क ने बन्दर से कहा — "कीमा भाई, तुमने मेरे ऊपर बहुत मेहरबानियाँ की हैं। मैं चाहता हूँ कि एक दिन तुम मेरे घर चलो ताकि मैं तुम्हारी उन मेहरबानियों का कुछ बदला चुका सकूँ।"

बन्दर बोला — "मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकता हूँ पापा शार्क। हम जमीन पर रहने वाले लोग हैं पानी में नहीं जा सकते।"

---

[3] The Monkey, the Shark and the Washerman's Donkey – a folktale from Zanzibar, Eastern Africa. [Surprisingly this story has been told and heard in several other countries too, India, Ethiopia etc.]

[4] Keema Monkey

[5] Mkooyoo tree

शार्क बोला — "तुम उसकी चिन्ता मत करो। मैं तुमको पानी में ले भी जाऊँगा और एक बूँद पानी भी तुमको नहीं छू पायेगा।"

बन्दर बोला — "तब ठीक है। चलो चलते हैं।"

सो पापा शार्क ने कीमा बन्दर को अपनी पीठ पर बिठाया और नदी में तैर गया। जब वे लोग बीच पानी में पहुँच गये तो शार्क बोला — "तुम मेरे दोस्त हो इसलिये मैं तुमको सच सच बताता हूँ।"

बन्दर यह सुन कर आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "क्या बात है पापा शार्क क्या बात है? वह क्या सच है जो तुम मुझे बताना चाहते हो?"

पापा शार्क बोला — "सच तो यह है बन्दर भाई कि हमारा राजा बहुत बीमार है और हमारे डाक्टर ने हमें बताया है कि उसकी दवा केवल बन्दर के कलेजे से ही बन सकती है।"

कीमा बन्दर एक पल सोच कर बोला — "तुम तो बहुत ही बेवकूफ हो। तुमने यह बात मुझे चलने से पहले क्यों नहीं बतायी?"

पापा शार्क ने पूछा — "पर वह क्यों?"

कीमा बन्दर थोड़ी देर तो चुप रहा उसने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह अपने बचाव का कोई तरीका सोच रहा था।

कीमा बन्दर को चुप देख कर पापा शार्क ने पूछा — "अरे तुम बोलते क्यों नहीं?"

कीमा बन्दर बोला — "अब मैं क्या बोलूँ क्योंकि अब तो बहुत देर हो गयी पापा शार्क। अगर तुमने यह बात मुझे चलने से पहले बतायी होती तो मैं अपना कलेजा अपने साथ ले कर आता।"

पापा शार्क ने आश्चर्य से पूछा — "क्या मतलब? क्या तुम्हारा कलेजा तुम्हारे पास नहीं है?"

कीमा बन्दर बोला — "ओह तो तुम हमारे बारे में कुछ भी नहीं जानते क्या? हम बन्दर लोग जब बाहर जाते हैं तो अपना कलेजा पेड़ पर ही छोड़ आते हैं और बिना कलेजे के ही इधर उधर घूमते रहते हैं। तुमको मेरा विश्वास नहीं हो रहा क्या? तुम समझ रहे हो कि मैं डर रहा हूँ?

तो फिर चलो, हम तुम्हारे घर ही चलते हैं। वहाँ तुम मुझे मार सकते हो और मेरा कलेजा ढूँढ सकते हो पर वह सब बेकार ही रहेगा क्योंकि वह तो वहाँ है ही नहीं तो वह तुमको मिलेगा कहाँ से।"

बन्दर शार्क का दोस्त था सो शार्क को बन्दर पर विश्वास हो गया। वह बोला — "अगर ऐसा है तो चलो फिर वापस तुम्हारे घर ही चलते है तुम्हारा कलेजा लाने।"

कीमा बोला — "नहीं नहीं, पहले अब हम तुम्हारे घर ही चलते हैं।"

लेकिन शार्क बोला — "नहीं नहीं, पहले तुम्हारे घर चलते हैं तुम्हारा कलेजा लाने के लिये।"

आखिर बन्दर ऊपर से अपने घर जाने के लिये अनमनापन दिखाते हुए अपने घर ही चलने को तैयार हो गया और शार्क बन्दर के घर की तरफ वापस लौट पड़ा।

शार्क के किनारे पहुँचते ही बन्दर जमीन पर कूद गया और जल्दी से पेड़ पर चढ़ गया। वहाँ से वह बोला — "शार्क पापा, मेरा इन्तजार करो। मैं ज़रा अपना कलेजा ले लूँ फिर चलते हैं।"

जब वह पेड़ पर काफी ऊँची टहनियों पर पहुँच गया तो वहाँ जा कर वह चुपचाप शान्ति से बैठ गया। शार्क बेचारा काफी देर तक इन्तजार करता रहा फिर बोला — "कीमा भाई, आओ चलें।"

पर कीमा बन्दर चुपचाप वहीं बैठा रहा। शार्क ने फिर कीमा को आवाज लगायी पर इस बार बन्दर बोला "कहाँ?"

"मेरे घर।"

कीमा बन्दर चिल्लाया — "क्या तुम पागल हो?"

शार्क ने पूछा — "क्यों? मैं पागल क्यों हूँ?"

बन्दर बोला — "क्या तुमने मुझे धोबी की गधी समझ रखा है?"

शार्क ने पूछा — "धोबी की गधी में क्या खास बात है भाई?"

बन्दर बोला — "उसकी खासियत यह है कि न तो उसके कलेजा होता है और न ही उसके कान होते हैं।"

अब शार्क अपनी उत्सुकता नहीं रोक पाया उसने बन्दर से उस धोबी की गधी की कहानी सुनाने के लिये कहा जिसके न तो कलेजा था और न कान थे। बन्दर ने शार्क को धोबी की गधी की कहानी कुछ ऐसे सुनायी —

धोबी की गधी की कहानी

एक धोबी के पास एक गधी थी। उसका नाम पूँडा[6] था। वह धोबी अपनी गधी को बहुत प्यार करता था पर किसी वजह से वह गधी घर से भाग गयी और जंगल चली गयी।

वहाँ जा कर कोई काम न होने की वजह से वह सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने लगी और सुस्ती की ज़िन्दगी बिताने की वजह से वह बहुत मोटी भी हो गयी।

एक दिन सूँगूरा[7] नाम का बड़ा खरगोश जंगल में घूमते घूमते

पूँडा गधी के पास से गुजरा। अब बड़ा खरगोश तो बहुत ही चालाक जानवर होता है। अगर तुम ध्यान से देखोगे तो उसका मुँह हमेशा चलता ही

---

[6] Poonda the she donkey

[7] Soongooraa hare – in Eastern and Southern African countries hare's name is Soongooraa. Poondaa is the she-donkey. Hare is like a rabbit but is bigger than the rabbit. See its picture above.

रहता है। ऐसा लगता है जैसे वह हमेशा अपने आपसे हर तरीके की बातें करता रहता है।

सो जब सूँगूरा बड़े खरगोश ने पूँडा गधी को देखा तो सोचा "ओह यह गधी तो बहुत मोटी है। इसमें से तो हमको बहुत सारा मॉस मिलेगा।"

तो अब वह खुद तो गधी को मार नहीं सकता था सो वह तुरन्त ही सिम्बा शेर[8] के पास गया।

सिम्बा शेर काफी बीमार था और बेचारा अभी पूरी तरह से ठीक भी नहीं हो पाया था सो काफी कमजोर भी था। वह शिकार के लिये भी नहीं जा सकता था और वह भूखा भी बहुत था।

सूँगूरा बड़ा खरगोश उससे बोला — "मैं कल तुम्हारे लिये काफी मॉस ला सकता हूँ जो हम दोनों के लिये काफी से भी ज़्यादा होगा पर तुमको उस शिकार को मारना पड़ेगा।"

सिम्बा शेर बोला — "दोस्त यह तो बड़ी अच्छी बात है। ठीक है, तुम उसे ले कर आओ फिर मैं देखता हूँ।"

यह सुन कर सूँगूरा बड़ा खरगोश तुरन्त ही जंगल में भाग गया। वह गधी के पास पहुँचा और उससे बोला — "ओ मिस पूँडा, मुझे तुम्हारा हाथ मॉगने के लिये तुम्हारे पास भेजा गया है।"

---

[8] Simba lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

पूॅडा गधी ने पूछा — “किसने भेजा है तुम्हें? किसने मॉगा है मेरा हाथ?”

“सिम्बा शेर ने।”

यह सुन कर तो गधी बहुत ही खुश हो गयी। वह बोली — “ओह यह तो बहुत ही अच्छा रिश्ता है चलो जल्दी चलें।”

सो दोनों शेर के घर आ पहुॅचे। शेर ने उनको प्रेम से अन्दर बुलाया और बैठाया। सूॅगूरा बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर को यह बताने के लिये अपनी भौंहों से इशारा किया कि यही है वह शिकार जिसकी मैं कल बात कर रहा था। मैं बाहर जाता हूॅ और मैं वहीं इन्तजार करता हूॅ।

फिर उसने पूॅडा से कहा — “मिस पूॅडा, मुझे थोड़ा काम है, वह काम करके मैं अभी वापस आता हूॅ। तब तक तुम अपने होने वाले पति के पास बैठ कर गपशप करो।” और यह कह कर वह बड़ा खरगोश वहॉ से बाहर भाग गया।

जैसे ही बड़ा खरगोश बाहर गया शेर गधी के ऊपर कूद पड़ा। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। गधी ने शेर को बहुत ज़ोर से मारा। शेर उस समय बहुत कमजोर था। काफी कोशिशों के बाद भी शेर गधी को न मार सका और वह गधी शेर को नीचे पटक कर जंगल में अपने घर भाग गयी।

थोड़ी ही देर में बाहर से बड़ा खरगोश अन्दर आ गया और शेर से पूछा — "सिम्बा शेर जी क्या हुआ? क्या तुमने उस गधी को मार दिया?"

शेर बोला — "नहीं, मैं उसको नहीं मार सका। बल्कि वही मुझे ठोकर मार कर चली गयी। हालाँकि मैं अभी ज़्यादा ताकतवर नहीं हूॅ फिर भी मैंने भी उसकी खूब धुनाई की।"

बड़ा खरगोश बोला — "कोई बात नहीं। इस बात के लिये तुम अपने आपको दोष मत दो। मैं फिर देखूॅगा।"

फिर खरगोश काफी दिनों तक इन्तजार करता रहा जब तक कि शेर और गधी दोनों ही ठीक नहीं हो गये।

एक दिन खरगोश ने फिर पूछा — "क्या कहते हो सिम्बा शेर अब ले आऊॅ उस गधी को?"

शेर बोला — "हॉ अब ले आओ तुम उसको। अबकी बार मैं उसको फाड़ कर रख दूॅगा।"

सुन कर खरगोश फिर जंगल की तरफ चला गया।

गधी ने खरगोश को अपने घर में बुलाया और उससे जंगल की खबर पूछी। बातों ही बातों में खरगोश बोला — "तुम्हारे प्रेमी ने तुमको फिर बुलाया है, चलो।"

पॅूडा बोली — "उस दिन तुम मुझे उसके पास ले गये थे न। उसने मुझे बहुत खरोंचा। अब तो मुझे उसके पास जाते में भी डर लगता है।"

खरगोश बोला — "श श श। वह तो उसके तुमको सहलाने का एक ढंग था। वह तो तुमको बहुत प्यार करता है।"

गधी बोली — "अच्छा? तो चलो मैं फिर चल कर देखती हूँ।"

सो वे दोनों फिर शेर के पास चले। जैसे ही शेर ने उनको आते देखा तो वह गधी के ऊपर उछला और अबकी बार उसने उस गधी के दो टुकड़े कर दिये।

फिर शेर ने खरगोश से कहा — "यह माँस ले जाओ और इसे भून कर ले आओ। और देखो, मुझे तो केवल इसका कलेजा और कान चाहिये।"

खरगोश बोला "ठीक है" और गधी को ले कर चला गया।

उसने माँस को एक ऐसी जगह ले जा कर भूना जहाँ शेर उसको देख नहीं सकता था।

उसने गधी का कलेजा और कान निकाल कर एक तरफ रख दिये। बचे हुए माँस में से उसने पेट भर कर माँस खाया और फिर उसमें से भी जो बचा वह उठा कर रख दिया। इतने में ही शेर आ गया और उसने गधी का कलेजा और कान माँगे।

खरगोश बोला — "कलेजा और कान? वे कहाँ हैं?"

शेर गुर्राया — "क्या मतलब?"

खरगोश हँसा और बोला — "मैंने तुम्हें बताया तो था कि वह धोबी की गधी थी।"

शेर बोला — "तो इससे क्या होता है। क्या धोबी की गधी के कलेजा और कान नहीं होते?"

खरगोश अपने सिर पर हाथ मार कर बोला — "तुम इतने बड़े हो गये सिम्बा और तुमको अभी तक यह पता नहीं चला कि अगर इसके कलेजा और कान होते तो क्या यह दोबारा तुम्हारे पास आती?"

यह तो शेर ने कभी सोचा ही नहीं था। शेर को खरगोश पर विश्वास हो गया कि इस धोबी की गधी के कलेजा और कान तो थे ही नहीं।

सो कीमा बन्दर ने शार्क से कहा — "क्या तुम मुझे धोबी की गधी समझते हो? जाओ जाओ और अपने घर चले जाओ। अब तुम मुझे कभी नहीं पा सकते और हमारी तुम्हारी दोस्ती भी खत्म।"

2 खरगोश और शेर[9]

एक दिन सूॅगूरा[10] बड़ा खरगोश खाने की खोज में जंगल में इधर उधर घूम रहा था कि उसने कैलेबाश[11] के एक पेड़ की बड़ी बड़ी डालियों के बीच में से पेड़ के तने के ऊपरी हिस्से में एक बहुत बड़ा छेद देखा। उस छेद में मधुमक्खियाँ रह रही थीं।

यह देख कर वह तुरन्त ही शहर भागा गया ताकि वह किसी को वहाँ से ला सके जो उसको उन मधुमक्खियों के शहद के छत्ते से शहद निकालने में सहायता कर सके।

जब वह बूकू[12] चूहे के पास से गुजरा तो बूकू चूहे ने उसे अपने घर बुलाया। सूॅगूरा बड़ा खरगोश उसके घर चला गया और बैठ गया।

---

[9] The Hare and the Lion – a folktale from Zanzibar, Eastern Africa

[10] Soongoora Hare – in Eastern and Southern African countries Hare's name is Soongooraa. Hare is a rabbit like animal but is bigger than it.

[11] Calabash is a dried outer cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet things. See the picture of such a tree above.

[12] Bookoo Rat

बातों बातों में उसने बूकू चूहे को बताया कि मेरे पिता चल बसे हैं और मेरे लिये एक छत्ते में शहद छोड़ गये हैं। मैं यह चाहता हूँ कि तुम उसको खाने में मेरी सहायता करो।"

बूकू चूहा तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया और तुरन्त ही वह बड़े खरगोश के साथ शहद खाने के लिये चलने के लिये तैयार हो गया सो दोनों शहद खाने चल दिये।

वे लोग जब उस बड़े कैलेबाश के पेड़ के पास पहुँचे तो सूँगूरा बड़े खरगोश ने बूकू चूहे को मधुमक्खी के छत्ते को दिखा कर उसकी तरफ इशारा किया और उससे कहा "देखो वह रहा शहद। चलो पेड़ पर चढ़ते हैं।"

दोनों ने कुछ भूसा लिया और उस छत्ते की तरफ चढ़ने लगे। छत्ते के पास पहुँच कर उन्होंने वह भूसा जलाया। उसके धुँए से वे मधुमक्खियाँ भाग गयीं। उन्होंने फिर आग बुझा दी और शहद खाने बैठे।

जब वे शहद खा रहे थे तो ज़रा सोचो कौन आ गया? सिम्बा शेर[13] आ गया। और भला कौन आ सकता था? क्योंकि वह पेड़ और उसमें लगा शहद तो सिम्बा शेर का ही था न। सिम्बा शेर ने ऊपर देखा और उनको कुछ खाते देखा तो पूछा — "तुम लोग कौन हो?"

---

[13] Simba Lion – in Eastern and Southern African countries lion's name is Simba

सॅगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे के कान में फुसफुसाया — “चुप रहना। यह बूढ़ा बहुत ही खब्ती है।”

सिम्बा शेर को जब कुछ देर तक कोई जवाब नहीं मिला तो वह फिर चिल्लाया — “तुम कौन हो भाई बोलते क्यों नहीं? मैं कहता हूँ बोलते क्यों नहीं कि तुम कौन हो?”

यह सब सुन कर बूकू चूहा तो बहुत डर गया सो वह बोल पड़ा — “यहाँ केवल हम हैं।”

सॅगूरा बड़ा खरगोश बूकू चूहे से बोला — “अब जब तुम बोल ही पड़े हो तो पहले तुम मुझे यहाँ इस भूसे में छिपा दो और फिर शेर को बोलो कि मैं भूसा नीचे फेंक रहा हूँ वह यहाँ से हट जाये। फिर तुम मुझे नीचे फेंक देना तब देखना कि क्या होता है।”

सो बूकू चूहे ने सॅगूरा बड़े खरगोश को तो भूसे में छिपा दिया और फिर सिम्बा शेर से बोला — “यहाँ से हट जाओ मैं यह भूसा नीचे फेंक रहा हूँ। और फिर मैं खुद भी नीचे आता हूँ।”

सो सिम्बा शेर एक तरफ को हट गया और बूकू चूहे ने वह भूसा नीचे फेंक दिया। इस बीच सिम्बा शेर ऊपर ही देखता रहा और खरगोश भूसे के ढेर में से निकल कर भाग गया।

एक दो मिनट तक तो सिम्बा ने इन्तजार किया पर जब बूकू चूहा पेड़ पर से नहीं उतरा तो वह फिर चिल्लाया — “अच्छा अब तुम नीचे आओ।”

चूहे के पास अब कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे वह कुछ सहायता ले सकता सो वह नीचे उतर आया।

जैसे ही चूहा शेर की पहुँच में आया तो शेर ने उसको पकड़ लिया और पूछा — "तुम्हारे साथ ऊपर कौन था?"

बूकू चूहा कॉपते हुए बोला — "क्या बात है? मेरे साथ सूँगूरा बड़ा खरगोश था। जब मैंने उसको नीचे फेंका था तब तुमने उसको नहीं देखा था क्या?"

सिम्बा शेर बोला — "नहीं तो।" और फिर वह तुरन्त ही उस चूहे को खा गया।

चूहे को खा कर सिम्बा शेर ने सूँगूरा बड़े खरगोश को इधर उधर ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया सो वह वहाँ से चला गया।

तीन दिन बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश कोबे[14] कछुए के पास गया और उससे बोला — "चलो थोड़ा शहद खा कर आते हैं।"

कोबे कछुए ने पूछा किसका शहद है?

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला मेरे पिता का है।

कोबे कछुआ बोला तब तो ठीक है मैं जरूर खाऊँगा और दोनों शहद खाने चल दिये।

[14] Kobay Tortoise

जब वे उस कैलेबाश के पेड़ के पास पहुँचे तो अपना अपना भूसा ले कर वे ऊपर चढ़े। भूसे में आग लगायी और उसके धुँए से जब मक्खियाँ भाग गयीं तो वे दोनों शहद खाने बैठे।

तभी सिम्बा शेर वहाँ आ गया और नीचे से चिल्लाया — "ऊपर कौन है?"

सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "चुपचाप बैठे रहना बोलना नहीं।"

पर जब सिम्बा शेर दोबारा चिल्लाया तो कोबे कछुए को कुछ शक हुआ वह बोला — "मैं तो बोलूँगा। तुमने कहा था कि शहद तुम्हारा है पर मेरा शक सही निकला कि यह शहद तुम्हारा नहीं है यह शहद तो सिम्बा शेर का लगता है।"

सो जब सिम्बा शेर ने दोबारा पूछा कि तुम कौन हो तो कोबे कछुए ने जवाब दिया — "यहाँ तो केवल हम हैं।"

शेर बोला — "तो नीचे आओ।"

कोबे कछुआ बोला — "आते हैं।"

जिस दिन से सिम्बा शेर ने बूकू चूहे को पकड़ा था और उसके हाथ से सूँगूरा बड़ा खरगोश निकल कर भाग गया था उस दिन से वह उसी की तलाश में था। उसको आज भी यही शक था कि कोबे कछुए के साथ वह खरगोश भी होगा सो उसने अपने आपसे कहा "आहा, आज मैंने उसे पकड़ लिया।"

अपने आपको पकड़ा जाता देख कर सूँगूरा बड़े खरगोश ने कोबे कछुए से कहा — "तुम मुझे भूसे में लपेट दो और शेर को रास्ते में से हट जाने को बोलो। जब वह रास्ते में से हट जाये तो तुम मुझे नीचे फेंक देना। मैं नीचे तुम्हारा इन्तजार करूँगा। वह तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता यह तुम जानते हो।"

कोबे कछुआ बोला ठीक है। पर जब वह खरगोश को भूसे में लपेट रहा था तो उसने सोचा कि लगता है इस तरीके से यह भाग जाना चाहता है और मुझे शेर का गुस्सा सहन करने के लिये यहाँ छोड़ जाना चाहता है। मैं कुछ ऐसा करता हूँ कि पहले यह पकड़ा जाये।"

कोबे कछुए ने सूँगूरा बड़े खरगोश की एक गठरी बनायी और वह उसे नीचे फेंकते फेंकते बोला — "ओ सिम्बा शेर, लो यह सूँगूरा बड़ा खरगोश आ रहा है।" और यह कहते हुए वह गठरी उसने नीचे फेंक दी।

सिम्बा शेर तो पहले से ही सूँगूरा बड़े खरगोश की तलाश में था सो जैसे ही सूँगूरा बड़ा खरगोश नीचे गिरा सिम्बा शेर ने उसको अपने पंजे में पकड़ लिया और बोला — "अब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "देखो सिम्बा शेर, तुम मुझे ऐसे ही खाने की कोशिश मत करना क्योंकि मैं बहुत सख्त हूँ।"

सिम्बा शेर बोला — "तब बताओ मैं तुम्हारा क्या करूँ?"

सूँगूरा बड़ा खरगोश बोला — "मेरे ख्याल में तुमको पहले मुझे मेरी पूँछ से पकड़ कर पहले घुमाना चाहिये और फिर जमीन पर पटकना चाहिये तभी तुम मुझे खा सकोगे।"

शेर उसकी बातों में आ गया। उसने सूँगूरा बड़े खरगोश को उसकी पूँछ से पकड़ा, हवा में घुमाया और उसको जमीन पर मारने ही वाला था कि खरगोश उसके हाथ से फिसल गया और भाग गया। और इस तरह बेचारे सिम्बा शेर ने उसे फिर से खो दिया।

गुस्से और नाउम्मीदी से वह फिर पेड़ की तरफ आया और कोबे कछुए से बोला — "अब तुम नीचे आ जाओ।"

कोबे कछुआ बेचारा नीचे उतर आया। शेर ने जब कोबे कछुए को देखा तो बोला — "तुम तो बहुत ही सख्त हो। मैं तुमको खाने के लायक बनाने के लिये क्या करूँ।"

कोबे कछुआ हँसा और बोला — "यह तो बहुत आसान है। तुम मुझे कीचड़ में रख दो और अपने पंजे से मेरी पीठ रगड़ते रहो जब तक कि मेरा यह सख्त खोल निकल न जाये। बस फिर मेरा मुलायम हिस्सा रह जायेगा तब तुम उसको आसानी से खा सकते हो।"

यह सुनते ही सिम्बा शेर कोबे कछुए को पानी के पास ले गया और उसको कीचड़ में रख दिया। जैसा कि उसको कहा गया था उसने अपने पंजे से कोबे की पीठ सहलानी शुरू की।

पर कुछ ही देर में कोबे कछुआ तो पानी में खिसक गया और सिम्बा शेर अपने पंजों से एक पत्थर के टुकड़े को ही सहलाता रह गया जब तक कि उसके पंजे सपाट नहीं हो गये।

कुछ ही देर में उसने देखा कि उसके पंजों से तो खून निकल रहा था। सो इस बार सिम्बा शेर कछुए से भी मात खा गया।

उसने सोचा कि जो कुछ भी सूॅगूरा बड़े खरगोश ने आज उसके साथ किया है वह उसका उसको मजा चखा कर ही रहेगा चाहे कुछ हो जाये। फिर वह अपने शिकार के लिये निकल पड़ा।

सिम्बा शेर तुरन्त ही सूॅगूरा बड़े खरगोश की तलाश में निकल पड़ा। जैसे जैसे वह आगे बढ़ता जाता वह हर एक से सूॅगूरा बड़े खरगोश के बारे में पूछता जाता था — "सूॅगूरा बड़े खरगोश का घर कहाॅ है? सूॅगूरा बड़े खरगोश का घर कहाॅ है?"

पर जिससे भी उसने पूछा उसी ने उसको यह जवाब दिया कि उसको नहीं पता कि सूॅगूरा बड़े खरगोश का घर कहाॅ है।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि सूॅगूरा बड़े खरगोश ने अपनी पत्नी समेत वह घर छोड़ दिया था जिसमें वह पहले रहता था और अब वह कहीं और चला गया था और उसका नया घर किसी को पता नहीं था। सो कोई नहीं जानता था कि सूॅगूरा खरगोश वहाॅ से कहाॅ चला गया।

पर आज सिम्बा शेर भी उसको छोड़ने वाला नहीं था सो उसने भी हार नहीं मानी। वह तब तक लोगों से पूछता गया पूछता गया

जब तक एक आदमी ने यह नहीं कहा — "वह रहा सूँगूरा बड़े खरगोश का घर, उस पहाड़ी के ऊपर।"

बस फिर क्या था सिम्बा शेर चढ़ गया पहाड़ी के ऊपर। तो वहाँ एक मकान तो था पर उस मकान के अन्दर कोई नहीं था। पर इससे भी उसको कोई परेशानी नहीं हुई।

उसने सोचा "मैं यहीं इस मकान के अन्दर छिपता हूँ और सूँगूरा बड़े खरगोश और उसकी पत्नी का इन्तजार करता हूँ। वे जब यहाँ आयेंगे तब मैं उन दोनों को खा लूँगा।" और यह सोच कर वह वहीं उसके घर में छिप कर बैठ गया और उनका इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही सूँगूरा खरगोश और उसकी पत्नी अपने घर वापस लौटे। उन्होंने सोचा ही नहीं था कि वहाँ कोई खतरा हो सकता है मगर खरगोश तो बहुत चालाक होता है। उसने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देख लिये।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "प्रिये, तुम यहाँ से वापस चली जाओ। मैंने अपने घर के आस पास शेर के पंजों के निशान देखे हैं। ऐसा लगता है कि वह मुझे ढूँढ रहा है।"

पर खरगोश की पत्नी बोली — 'प्रिय, मैं तुमको इस कठिनाई के समय में अकेला छोड़ कर नहीं जा सकती। मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगी।"

हालाँकि अपनी पत्नी के ये प्यार भरे शब्द सुन कर सूँगूरा बड़ा खरगोश बहुत ही खुश हुआ लेकिन फिर भी वह उससे बोला — “नहीं प्रिये, तुम जाओ। तुम्हारे दोस्त हैं तुम उनके पास चली जाओ। मैं उस शेर के बच्चे को धोखा दे कर अभी आता हूँ।” सो उसने पीछे पड़ कर अपनी पत्नी को वहाँ से वापस भेज दिया।

उसके जाने के बाद सूँगूरा बड़ा खरगोश सिम्बा शेर के पंजों के निशानों को देखता आगे चला तो उसको पता चला कि वे निशान तो उसके मकान तक जा रहे हैं। उसने सोचा अच्छा तो शेर जी मेरे मकान में छिपे बैठे हैं।

उसने एक तरकीब लगायी। वह कुछ दूर पीछे हटा और ज़ोर से चिल्लाया — “ओ मेरे घर, तुम कैसे हो?”

सिम्बा शेर ने सोचा कि अरे घर भी कहीं बोलता है क्या? लगता है कि यह बड़ा खरगोश तो पागल हो गया है। सो वह चुपचाप बैठा रहा।

जब सूगूँरा बड़ा खरगोश का घर कुछ देर तक नहीं बोला तो वह फिर ज़ोर से चिल्लाया — “यह बड़ी अजीब बात हे कि रोज मैं तुमसे अन्दर आने से पहले पूछता हूँ कि ओ मेरे घर तुम कैसे हो और तुम जवाब देते हो कि तुम कैसे हो पर आज तुम नहीं बोले। ऐसा क्यों? ऐसा लगता है कि अन्दर कोई है।”

जब सिम्बा शेर ने यह सब सुना तो सोचा कि शायद इसका घर बोलता होगा सो अबकी बार वह बोला — “तुम कैसे हो?”

यह सुन कर तो सूॅगूरा खरगोश बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — “ओह तो सिम्बा शेर तुम हो मेरे घर में? और मैं यह यकीन के साथ कह सकता हॅू कि यहॉ तुम मुझे खाने आये हो पर पहले तुम मुझे यह तो बताओ कि क्या कभी तुमने कहीं किसी घर को बोलते सुना है?”

सिम्बा शेर ने देखा कि वह तो सूगॅूरा बड़े खरगोश के हाथों एक बार फिर बेवकूफ बन चुका है। पर फिर भी वह गुस्से में भर कर बोला — “तुम बस तब तक अपनी खैर मनाओ जब तक मैं तुमको पकड़ नहीं लेता।”

सूगॅूरा खरगोश बोला — “मुझे लगता है कि यह इन्तजार तो तुमको बहुत दिनों तक करना ही पड़ेगा।” और यह कह कर वह वहॉ से भाग लिया। शेर उसके पीछे पीछे भागा।

पर इससे कोई फायदा नहीं था क्योंकि सिम्बा शेर सूॅगूरा खरगोश से थक चुका था। वह उसके पीछे बहुत देर तक नहीं भाग सका। सो वह अपने घर अपने कैलेबाश के पेड़ के नीचे आ गया और आ कर लेट गया। वह बहुत थक गया था सो लेटते ही सो गया।

3 शेर हयीना और खरगोश[15]

एक बार की बात है कि सिम्बा शेर, फीसी हयीना और कीटीटी खरगोश[16] ने मिल कर यह फैसला किया कि वे सब मिल कर खेती करेंगे।

सो वे तीनों एक खुले मैदान में चले गये और वहाँ जा कर एक बागीचा बनाया और उसमें उन्होंने कई किस्म के बीज लगाये। बीज बो कर वे सब घर वापस आ गये और फिर कुछ दिन तक इन्तजार किया।

कुछ दिनों के बाद जब उनकी फसल तैयार हो गयी और उसको काटने का समय आया तो तीनों ने अपने खेत पर जाने का विचार किया। सो एक सुबह वे सब जल्दी उठे और अपने बागीचे की तरफ चल दिये। बागीचा थोड़ी दूरी पर था।

कीटीटी खरगोश बोला — "जब हम लोग अपने बगीचे की तरफ जा रहे होंगे तो हम सड़क पर बिल्कुल नहीं रुकेंगे। अगर कोई रुकता है तो कोई भी उसको खा सकता है। ठीक?"

---

[15] The Lion, and Hyena and the Rabbit – a folktale from Zanzibar, East Africa

[16] Simba Lion, Fissi Hyena, and Kititi Rabbit. Hyena is a tiger like animal. See its picture above the picture of rabbit.

अब कीटीटी खरगोश के साथी तो इतने चालाक नहीं थे जितना कि वह खुद, और उनको यह भी यकीन था कि वे उससे ज़्यादा चल सकते थे सो वे सब उसकी बात मान गये।

तीनों चल दिये। पर वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि कीटीटी खरगोश रुक गया। फीसी हयीना बोला — "देखो यह खरगोश रास्ते में रुक गया। अब हम इसको खा लेते हैं।"

सिम्बा शेर बोला — "हॉ यही तो तय हुआ था।

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना एक साथ बोले — "तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश दो पत्थरों की तरफ इशारा कर के बोला — "मैं उन दो पत्थरों के बारे में सोच रहा था जो वहॉ पड़े हैं। छोटा वाला पत्थर ऊपर नहीं जा सकता और बड़ा वाला पत्थर नीचे नहीं आ सकता।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना भी उन पत्थरों को देखने के लिये रुक गये और बस इतना ही कह सके "हॉ यह तो तुम ठीक कह रहे हो।"

इतनी देर मे कीटीटी खरगोश सुस्ता चुका था सो वे सब फिर आगे बढ़े।

वे लोग थोड़ी दूर ही और चले थे कि कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। फीसी हयीना फिर बोला — "यह कीटीटी खरगोश तो फिर रुक गया। अबकी बार हमें इसको जरूर खा लेना चाहिये।"

सिम्बा शेर बोला — "यह तो तुम ठीक कह रहे हो।"

कीटीटी खरगोश फिर बोला — "मैं फिर कुछ सोच रहा था।"

उसके साथी एक बार फिर उत्सुकता से बोले — "अबकी बार तुम क्या सोच रहे थे खरगोश भाई?"

कीटीटी खरगोश बोला — "मैं सोच रहा था कि हम जैसे लोग जब अपना कोट बदलते हैं तो हमारा वह पुराना वाला कोट कहाँ जाता है।"

सिम्बा शेर और फीसी हयीना ने तो इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था। पर बाद में वे यह भी सोचने लगे कि हालाँकि खरगोश रास्ते में रुक गया था फिर भी दोनों में से कोई भी कीटीटी खरगोश को खा नहीं सका।

इतनी देर में कीटीटी खरगोश फिर थोड़ा सुस्ता लिया था सो फिर तीनों आगे बढ़े।

थोड़ी देर बाद फीसी हयीना ने भी अपने कुछ विचार रखने चाहे सो वह भी रुक गया। उसको रुकता देख कर सिम्बा शेर चिल्लाया — "यह नहीं हो सकता। फीसी हयीना इस बार हमें तुमको खाना ही होगा।"

फीसी हयीना बोला — "नहीं नहीं, मैं सोच रहा था।"

“क्या सोच रहे थे तुम?”

फीसी हयीना अपने आपको चतुर दिखाते हुए बोला — “अरे मैं तो कुछ भी नहीं सोच रहा था।”

कीटीटी खरगोश बोला — “तुम इस तरीके से हमें बेवकूफ नहीं बना सकते।”

और सिम्बा शेर फीसी हयीना के ऊपर कूद पड़ा और उसे मार डाला। कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर दोनों ने मिल कर फीसी हयीना को खा लिया। इसके बाद कीटीटी खरगोश और सिम्बा शेर फिर आगे बढ़े।

चलते चलते वे एक गुफा के पास आये। वहाँ आ कर कीटीटी खरगोश फिर रुक गया। इस बार सिम्बा शेर बोला — “हालाँकि मुझे अब भूख नहीं है पर तुमको खाने के लिये मुझे अपने पेट में कुछ जगह तो बनानी ही पड़ेगी, ओ छोटे कीटीटी।”

कीटीटी खरगोश बोला — “मेरा ख्याल है कि नहीं, इसकी जरूरत नहीं है क्योंकि मैं फिर कुछ सोच रहा हूँ।”

सिम्बा शेर बोला — “इस बार तुम क्या सोच रहे हो?”

कीटीटी खरगोश सामने की गुफा की तरफ इशारा करते हुए बोला — “इस बार मैं इस गुफा के बारे में सोच रहा हूँ। पुराने जमाने में हमारे बड़े लोग इधर से जाया करते थे और उधर को निकल जाया करते थे। मैं सोच रहा हूँ कि मैं भी कुछ ऐसा ही करूँ।”

सो वह उस गुफा के अन्दर एक तरफ से गया और दूसरी तरफ से निकल आया। ऐसा उसने कई बार किया।

फिर उसने सिम्बा शेर से कहा— "देखते हैं कि तुम ऐसा कर सकते हो या नहीं।"

अब शेर को तो इतनी अक्ल नहीं थी कि खरगोश तो छोटा सा जानवर था इसलिये उसमें से निकल गया पर वह तो बड़ा था वह तो उतनी छोटी जगह में से नहीं निकल सकता था। सो शेर उस गुफा के अन्दर घुसा पर बहुत जल्दी ही वह बीच में फँस गया। अब न तो वह आगे ही जा सका और न पीछे ही आ सका।

बस पल भर में ही कीटीटी खरगोश सिम्बा शेर की पीठ पर था और उसे खा रहा था। थोड़ी ही देर में सिम्बा शेर चिल्लाया — "तुम मुझे पीछे से ही खाते रहोगे या आगे से भी खाओगे?"

पर कीटीटी खरगोश भी इतना बेवकूफ नहीं था। वह बोला — "मैं तुम्हारे सामने नहीं आ सकता क्योंकि मुझे तुम्हारा चेहरा देखने में शर्म आती है।"

कीटीटी खरगोश से उस शेर को जितना खाया गया उसने उसे उतना खाया और फिर अपने बागीचे की तरफ चला गया। अब वह उस बगीचे का अकेला मालिक था।

तो देखी तुमने खरगोश की चालाकी?

4 काइट चिड़ियें और कौए[17]

एक दिन कौओं के राजा कूँगूरू ने काइट चिड़ियों[18] के राजा ऐमवेवे[19] को एक चिट्ठी लिखी जिसमें बस यह लिखा था "मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरे सिपाही बन जाओ।" काइट चिड़ियों के राजा ऐमवेवे ने तुरन्त ही इसका जवाब लिख दिया "नहीं यह नहीं हो सकता।"

तब कौओं के राजा कूँगूरू ने काइट चिड़ियों के राजा ऐमवेवे को डराने के लिये कहलवाया कि अगर वे उनकी बात नहीं माने तो वे उन पर चढ़ाई कर देंगे।

काइट चिड़ियों के राजा ने भी कह दिया — "हाँ हाँ ठीक है। कर दो चढ़ाई। हम लड़ेंगे। अगर तुम जीत गये तो हम तुम्हारा कहा करेंगे और अगर तुम जीत गये तो तुम हमारा कहा मानना।"

बस फिर क्या था दोनों ने अपनी अपनी सेना इकट्ठी कीं और उतर पड़े लड़ाई के मैदान में। लेकिन थोड़ी ही देर में ऐसा लगने लगा कि कौए बहुत बुरी तरह से हार रहे थे।

जैसा कि लड़ाई से लग रहा था कि अगर जल्दी ही कुछ न किया गया तो सारे कौए मर जायेंगे। उस समय एक बूढ़े कौए

---

[17] The Kites, and the Crows – a folktale from Zanzibar, Eastern Africa.

[18] Kite – a kind of preying bird. See its picture above

[19] Koongooroo the King of crows, and Mwayway the King of kite birds

जीऊसी[20] ने सलाह दी कि उन सबको वहाँ से भाग जाना चाहिये। तुरन्त ही यह सलाह मान ली गयी और सारे कौए अपना अपना घर छोड़ कर उड़ चले और दूर जा कर अपना एक "कौआ शहर" बसा लिया।

एक दिन कौओं ने अपनी एक मीटिंग बुलायी। उस मीटिंग में उनका राजा कॅूगूरू बोला — "ओ मेरे लोगों, अब जो मैं कहता हूँ वह करो तो सब ठीक हो जायेगा। तुम लोग मेरे कुछ पंख नोच लो और मुझे काइट चिड़ियों के शहर के बीचोबीच फेंक दो। फिर यहाँ वापस आ जाओ और मेरे हुक्म का इन्तजार करो।"

बिना किसी सवाल के कौओं ने अपने राजा का हुक्म माना और राजा के कुछ पंख नोच कर उसको काइट चिड़ियों के शहर के बीचोबीच छोड़ आये।

अभी उसको वहाँ पड़े हुए कुछ ही देर हुई थी कि वहाँ से गुजरती हुई कुछ काइट चिड़ियों ने उसको वहाँ पड़े देखा तो पूछा — "तुम यहाँ हमारे शहर में क्या कर रहे हो?"

बहुत देर तक आहें भरने के बाद कौओं का राजा कॅूगूरू बोला — "मेरे साथियों ने मुझे बहुत पीटा और शहर से निकाल दिया क्योंकि मैंने उनको काइट चिड़ियों के राजा ऐमवेवे का हुक्म मानने की सलाह दी थी और मैंने उनका कहा नहीं माना।"

---

[20] Jeeoosee, the old crow

जब उन्होंने यह सुना तो वह उसे उठा कर अपने राजा के पास ले गये और उससे कहा — "हमने इसे अपने शहर की गलियों में पड़ा पाया। क्योंकि यह हमारे शहर में अपने आप नहीं आया इसको यहाँ डाला गया है इसलिये अच्छा हो अगर आप इसका हाल सुन लें।"

कौओं के राजा कूँगूरू ने जो काइट चिड़ियों से गलियों में कहा था वही उसने काइट चिड़ियों के राजा ऐमवेवे के सामने भी दोहरा दिया और साथ में यह भी कहा कि हालाँकि उन्होंने काइट चिड़ियों के हाथों बहुत कुछ सहा है पर फिर भी काइट चिड़ियों का राजा ऐमवेवे बहुत ही अच्छा राजा है।

काइट चिड़ियों का राजा ऐमवेवे तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। वह बोला — "तुम अपने और साथियों से कहीं ज़्यादा होशियार लगते हो। अगर उन्होंने तुमको निकाल दिया तो कोई बात नहीं तुम हमारे शहर में रह सकते हो।"

कौओं के राजा कूँगूरू ने उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और वह वहीं रहने लगा। उसके वहाँ रहने के ढंग से ऐसा लगता था जैसे कि वह अपनी सारी ज़िन्दगी वहीं काइट चिड़ियों के साथ ही गुजारने वाला है।

एक दिन उसके पड़ोसी उसको चर्च ले गये और जब वे घर वापस लौट रहे थे तो उन्होंने उससे पूछा — "सबसे अच्छा धर्म किसका है, कौओं का या काइट चिड़ियों का?"

कौओं के राजा ने चतुराई से जवाब दिया — "यकीनन काइट चिड़ियों का।" यह जवाब सुन कर तो काइट चिड़ियाँ फूली नहीं समायीं उनको लगा कि यह कौआ तो बहुत ही अच्छी चिड़िया है।

कौओं के राजा को वहाँ रहते जब दो हफ्ते हो गये तो एक दिन वह वहाँ से रात को खिसक लिया और अपने शहर जा पहुँचा। वहाँ जा कर उसने अपनी जनता को बताया कि कल काइट चिड़ियों का एक बहुत बड़ा धार्मिक त्यौहार है सो वे सब कल सुबह ही चर्च चली जायेंगी।

तुम सब अभी अभी चले जाओ और कुछ लकड़ियाँ और आग इकट्ठी कर लो और काइट चिड़ियों के शहर के पास इन्तजार करो। जब मैं तुम्हें बुलाऊँ तब तुम आ जाना और उनके चर्च में आग लगा देना।"

और वह तुरन्त ही उन सबको यह समझा कर काइट चिड़ियों के राजा ऐमवेवे के शहर वापस चला गया।

सारी रात कौए लकड़ी और आग इकट्ठा करने में लगे रहे। सुबह तक उनके पास काफी लकड़ी और आग इकट्ठी हो गयी थी। उन सबको ले कर वे अपने दुश्मन के शहर के पास अपने राजा कूँगूरू के बुलाने का इन्तजार करने लगे।

अगले दिन सारी काइट चिड़ियाँ चर्च गयी हुई थीं। एक भी काइट चिड़िया घर में नहीं थी सिवाय बूढ़े कूँगूरू के। जब उसके

पड़ोसी उसको चर्च ले जाने के लिये आये तो उन्होंने देखा कि वह तो लेटा हुआ है।

वे आश्चर्य से बोले — "अरे यह क्या हुआ है तुमको? तुम आज चर्च नहीं जा रहे?"

कौओं के राजा ने जवाब दिया — "मेरी इच्छा तो बहुत थी कि मैं भी चर्च जाऊँ पर क्या करूँ आज मेरे पेट में बहुत दर्द है।"

वे बोले — "तब तुम घर में आराम करो। आराम करने से तुम्हारा दर्द कुछ ठीक हो जायेगा।" और वे चर्च चले गये।

जैसे ही वे सब लोग वहाँ से चले गये वह उड़ा और अपने सिपाहियों के पास पहुँचा और बोला — "आओ आओ जल्दी करो वे सब चर्च में हैं।"

और सारे कौए तुरन्त चर्च की तरफ दौड़ चले। कुछ कौओं ने दरवाजे पर लकड़ी रखी और दूसरों ने उसमें आग लगा दी।

लकड़ियों ने बहुत जल्दी आग पकड़ ली। इससे पहले कि काइट चिड़ियों को खतरे का पता चलता चर्च में चारों तरफ आग लग गयी। कुछ काइट चिड़ियों ने खिड़कियों से भागने की कोशिश भी की पर वे आग की वजह से निकल ही नहीं सकीं।

सबसे बड़ी बात तो यह थी कि बहुत सारी काइट चिड़ियाँ धुँए से घुट कर मर गयीं। बहुत सारी काइट चिड़ियों के तो पंख ही झुलस गये। इनमें एक काइट चिड़ियों का राजा एमवेवे भी था।

इस तरह कूँगूरू कौए ने अपना शहर फिर से वापस ले लिया। उस दिन से काइट चिड़ियाँ कौओं से नीचे ही उड़ती हैं।

5 गोसो मास्टर जी[21]

एक बार गोसो नाम का एक आदमी था जो बच्चों को स्कूल में नहीं बल्कि एक कैलेबाश[22] के पेड़ के नीचे पढ़ाया करता था।

एक शाम वह पेड़ के नीचे बैठा हुआ था और बच्चों को पढ़ाने के लिये अपना अगले दिन का पाठ तैयार कर रहा था कि पा हिरन[23] उस पेड़ के फल चुराने के लिये उस पेड़ पर बहुत जल्दी से चढ़ गया।

फल तोड़ते समय उससे एक कैलेबाश का फल नीचे गिर गया। वह कैलेबाश का फल मास्टर जी के सिर पर गिरा और उससे मास्टर जी मर गये।

जब अगली सुबह मास्टर जी के शिष्य आये तो उन्होंने देखा कि मास्टर जी तो मरे पड़े हैं। वे सब बहुत दुखी हुए। उन्होंने मास्टर जी को बड़ी शान से दफनाया पर साथ में उन्होंने यह भी फैसला किया कि वे यह भी पता लगा कर रहेंगे कि उनके मास्टर जी को किसने मारा।

[21] The Goso, the Teacher – a folktale of Zanzibar, Eastern Africa

[22] Calabash is a dried outer cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet things. See the picture of such a tree above.

[23] Translated for the word "Gazelle" – a kind of deer. "Paa" is his name.

काफी बातचीत के बाद उनको लगा कि दक्षिणी हवा उनके मास्टर जी की मौत के लिये जिम्मेदार थी। सो उन्होंने दक्षिणी हवा को पकड़ लिया और उसको खूब पीटा।

लेकिन दक्षिणी हवा चिल्लायी — "मैं कूसी हूँ दक्षिणी हवा[24]। तुम लोग मुझे क्यों पीट रहे हो, मैंने क्या किया है?"

वे बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम दक्षिणी हवा कूसी हो पर वह तुम ही हो जिसने हमारे मास्टर जी के सिर पर कैलेबाश फेंका जिससे वह मर गये।"

पर कूसी दक्षिणी हवा बोली — "अगर मैं इतनी ताकतवर होती कि तुम्हारे मास्टर जी पर कैलेबाश फेंक सकती तो क्या मुझे एक मिट्टी की दीवार रोक सकती थी?"

"यह तो तुम ठीक कह रही हो।" सो वे मिट्टी की दीवार के पास गये और उसको जा कर पीटने लगे।

वह मिट्टी की दीवार बोली — "अरे मैं कीयाम्बाजा हूँ – मिट्टी की दीवार। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो। मैंने क्या किया है?"

वे बोले — "हॉ हॉ हमें मालूम है कि तुम कीयाम्बाजा हो – मिट्टी की दीवार। पर वह तुम ही हो जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया, जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

[24] Here are some names – Koosee, the Southern Wind; Keeyaambaaja, the Mud Wall

लेकिन कीयाम्बाजा दीवार बोली — “अगर मैं इतनी ताकतवर होती जो कूसी हवा को रोक सकती तो क्या मुझे कोई चूहा खोद सकता था?”

शिष्यों ने सोचा बात तो यह यह ठीक ही कह रही है सो वे चूहे के पास पहुँचे और उसे पीटना शुरू कर दिया। पर वह चूहा चिल्लाया — “अरे अरे, मैं पान्या हूँ, पान्या चूहा[25]। मैंने क्या किया है। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो?”

शिष्य बोले — “हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम पान्या चूहा हो। पर तुमने कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद किया है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका। और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।”

पान्या बोला — “ज़रा सोचो, अगर मैं इतना ताकतवर होता कि कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद कर सकता तो क्या बिल्ला मुझे खा सकता था?”

मास्टर जी के शिष्यों ने सोचा कि यह बात तो यह पान्या चूहा ठीक ही कह रहा है सो वे बिल्ले को ढूँढने निकले। उन्होंने बिल्ले को ढूँढा और उसको पीटना शुरू कर दिया।

---

[25] Paanya Rat

पाका बिल्ला[26] बोला — "अरे यह तुम लोग क्या कर रहे हो? मैं तो पाका बिल्ला हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? तुम मुझे क्यों मार रहे हो?"

शिष्यों ने कहा — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम पाका बिल्ला हो। पर वह तुम ही हो जो पान्या चूहे को खाते हो। पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका, और फिर कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पाका बिल्ला बोला — "सोचो तो अगर मैं इतना ताकतवर होता जो पान्या चूहे को खा सकता होता तो क्या मैं रस्से से बॉधा जा सकता था?"

शिष्यों ने सोचा कि यह बिल्ला तो ठीक ही कह रहा है सो वे रस्से की खोज में चल दिये। जब उनको रस्सा मिल गया तो उन्होंने उस रस्से को पीटना शुरू कर दिया।

काम्बा रस्सा बोला — "अरे अरे तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैं ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं काम्बा रस्सा[27] हूँ। मुझे बताओ तो कि मैंने किया क्या है।"

---

[26] Paaka, the Cat
[27] Kamba Rope

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम काम्बा रस्सा हो। पर वह तुम ही हो जो पाका बिल्ले को बॉधते हो। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका, और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

काम्बा रस्सा बोला — "अगर मैं इतना ताकतवर होता जो पाका बिल्ले को बॉध सकता होता तो क्या कीसू चाकू[28] मुझे काट सकता था?"

शिष्यों ने सोचा यह तो ठीक ही बोल रहा है सो वे चाकू की खोज में चल दिये। जब उनको चाकू मिल गया तो उन्होंने चाकू को पीटना शुरू कर दिया।

कीसू चाकू चिल्लाया — "अरे यह तुम क्या कर रहे हो? मुझे क्यों पीट रहे हो? मैं कीसू चाकू हूँ मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हम जानते हैं कि तुम कीसू चाकू हो। पर वह तुम ही हो न जो काम्बा रस्से को काटते हो। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा

[28] Keesoo Knife

दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

कीसू चाकू बोला — "अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो मैं काम्बा रस्सा काट सकता होता तो क्या मुझे आग जला सकती थी?"

शिष्यों ने सोचा कि कीसू कह तो ठीक ही रहा है इसका कोई कुसूर नहीं है सो वह आग ढूँढने चल दिये। जैसे ही उनको आग मिली उन्होंने उसको पीटना शुरू कर दिया।

मोटो आग[29] चिल्लायी — "भाइयो मैं तो मोटो आग हूँ तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम मोटो आग हो। पर वह तुम ही तो हो जो कीसू चाकू को जलाती हो। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

[29] Moto Fire

मोटो आग बोली — "अगर मैं इतनी ताकतवर होती कि मैं कीसू चाकू को जला सकती तो क्या मैं पानी से बुझायी जा सकती थी?"

शिष्यों ने सोचा मोटो आग ठीक बोल रही है उसकी कोई गलती नहीं है सो वे पानी की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको पानी मिला तो उन्होंने पानी को पीटना शुरू कर दिया।

माजी पानी[30] चिल्लाया — "अरे भाइयों मुझको क्यों पीटते हो? मैं माजी पानी हूँ। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हाँ हाँ हमें मालूम है कि तुम माजी पानी हो। पर वह तुम ही हो जो मोटो आग को बुझाते हो। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बाँधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

माजी पानी बोला — "ज़रा सोचो, अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो मोटो आग को बुझा सकता तो क्या गोम्बे बैल मुझे पी सकता था?"

---

[30] Maajee Water, Ngombay Ox

शिष्यों ने सोचा यह माजी पानी तो बिल्कुल ठीक बोल रहा है सो वह बैल की खोज में चल दिये। जब उनको बैल मिल गया तो उन्होंने बैल को मारना शुरू कर दिया।

इस पर बैल चिल्ला पड़ा — "अरे भाइयों तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मैं तो गोम्बे बैल हूँ।"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हमें मालूम है कि तुम गोम्बे बैल हो पर वह तुम ही हो जो माजी पानी को पीते हो। माजी पानी मोटो आग बुझाता है। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

गोम्बे बैल बोला — "ज़रा सोचो अगर मैं इतना ही ताकतवर होता जो माजी पानी को पी सकता तो क्या कोई मक्खा मुझे तंग कर सकता था?"

शिष्यों ने सोचा कि बात तो यह गोम्बे बैल ठीक ही कह रहा है हम इसको बेकार ही मार रहे हैं सो वे मक्खे की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको मक्खा मिला उन्होंने उसको पीटना शुरू कर दिया।

ईन्ज़ी मक्खा[31] बोला — "भाइयों तुम लोग मुझको क्यों पीट रहे हो? मैं तो ईन्ज़ी मक्खा हूँ। मैंने क्या किया?"

शिष्य बोले — "हॉ हॉ हमें मालूम है कि तुम ईन्ज़ी मक्खा हो। पर वह तुम ही तो हो जो गोम्बे बैल को तंग करते हो। गोम्बे बैल माजी पानी को पीता है। माजी पानी मोटो आग बुझाता है।

मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

ईन्ज़ी मक्खा बोला — "भाइयो ज़रा सोचो तो अगर मैं इतना ही ताकतवर होता कि मैं गोम्बे बैल को तंग कर सकता होता तो क्या कोई हिरन मुझे खा सकता था?"

शिष्यों को लगा कि वे तो ईन्ज़ी मक्खे को बेकार में ही पीट रहे हैं वह तो बिल्कुल ही बेकुसूर है सो वे हिरन की खोज में चल दिये। जैसे ही उनको पा हिरन मिला बस उन्होंने पा हिरन को पीटना शुरू कर दिया।

---

[31] Eenzee fly

पा हिरन चिल्लाया — "अरे मैं तो पा हिरन हूँ। तुम मुझे क्यों पीट रहे हो? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

शिष्य बोले — "हॉ हम जानते हैं कि तुम पा हिरन हो पर तुम ही तो वह हो जो ईन्ज़ी मक्खे को खाते हो। ईन्ज़ी मक्खा गोम्बे बैल को तंग करता है। गोम्बे बैल माजी पानी को पीता है।

माजी पानी मोटो आग बुझाता है। मोटो आग कीसू चाकू को जलाती है। कीसू चाकू काम्बा रस्से को काटता है। काम्बा रस्सा पाका बिल्ले को बॉधता है। पाका बिल्ला पान्या चूहे को खाता है।

पान्या चूहा कीयाम्बाजा ने मिट्टी की दीवार में छेद करता है जिसने कूसी दक्षिणी हवा को रोका और कूसी दक्षिणी हवा ने कैलेबाश गिरा दिया जिससे हमारे गोसो मास्टर जी की मौत हो गयी। तुमको ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

पा हिरन ने सोचा अब तो वह पकड़ा गया। जब वह कैलेबाश के पेड़ पर फल चुराने गया था लगता है कि तब उससे मास्टर जी की अनजाने में मौत हो गयी थी सो वह तो बिल्कुल ही चुप खड़ा रह गया।

शिष्य बोले — "अब तुम्हारे पास अपने बचाव में कुछ कहने को नहीं है पा हिरन। वह तुम ही हो जिसने कैलेबाश नीचे फेंका जिसकी चोट से हमारे मास्टर जी मर गये।"

बस उन्होंने उस पा हिरन[32] को पीट पीट कर मार डाला और इस तरह से अपने मास्टर जी की मौत का बदला लिया।

[32] Translated for the word "Gazelle". He has special kind of horns – see the picture above.

6 बन्दर, सॉप और शेर[33]

एक बार कीजीजी[34] नाम के गॉव में एक स्त्री रहती थी। उसका पति अपने एक छोटे से बेटे को छोड़ कर मर गया था। उस लड़के का नाम ऐमवू लाना[35] था। वह बेचारी अपना और अपने बच्चे का पेट पालने के लिये बहुत कड़ी मेहनत करती थी फिर भी उन दोनों को आधा पेट ही खाना मिल पाता था।

वह लड़का जब थोड़ा सा बड़ा हो गया तो एक दिन उसने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ, हम लोग रोज आधा पेट खाना खा कर रहते हैं। मेरे पिता हम लोगों को खाना खिलाने के लिये क्या करते थे?"

मॉ ने जवाब दिया — "बेटा, तुम्हारे पिता शिकारी थे। वह जानवरों को पकड़ने के लिये जाल बिछाया करते थे और जो जानवर उस जाल में फॅस जाता था उसी को हम लोग खा लिया करते थे।"

---

[33] The Ape, the Snake and the Lion – a folktales of Zanzibar, Eastern Africa.
[A similar folktale is told India also. It is given in the Book "Bharat kI Kuchh Lok Kathayen-1" under the heading of "Panchtantra Ki Kahani". It seems that it has reached from India to Zanzibar.]

[34] Keejeejee – name of a village

[35] Mvoo Laana

ऐमवू लाना बोला — "मगर माँ यह तो कोई काम नहीं है यह तो खेल है। मैं भी जाल बिछाऊँगा और फिर देखता हूँ कि मैं भी कोई जानवर खाने के लिये पकड़ पाता हूँ या नहीं।"

सो अगले दिन वह जंगल गया, पेड़ से कुछ डालियाँ काटीं और शाम तक घर लौट आया। दूसरा दिन उसने उन डालियों से जाल बनाने में लगा दिया। तीसरे दिन उसने नारियल के रेशे ले कर उनसे रस्सियाँ बनायीं।

चौथे दिन वह जितने भी जाल बिछा सका उसने उतने जाल बिछाये और पाँचवे दिन उसने बचे हुए जाल भी बिछा दिये।

छठे दिन वह उन जालों को देखने गया तो उसने देखा कि उन जालों में तो बहुत सारे जानवर पकड़े गये थे। उसने जितने जानवर अपने लिये काफी थे अपने लिये रख लिये बाकी बचे हुए जानवर वह पास के शहर ऊँगूजा[36] ले गया।

वहाँ उनको बेच कर उसने कुछ मक्का और खाने की दूसरी चीज़ें खरीदीं और घर आ गया। आज उसके घर में खाना ही खाना दिखायी दे रहा था।

कुछ दिन ऐसा ही चलता रहा और वह और उसकी माँ कुछ दिन तक आराम से रहे। पर बाद में उसके जाल में जानवर फँसने कम हो गये और एक दिन ऐसा भी आया जब उसको अपने जाल में एक भी जानवर फँसा दिखायी नहीं दिया।

---

[36] Oongooja town

पर एक दिन एक बन्दर उसके जाल में फॅस गया। वह उसको मारने को ही था कि वह बोला — “ओ ऐडम के बेटे, मैं नीआनी बन्दर[37] हूॅ मुझे मत मारो। मुझे इस जाल में से निकाल दो और मुझे जाने दो। मुझे बारिश से बचा लो शायद मैं किसी दिन तुमको कड़ी धूप से बचा लूॅ।” ऐमवू लाना ने उसको जाल में से निकाल दिया और छोड़ दिया।

छूटते ही नीआनी बन्दर एक पेड़ पर चढ़ कर एक डाल पर बैठ गया और ऐमवू लाना से बोला — “तुमने मेरे ऊपर इतनी मेहरबानी की है तो मैं तुमको एक सलाह देता हूॅ।

तुम मेरा विश्वास करो सारे आदमी बुरे होते हैं। कभी किसी आदमी का भला मत करना। अगर तुम करोगे तो वह आदमी पहला मौका मिलते ही तुमको नुकसान पहुॅचाने की कोशिश करेगा।”

अगले दिन उसके उसी जाल में एक सॉप फॅस गया। वह गॉव वालों से सॉप के बारे में कहने के लिये जाने लगा कि सॉप ने उसे पुकारा और बोला — “ओ ऐडम के बेटे, तुम मुझे मारने के लिये

---

[37] Neeanee Ape

आदमियों को बुलाने के लिये अपने गाँव मत जाओ। मेरा नाम नीओका[38] है।

मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ तुम मुझे इस जाल से निकाल दो। मुझे आज बारिश से बचा दो ताकि मैं कल तुम्हें धूप से बचा सकूँ। अगर तुम्हें मेरी किसी सहायता की जरूरत पड़ेगी तो मैं जरूर तुम्हारे काम आऊँगा।"

उस लड़के ने उस साँप को छोड़ दिया। जाते जाते वह साँप बोला — "अगर मुझे मौका लग गया तो मैं तुम्हारी मेहरबानी का बदला जरूर चुकाऊँगा।

पर तुम मेरी एक बात याद रखना कि कभी किसी आदमी पर भरोसा मत करना वह तुमको पहला मौका मिलते ही नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा।" और यह कह कर वह चला गया।

तीसरे दिन ऐमवू लाना को अपने उसी जाल में जिसमें उसे बन्दर और साँप फँसे मिले थे एक शेर फँसा मिला। शेर को देख कर तो ऐमवू लाना बहुत ही डर गया। वह तो उसके पास भी नहीं जा पा रहा था।

लेकिन उसका आश्चर्य तब बहुत बढ़ गया जब उसने शेर को भी बोलते हुए सुना। वह कह रहा था — "तुम भागो नहीं। मैं बहुत बूढ़ा सिम्बा कौंगवे शेर[39] हूँ। तुम मुझे इस जाल से बाहर

---

[38] Neeoka Snake

[39] Simba Kongwe Lion

निकाल दो मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। मुझे इस बारिश से बचाओ। अगर तुम्हें मेरी जरूरत पड़ी तो मैं तुमको धूप से बचाऊँगा।"

सो ऐमवू लाना ने उसका विश्वास कर के उसको भी जाल से बाहर निकाल दिया। जाते जाते सिम्बा कौंगवे भी उससे कहता गया — "ओ ऐडम के बेटे, तुमने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की है। मैं तुम्हारी इस मेहरबानी का बदला जरूर चुकाऊँगा अगर हो सका तो।

पर एक बात का ध्यान रखना। कभी भी किसी आदमी के ऊपर दया नहीं करना। वह हमेशा उसका बदला तुम्हें बेरहमी से ही देगा।" यह कह कर वह भी चला गया।

अगले दिन इत्तफाक से उस जाल में एक आदमी फँस गया और जब उस लड़के ने उस आदमी को जाल में से निकाला तो उस आदमी ने लड़के को कई बार विश्वास दिलाया कि वह उसके साथ की गयी मेहरबानी को कभी नहीं भूलेगा कि उसने उसको जाल में से निकाला और उसकी जान बचायी।

सो ऐसा लगता था कि ऐमवू लाना ने अब सारे शिकार पकड़ लिये थे और अब वह और उसकी माँ फिर से भूखे रहने लगे थे। अब उनके पास खाने के लिये पहले जैसी कुछ भी चीज़ें नहीं थीं।

एक दिन वह अपनी माँ से बोला — "माँ, घर में जो कुछ है उसकी मुझे सात केक बना दो मैं अपना तीर कमान ले कर फिर से शिकार करने जाना चाहता हूँ।"

उसकी माँ ने उसके लिये बचे हुए खाने के सामान की सात केक बना दीं और वह उनको और अपना तीर कमान ले कर शिकार पर चल दिया।

वह बेचारा चलता गया चलता गया पर उसे कोई शिकार ही नहीं मिला। चलते चलते वह रास्ता भी भूल गया था और उसके पास केक भी अब केवल एक ही बची थी।

वह और चलता गया और चलता गया। वह नहीं जानता था कि वह अपने घर से किस दिशा में जा रहा था पर अन्त में वह एक बहुत ही अकेले और घने जंगल में आ निकला। ऐसा जंगल तो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

वह इतना थक गया था कि उसका मन कर रहा था कि वह बस वहीं लेट जाये और मर जाये कि अचानक उसने किसी के उसको पुकारने की आवाज सुनी। उसने सिर उठा कर देखा तो एक पेड़ पर नीआनी बन्दर बैठा था।

उसने उससे पूछा — "ओ ऐडम के बेटे, तुम कहाँ जा रहे हो?"

ऐमवू लाना ने दुखी हो कर जवाब दिया — "मालूम नहीं। मुझे लगता है कि मैं रास्ता भूल गया हूँ।"

बन्दर बोला — "चिन्ता न करो। तुम यहाँ बैठो और जब तक मैं आता हूँ थोड़ा आराम करो। और मैं तुम्हारी मेहरबानी का बदला मेहरबानी से ही चुकाऊँगा।"

इतना कह कर नीआनी तुरन्त कूद कर वहाँ से चला गया और थोड़ी ही देर में कुछ पके केले और पपीता ले कर आ गया। उसने वे केले और पपीता ऐमवू लाना को ला कर दिये और बोला — "यह लो, तुम्हारे लिये तो यह बहुत सारा खाना है। और बोलो और क्या चाहिये तुमको? पीने के लिये भी तो कुछ चाहिये न तुमको?"

इससे पहले कि ऐमवू लाना कुछ जवाब देता वह एक कैलेबाश ले कर फिर से दौड़ गया और उसमें ठंडा पानी भर लाया। लड़के ने खूब पेट भर कर फल खाये और जी भर कर पानी पिया।

"अच्छा विदा।" कह कर दोनों अपने अपने रास्ते चले गये।

ऐमवू लाना बिना कुछ सोचे समझे कि उसको कहाँ जाना है फिर चल दिया। अबकी बार उसको रास्ते में सिम्बा कौंगवे शेर मिला। उसने भी लड़के से पूछा — "ओ ऐडम के बेटे, कहाँ चले?"

ऐमवू ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे नहीं मालूम, मुझे लगता है कि मैं खो गया हूँ।"

सिम्बा कौंगवे शेर बोला — "दुखी न हो दोस्त। तुम यहाँ बैठो और थोड़ी देर आराम करो। मैं तुम्हारी मेहरबानी का बदला चुकाना चाहता हूँ।"

सो ऐमवे लाना तो वहीं बैठ गया आराम करने के लिये और सिम्बा कौंगवे शेर चला गया। बहुत जल्दी ही वह एक ताजा शिकार लिये आ गया जो उसने अभी अभी मारा था।

फिर वह आग भी ले आया। ऐमवू ने उस माँस को पकाया और खाया। पेट भर कर खा कर ऐमवे लाना ने सिम्बा कौंगवे शेर को विदा कहा और दोनों अपने अपने रास्ते चले गये।

इसके बाद ऐमवू लाना फिर बहुत देर तक चलता रहा और एक खेत पर आ निकला। वहाँ उसको एक बहुत बूढ़ी स्त्री मिली।

उस स्त्री ने उससे कहा — "ओ अजनबी, मेरे पति बहुत बीमार हैं और मैं किसी ऐसे आदमी की तलाश में हूँ जो उनके लिये दवा बना दे। क्या तुम उनके लिये दवा बना दोगे?"

ऐमवू ने जवाब दिया — "ओ भली स्त्री, मैं कोई डाक्टर नहीं हूँ, मैं तो एक शिकारी हूँ। मैंने अपनी ज़िन्दगी में दवाएँ कभी इस्तेमाल नहीं कीं। मुझे बहुत अफसोस है कि मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।"

वहाँ से चलता चलता वह एक सड़क पर आ गया जो शहर को जाती थी। वहाँ आने पर उसको एक कुँआ मिला। उस कुँए के पास ही एक बालटी रखी थी। उसने सोचा कि अगर वह बालटी पानी तक पहुँच पाती हो तो वह वहाँ से पानी पी ले।

पानी देखने के लिये उसने कुँए के अन्दर झाँका तो क्या देखता है कि वहाँ तो पानी की बजाय एक साँप बैठा है।

सॉप ने उसको तुरन्त ही पहचान लिया और बोला — “ओ ऐडम के बेटे, एक मिनट रुको।”

फिर वह कुँए से बाहर निकल कर बोला — “तुमने मुझे पहचाना नहीं क्या?”

लड़का कुछ कदम पीछे हटा और बोला — “नहीं, मैंने तो नहीं पहचाना तुमको।”

सॉप बोला — “पर मैं तो तुमको भूल ही नहीं सकता। मैं नीओका सॉप जिसको तुमने जाल से छुड़ाया था। याद है मैंने तुमसे कहा था “तुम मुझे बारिश से बचाओ तो मैं तुमको धूप से बचाऊँगा।”

अब तुम इस शहर में अजनबी हो। लाओ, अपने हाथ में पकड़ा यह थैला मुझे दे दो और मैं इसे ऐसी चीज़ों से भर दूँगा जो वहॉ पहुँचने पर तुम्हारे काम आयेंगीं।”

सो ऐमवू लाना ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ थैला नीओका सॉप को दे दिया। नीओका सॉप ने उस थैले को सोने चॉदी की जंजीरों से भर दिया और ऐमवू लाना से कहा कि वह उन चीज़ों को अपने किसी भी काम के लिये आराम से बेहिचक इस्तेमाल कर सकता है। उसके बाद वे दोनों प्रेम से विदा हो गये।

जब ऐमवू लाना शहर पहुँचा तो वहॉ उसको पहला आदमी वही आदमी मिला जिसको उसने अपने जाल में से निकाला था। ऐमवू लाना को देख कर उसने ऐमवू लाना को अपने घर आने के लिये

कहा। ऐमवू लाना उसके साथ उसके घर चला गया। उस आदमी की पत्नी ने उसके लिये खाना बनाया।

जैसे ही उस आदमी को मौका मिला वह अपने घर से खिसक लिया और वहाँ के सुलतान के पास जा पहुँचा।

उसने सुलतान से कहा — "सुलतान, मेरे घर एक अजनबी आया है जिसके पास सोने चाँदी की जंजीरों से भरा एक थैला है जिसके लिये वह कहता है कि उसको वह एक साँप ने दिया है और वह साँप एक कुँए में रहता है।

हालाँकि वह यह बहाना करता है कि वह एक आदमी है पर मुझे यकीन है कि वह खुद भी कोई आदमी नहीं है बल्कि वह भी एक साँप है जो आदमी का रूप ले सकता है।"

सुलतान ने यह सुनते ही अपने कुछ सिपाही उस आदमी के साथ उसके घर भेज दिये और वे ऐमवू लाना को और उसके साथ उसके थैले को भी पकड़ कर सुलतान के पास ले गये।

जब सुलतान के आदमी उसका वह छोटा थैला खोलने वाले थे तो वह आदमी जो उसको अपने घर ले कर आया था बोला कि इसके थैले में से जरूर ही कोई बुरी चीज़ निकलेगी जो सुलतान और वजीर के बच्चों को नुकसान पहुँचायेगी।

इससे वहाँ खड़े लोग और ज़्यादा उत्सुक हो गये और उन्होंने ऐमवू लाना के हाथ उसके पीछे बाँध दिये।

इसी समय वह नीओका साँप अपने कुँए में से निकल कर शहर में आ पहुँचा था। वह उस आदमी के पैरों में जा कर पड़ गया जिसने ऐमवू लाना के बारे में बुरा कहा था।

जब लोगों ने साँप को देखा तो उस आदमी से कहा — "अरे यह क्या? यह साँप तो उस कुँए में रहता है और यह तो तुम्हारे घर के ही पास रहता है। भगाओ इसको।"

लेकिन नीओका तो वहाँ से हिला भी नहीं। सो उन्होंने ऐमवू लाना के बँधे हाथ खोल दिये।

उन्होंने यह भी कोशिश की कि वे लोग उस आदमी के लगाये हुए इस इलजाम को बदल सकें कि ऐमवू लाना एक जादूगर था पर वे यह भी न कर सके।

सुलतान ने ऐमवू लाना से पूछा — "यह कौन आदमी है जिसने तुम्हें अपने घर बुलाया और फिर तुम्हारी बुराई कर रहा है?"

ऐमवू लाना ने जो कुछ भी उसके साथ हुआ था वह सब कुछ बता दिया। कैसे बन्दर, साँप, शेर और यह आदमी उसके जाल में फँस गये थे और कैसे उसने उनको छोड़ दिया था।

फिर कैसे बन्दर, साँप और शेर सबने उसको सावधान किया था कि कभी किसी आदमी का विश्वास न करना वह तुम्हारी मेहरबानी का जवाब मेहरबानी से नहीं देगा पर उसने उनका विश्वास नहीं किया।

सुलतान हॅसा और बोला — "हालॉकि आदमी अक्सर ही मेहरबानी का जवाब मेहरबानी से नहीं देता पर सारे आदमी एक से नहीं होते। हॉ जहॉ तक इस आदमी का सवाल है यह आदमी तो एक बोरे में बन्द करके समुद्र में डुबोने के लायक है क्योंकि तुमने इसके साथ अच्छा बर्ताव किया और उसके बदले में इसने तुम्हारे साथ यह बुरा किया।"

उस आदमी को बोरे में भर कर समुद्र में डुबो दिया गया और ऐमवू लाना को और बहुत सारा पैसा दे कर उसके गॉव का रास्ता दिखा दिया गया।

7 बच्चा शिकारी एमको जीचूनी[40]

सुलतान मजनॅू के सात बेटे थे और उसके पास एक बड़ा बिल्ला था। वह इन सबको बहुत प्यार करता था।

सब कुछ ठीक चल रहा था कि एक दिन उसका बिल्ला बाहर गया और एक बछड़ा पकड़ लाया। जब लोगों ने शिकायत की कि वह उनका बछड़ा पकड़ लाया तो सुलतान ने उनसे कहा — "यह बिल्ला भी मेरा है और यह बछड़ा भी मेरा है।" इस पर लोग चुप हो गये और चले गये।

कुछ दिन बाद वह बिल्ला फिर बाहर गया और एक बकरे को पकड़ लाया। जब लोगों ने उसकी शिकायत की कि उसका बिल्ला उनका बकरा पकड़ लाया तो सुलतान ने फिर कहा — "यह बिल्ला भी मेरा है और यह बकरा भी मेरा है।" यह सुन कर लोग फिर चुप रह गये और चले गये।

दो दिन बाद वह बिल्ला फिर बाहर गया और एक गाय पकड़ लाया। जब लोगों ने सुलतान से इसकी शिकायत की तो सुलतान ने फिर वही जवाब दे कर उन लोगों को चुप कर दिया — "यह बिल्ला भी मेरा है और यह गाय भी मेरी है।" यह सुन कर वे बेचारे फिर वापस चले गये।

[40] Mkaah Jeechonee, the Boy Hunter – a folktale of Zanzibar, Eastern Africa

दो दिन बाद वह बिल्ला एक गधे को पकड़ लाया। फिर लोग आये और फिर सुलतान ने उन सबको वही कह कर वापस कर दिया कि "यह बिल्ला भी मेरा है और यह गधा भी मेरा है।" फिर वह एक घोड़ा पकड़ लाया और उसका भी वही नतीजा हुआ।

अगली बार वह बिल्ला एक ऊँट पकड़ लाया। लोग फिर आये तो सुलतान गुस्से में भर कर बोला — "क्या बात है तुम लोग मुझे क्यों परेशान कर रहे हो? यह मेरा बिल्ला था और यह मेरा ऊँट था।

मुझे ऐसा लगता कि आप लोग मेरे बिल्ले को पसन्द नहीं करते और चाहते हैं कि वह मार दिया जाये इसी लिये रोज ही कोई न कोई कहानी ले कर चले आते हैं। जो कुछ भी वह खाना चाहता है उसको खाने दो न।"

कुछ समय बाद वह एक बच्चे को पकड़ लाया और फिर एक बड़े आदमी को पकड़ लाया पर फिर भी सुलतान ने मामले को हमेशा की तरह यही कह कर दबा दिया कि बिल्ला भी उसका था और जो पकड़ा गया था वह भी उसी का था।

इस बीच वह बिल्ला और भी ज़्यादा निडर हो गया। अब वह शहर के आस पास पानी भरने जाने वाले लोगों पर कूद पड़ता और उन जानवरों को खा जाता जो उस रास्ते से घास खाने जाते।

आखिर कुछ लोगों ने हिम्मत बटोरी और सुलतान के पास फिर से जाने का विचार किया।

वे सुलतान के पास फिर गये और बोले — "सुलतान, यह सब क्या है? आप हमारे सुलतान हैं आपका काम हमारी रक्षा करना है, और ऐसा होना भी चाहिये।

आपने इस बिल्ले को अपनी मनमानी करने की इजाज़त दे रखी है। अब तो यह केवल शहर से बाहर ही रहता है और उधर से जो कोई भी गुजरता है उसी को खा लेता है। रात में शहर के अन्दर आ जाता है और वहाँ भी यह यही करता है। हम लोग क्या करें?"

लेकिन मजनूँ सुलतान ने फिर वही जवाब दिया — "मुझे यकीन है कि आप सब मेरे बिल्ले को पसन्द नहीं करते और चाहते हैं कि मैं उसको मार दूँ पर मैं ऐसा कुछ नहीं करने वाला। वह जो कुछ भी खाता है वह मेरा है।"

सारे लोग अपनी इस मुलाकात के नतीजे पर बहुत ही दुखी थे। और क्योंकि किसी की उस बिल्ले को मारने की हिम्मत नहीं थी सो वे सब बिल्ले के रहने की जगह के आस पास से भी दूर कहीं और चले गये।

पर इससे भी हालत में कुछ सुधार नहीं आया क्योंकि जब उस बिल्ले को कोई नहीं मिलता तो वह उधर ही आ जाता जहाँ वे लोग रहते थे।

धीरे धीरे शिकायतें बढ़ती गयीं और इतनी बढ़ीं कि सुलतान मजनूँ को अपने नौकरों को यह हिदायत देनी पड़ी कि अगर कोई

उसके बिल्ले के खिलाफ शिकायत ले कर आये तो उससे कह दो कि सुलतान उससे नहीं मिल सकते।

अब लोगों ने अपने जानवर भी बाहर निकालने बन्द कर दिये और खुद भी बाहर निकलना बन्द कर दिया। जब बिल्ले को शहर में खाना मिलना बन्द हो गया तो वह शहर के बाहर चला गया और वहाँ जा कर जानवर, पानी की चिड़ियें और जो भी कुछ उसको मिल जाता वही खाने लगा।

एक दिन सुलतान ने अपने बड़े वाले छह बेटों को बुलाया और उनसे कहा कि वह अपना देश देखने जा रहा है अगर वे उसके साथ चलना चाहें तो चल सकते हैं। सो वे भी उसके साथ चले गये।

सातवाँ बेटा इधर उधर जाने के लिये बहुत छोटा समझा जाता था इसलिये उसको हमेशा ही स्त्रियों के पास घर में छोड़ दिया जाता था। उसके भाई भी इसी लिये उसको एमका जीचोनी बुलाते थे जिसका मतलब होता है – रसोई में बैठने वाला[41]।

सो सुलतान अपने छहों बेटों को साथ ले कर अपना देश देखने चल दिया। वे सब एक ऐसी जगह आ गये जहाँ बहुत सारे घने पेड़ थे। पिता आगे आगे जा रहा था और उसके बेटे उसके पीछे पीछे। तभी वह बिल्ला आया और उसने झपट्टा मार कर सबसे पीछे चल रहे तीन भाइयों को खा लिया।

सुलतान के नौकर चिल्लाये — “बिल्ला, बिल्ला।”

[41] Who sits in the kitchen

और सुलतान से पूछा कि क्या वह उस बिल्ले को ढूँढ कर मार दें?

सुलतान ने उसको मारने के लिये तुरन्त ही हॉ कर दी पर फिर बोला — "यह बिल्ला नहीं है यह तो नूनडा[42] है। उफ़ इसने तो मुझसे मेरे ही बेटों को छीन लिया।"

किसी ने नूनडा को पहले कभी देखा नहीं था पर वे सब जानते थे कि नूनडा कोई बहुत ही भयानक जानवर था जो सबको मार कर खा जाता है।

सुलतान बेचारा अपने बेटों के मरने के दुख में रो पड़ा।

जिन्होंने भी उसका रोना सुना वे बोले — "मालिक, नूनडा अपना शिकार चुनता नहीं है। वह यह नहीं कहता कि "यह मेरे मालिक का बेटा है इसलिये मैं इसको छोड़ देता हूँ।" या "यह मेरे मालिक की पत्नी है मैं इसको नहीं खाऊँगा।" उसको तो जो खाना होता है वह बस खा लेता है।

जब हमने आपसे कहा था कि बिल्ले ने हमारे जानवर खाये थे तब आपने कहा था कि "बिल्ला भी मेरा है और वह जानवर भी मेरा है।" पर अब जब उसने आपके बेटों को खा लिया है तो हमें इसमें कोई शक नहीं है कि वह आपको भी खा सकता है।"

सुलतान बोला — "शायद तुम ठीक कहते हो।"

---

[42] Nunda

जो सिपाही उस बिल्ले को पकड़ने गये थे उनमें से कुछ मारे गये और कुछ भाग गये। सुलतान और उसके बचे हुए तीन बेटे अपने तीनों भाइयों की लाशें ले कर घर आ गये और उनको दफना दिया।

जब सातवें बेटे एमका जीचोनी ने सुना कि नूनडा ने उसके तीन बड़े भाइयों को मार डाला है तो उसने अपनी मॉ से कहा कि वह नूनडा को ढूँढने के लिये बाहर जाना चाहता था। या तो नूनडा उसको खा लेगा या फिर वह नूनडा को मार देगा।

पर उसकी मॉ को उसका यह विचार अच्छा नहीं लगा। वह बोली — "बेटा, मैं नहीं चाहती कि उसको ढूँढने के लिये तुम जाओ। मेरे तीन बेटे तो पहले ही मर चुके हैं और अगर उसने तुम को भी मार दिया तो मेरे तो घाव पर घाव हो जायेगा।"

पर एमका जीचोनी नहीं माना। वह बोला — "मॉ मुझे तो जाना ही है, मैं नहीं रुक सकता पर तुम पिता जी से नहीं कहना।"

उसकी मॉ ने उसके लिये कुछ केक बना दी और कुछ नौकर उसके साथ कर दिये। उसने ब्लेड की तरह तेज एक भाला लिया, एक तलवार ली, सबसे विदा ली और नूनडा की खोज में चल दिया।

क्योंकि वह हमेशा घर पर ही रहता था उसको यही पता नहीं था कि वह क्या ढूँढने जा रहा था। वह शहर से कुछ ही दूर बाहर निकला था कि उसने एक बहुत ही बड़ा कुत्ता देखा।

उसको लगा शायद वह इसी को ढूँढ रहा था सो उसने उस कुत्ते को मारा और रस्सी से बाँध कर गाता हुआ घसीटता हुआ घर ले आया। घर आ कर ऐमका जीचोनी माँ से बोला — "माँ, देखो मैंने नूनडा को मार दिया जो लोगों को खाता था।"

उसकी माँ उस समय ऊपर थी। जब उसने यह सुना कि उसका बेटा नूनडा को मार कर ले आया है तो खिड़की से नीचे झाँका और देखा कि वह क्या ले कर आया था तो उसने कहा — "बेटे, यह आदमियों को खाने वाला नूनडा नहीं है। यह तो कुत्ता है।"

सो उसने उस कुत्ते का ढाँचा बाहर ही छोड़ दिया और नूनडा के बारे में बात करने के लिये माँ के पास आया। माँ ने कहा — "मेरे बेटे, नूनडा तो इससे बहुत बड़ा जानवर है। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो इस सबको छोड़ कर घर बैठती।"

एमका जीचोनी बोला — "नहीं माँ, यह घर में बैठना मेरे लिये नहीं है। जब तक कि मैं नूनडा से लड़ कर उसे मार न लूँ मैं घर में नहीं बैठ सकता।" सो वह फिर चल दिया।

अबकी बार वह पहले दिन से और ज़्यादा दूर गया और एक बहुत बड़े बिल्ले को देखा। उसने सोचा कि शायद वही नूनडा है सो उसने उसको मारा और पहले की तरह गाता हुआ घसीटता हुआ घर ले आया।

घर आ कर उसने फिर अपनी माँ से कहा — "माँ, देखो मैंने नूनडा को मार दिया जो लोगों को खाता था।"

उसकी मॉ ने जब उस बिल्ले को देखा तो कहा — "बेटे, यह आदमियों को खाने वाला नूनडा नहीं है। यह तो बस एक बिल्ला है बड़ा बिल्ला।"

उसकी मॉ ने उसे फिर रोकने की कोशिश की पर उसने उसकी एक न सुनी। उसने उस बिल्ले को फेंक दिया और फिर नूनडा की तलाश में चल दिया।

इस बार वह पिछले दिन से भी और दूर गया और एक बहुत बड़ा बिल्ला देखा। उसने उसको पकड़ा, मारा और घसीटता हुआ और गाता हुआ घर ले आया।

आ कर वह फिर अपनी मॉ से बोला — "देखो मॉ, मैं नूनडा को मार कर ले आया जो आदमियों को खाता था।"

उसकी मॉ ने फिर कहा — "बेटे, यह आदमियों को खाने वाला नूनडा नहीं है। यह तो केवल एक बड़ा वाला बिल्ला है।"

अबकी बार वह यह सुन कर बहुत परेशान हो गया तो उसकी मॉ ने पूछा — "तुम क्या सोचते हो कि तुमको नूनडा कहॉ मिलेगा? तुमको तो यह भी नहीं पता कि वह है कहॉ? और तुम यह भी नहीं जानते कि वह दिखता कैसा है।

इस तरह से अगर तुम और घूमते रहे तो बीमार हो जाओगे। तुम अभी भी बहुत अच्छे दिखायी नहीं दे रहे हो। आओ घर बैठो।"

इस पर वह लड़का बोला — "मेरे पास करने के लिये तीन काम हैं – या तो मैं मर जाऊँ, या फिर नूनडा को ढूँढ लूँ और मार दूँ और या फिर असफल हो कर घर लौट आऊँ। सो इन तीनों कामों के लिये मुझे फिर से बाहर जाना ही पड़ेगा।" और एमका जीचोनी फिर चल दिया।

इस बार वह और आगे तक गया और उसने एक ज़ीब्रा[43] देखा। उसने उसको मारा और गाता हुआ और घसीटता हुआ घर ले आया। आ कर माँ से बोला — "देखो माँ, मैं नूनडा को मार कर ले आया हूँ जो आदमियों को खाता था।"

उसकी माँ ने फिर कहा कि वह नूनडा नहीं था जो आदमियों को खाता था। वह तो ज़ीब्रा था।

फिर उसने कहा — "देखो तुम्हारे भाई भी तो हैं जो इस तरीके से नूनडा को ढूँढते नहीं घूम रहे हैं। वे तो घर में बैठे हैं और अपना काम देख रहे हैं फिर तुम ऐसे क्यों घूम रहे हो?"

एमका जीचोनी बोला — "माँ, सारे भाई एक से नहीं होते। मैं अपने इरादे में पक्का हूँ और मैं तब तक इस काम को नहीं छोड़ूँगा जब तक कि इस नूनडा को खत्म न कर लूँ।" और यह कह कर वह फिर चला गया। इस बार वह पहले से कहीं दूर तक गया।

[43] Zebra – a kind of horse which has stripes on it. See its picture above.

रास्ते में उसने एक राइनोसिरस[44] को एक पेड़ के नीचे सोते हुए देखा। वह अपने नौकरों की तरफ देखता हुआ बोला — "आखिर मैंने नूनडा को पा ही लिया।"

वे ख़ुशी से चिल्लाये — "कहाँ मालिक?"

"वह देखो उस पेड़ के नीचे।"

उन्होंने पूछा — "अब हम क्या करें?"

एमका जीचोनी बोला — "ऐसा करते हैं पहले हम खाना खा लेते हैं बाद में इसको मारेंगे। हमको यह ठीक जगह पर मिल गया है हालाँकि हमें पता नहीं अगर यह हमें मार दे तो पर जो कुछ भी हो।" सो सबने पेट भर कर अरारोट की बनी केक खायीं।

खाना खाने के बाद एमका जीचोनी ने अपने नौकरों से कहा — "तुम सब लोगों के पास दो दो बन्दूकें हैं। एक अपने पास जमीन पर रख लो और एक अपने हाथ में ले लो। और हम सबको एक ही समय पर एक साथ उसको गोली मारनी है।"

"ठीक है मालिक।"

सो वे सब रेंगते हुए पेड़ के दूसरी तरफ राइनो के पीछे पहुँच गये। फिर वे सब उसके चारों तरफ उसके बहुत पास आ गये और सबने उसके ऊपर एक साथ गोली चला दी। राइनो कूदा, थोड़ी दूर भागा भी पर जल्दी ही मर कर गिर गया।

---

[44] Rhinoceros. See its picture above.

उन्होंने राइनो को बॉधा और पूरे दो दिन तक उसको खींच कर शहर तक लाते रहे।

जब शहर आ गया तब एमका जीचोनी ने गाना शुरू किया। “मॉ देखो मैंने नूनडा को मार दिया जो आदमियों को खाता था।” पर इस बार भी उसको अपनी मॉ का वही जवाब मिला कि वह नूनडा नहीं था।

बहुत सारे आदमी राइनो को देखने आये और उसको देख कर सुलतान के बेटे के लिये दुखी हुए। उसके माता पिता ने भी उससे काफी कहा कि वह अब नूनडा की तलाश छोड़ दे।

उसके पिता ने तो यहॉ तक कह दिया कि अगर वह घर रह जाये तो वह उसको कुछ भी देने को तैयार है पर वह यह कहते हुए फिर नूनडा की तलाश में चल दिया कि मुझे आपकी कोई बात नहीं सुननी।

अबकी बार वह जंगल में और आगे तक चला गया। वहॉ उसको दोपहर में एक पेड़ के साये में एक हाथी सोया मिल गया।

उसने अपने नौकरों से कहा कि अब हमको नूनडा मिल गया। उन्होंने फिर पूछा कहॉ है?

“देखो वह उस पेड़ के नीचे सो रहा है।”

“हॉ मालिक, क्या हम चलें उसके पास?”

“अगर हम उसके पास जायेंगे और उसने हमें देख लिया तो वह हमारी तरफ आयेगा

और हममें से कुछ लोग मर सकते हैं। मेरे ख्याल से पहले हममें से एक को उधर चुपचाप जाना चाहिये और यह देखना चाहिये कि उसका मुँह किधर है।"

सबको यह विचार बहुत पसन्द आया। एक नौकर कीरोबोटो[45] अपने हाथों और घुटनों के बल रेंग कर उधर गया और उसको खूब अच्छी तरह देखा।

जब वह उसी तरह लौट कर आया तो एमका जीचोनी ने उससे पूछा — "तुम्हारा क्या ख्याल है क्या यह नूनडा है?"

कीरोबोटो बोला — "पता नहीं मालिक। पर मुझे लगता है कि वह नूनडा ही है क्योंकि वह बहुत चौड़ा है, बहुत बड़े सिर वाला है और मैंने इतने बड़े कान तो आज तक किसी के देखे ही नहीं।"

एमका जीचोनी बोला — "ठीक है, तो पहले खाना खाते हैं और फिर उसको मारने चलते हैं।" उन्होंने अपनी अरारोट की केक निकालीं अपनी शहद की केक निकालीं और पेट भर कर खाना खाया।

फिर एमका जीचोनी अपने नौकरों से बोला — "हो सकता है कि हम लोग एक दूसरे को आखिरी बार देख रहे हों इसलिये हम एक दूसरे से विदा लेते हैं। जो बच जायेंगे वे बच जायेंगे और जो मर जायेंगे वे मर जायेंगे पर अगर मैं मर गया तो जो बच जाये वह मेरे माता पिता से जा कर कह दे कि वे मेरे लिये दुख न करें।"

---

[45] Keeroboto – name of a servant

उसके नौकर बोले — "आप ऐसी बात न करें मालिक। हममें से कोई नहीं मरेगा। भगवान से प्रार्थना करिये।" सो वे सब भगवान की प्रार्थना करने के बाद हाथों और घुटनों के बल रेंग कर उस हाथी के पास जा पहुँचे।

नौकरों ने मालिक से प्लान पूछा तो एमका जीचोनी बोला कोई प्लान नहीं सिवाय इसके कि हम सब उसके ऊपर एक साथ मिल कर गोली चलायें।

जैसे ही उन सबने एक साथ गोली चलायी कि वह हाथी उन सब पर कूद पड़ा। वे सब लोग सावधान थे सो उन्होंने अपने पास की सारी चीज़ें वहीं छोड़ीं और पेड़ पर चढ़ गये।

हाथी सीधा भागा और थोड़ी दूर जा कर गिर कर मर गया। वे लोग दोपहर के तीन बजे से सुबह के छह बजे तक पेड़ों पर बिना खाने के और बिना कपड़ों के बैठे रहे।

एमका जीचोनी बेचारा पेड़ पर बैठा बैठा रोता रहा — "मैं नहीं जानता कि मौत क्या होती है पर इस सबको देखने से पता चलता है कि वह कुछ ऐसी ही होती होगी।"

क्योंकि कोई एक दूसरे को देख नहीं पा रहा था इसलिये एमका जीचोनी को पता ही नहीं था कि उसके नौकर कहाँ हैं। हालाँकि वह पेड़ से उतरना चाहता था पर उसको लगा कि हो सकता है कि नूनडा नीचे हो और उसको खा जाये।

असल में हर आदमी यही सोच रहा था। वह नीचे उतरना चाहता था पर कहीं नूनडा नीचे न हो इससे डरता था। कीरोबोटो ने हाथी को गिरते हुए तो देख लिया था पर वह भी नीचे उतरते में डर रहा था क्योंकि उसको लग रहा था कि हालाँकि वह नीचे तो गिर पड़ा था पर अगर वह मरा न हो तो।

उसी समय कीरोबोटो ने देखा कि एक कुत्ता आया और हाथी को सूँघने लगा। तब उसको लगा कि वाकई वह मर चुका था। यह देख कर वह जितनी तेज़ी से पेड़ पर से उतर सकता था उतर आया और बहुत ज़ोर से चिल्लाया जो दूसरों को यह बताने के लिये था कि सब ठीक है।

उसको उसकी चिल्लाहट का जवाब भी मिल गया पर फिर भी उसको यह पता नहीं चला कि वह जवाब कहाँ से आया।

सो वह दोबारा चिल्लाया और फिर ध्यान से सुनने की कोशिश करने लगा। अबकी बार जब जवाब आया तो उसको पता चल गया कि वह जवाब किधर से आया था सो वह उसी पेड़ की तरफ दौड़ चला।

वहाँ उसके दो साथी एक ही पेड़ पर चढ़े हुए थे। उसने उनसे कहा कि नीचे आ जाओ नूनडा मर गया है। वे तुरन्त ही नीचे आ गये और दूसरे लोगों को इधर उधर ढूँढने लगे जब तक कि उनको उनका मालिक नहीं मिल गया।

उन्होंने मालिक को बताया कि नूनडा मर गया है। तो मालिक और दूसरे लोग भी सब नीचे आ गये और उन्होंने अपने अपने कपड़े और बन्दूकें उठा लीं।

अब वे सब ठीक थे पर सब भूखे और कमजोर थे सो उन्होंने सबने एक जगह बैठ कर थोड़ा आराम किया और खाना खाया। फिर वे अपना किया गया शिकार देखने गये।

जैसे ही एमका जीचोनी ने हाथी को देखा तो वह बोला — "यही है नूनडा, यही है नूनडा।"

सारे लोगों ने कहा "हॉ यही है नूनडा।" और वे उसको बॉध कर तीन दिन में उसको गॉव तक खींच कर ले गये। जब वे गॉव के पास पहुॅचे तब उन्होंने गाना शुरू किया।

"मॉ देखो यह है नूनडा जो आदमियों को खाता है।"

इस बार तो वह बहुत ही निराश हुआ जब उसकी मॉ ने कहा — "मेरे बेटे, यह भी नूनडा नहीं है जो आदमियों को खाता है।

वह आगे बोली — "मेरे बेटे, तुम कितने परेशान हो रहे हो। सारे लोग आश्चर्य कर रहे हैं कि इतने छोटे लड़के में कितनी समझ कहॉ से आ गयी है।"

आखिर उसके माता पिता ने उसको समझा बुझा कर इस बात पर राजी कर लिया कि बस अबकी बार ही आखिरी बार वह नूनडा को ढूॅढने जायेगा फिर उसका नतीजा चाहे कुछ भी क्यों न हो।

इस तरह वे सब फिर नूनडा की खोज में चल दिये। इस बार वे जंगल से भी आगे निकल गये और एक पहाड़ के पास आ पहुँचे। उसकी तलहटी में उन्होंने अपने डेरे लगाये और रात काटी।

अगले दिन सुबह उन्होंने चावल बनाये और खाये। खा कर एमका जीचोनी बोला — "अब हम लोग पहाड़ पर चढ़ते हैं और वहाँ से अपने पूरे देश को देखते हैं।"

वे सब चल दिये और काफी लम्बे और थका देने वाले सफर के बाद पहाड़ के ऊपर पहुँच गये। वहाँ बैठ कर वे सुस्ताने लगे और आगे का प्लान बनाने लगे।

उनमें से एक नौकर शिन्डानो[46] इधर उधर घूमने लगा। उसने नीचे निगाह डाली तो उसको पहाड़ के नीचे जाने वाले आधे रास्ते में एक बहुत ही बड़ा जंगली जानवर दिखायी दिया। लेकिन वह उसको दूरी और पेड़ों की वजह से ठीक से दिखायी नहीं दे रहा था।

उसने मालिक को बुलाया और उसको दिखाया। एमका जीचोनी को अपने दिल के अन्दर से लगा कि यही है नूनडा। पक्का करने के लिये उसने अपनी बन्दूक और भाला उठाये और कुछ दूर नीचे तक उसको ठीक से देखने के लिये गया।

उसको वहाँ से देख कर वह बोला — "लगता तो है कि यही है नूनडा। मेरी माँ ने बताया था कि वह चौड़ा था, छोटा था सो यह

[46] Shindaano

भी है। उसने कहा था कि उसके ऊपर बिल्ले की तरह के दो बड़े बड़े धब्बे हैं सो इसके भी हैं। उसने कहा था कि उसकी दुम बहुत घनी है सो इसकी भी दुम बहुत घनी है। लगता है कि यही है नूनडा।”

यह सब देख कर वह अपने नौकरों के पास गया और उनसे कहा कि वे खूब पेट भर कर खाना खा लें सो सबने खूब पेट भर कर खाना खाया।

फिर उसने उनसे कहा कि वे अपनी बेकार की चीज़ें वहीं छोड़ दें क्योंकि अगर उनको किसी भी वजह से वहॉ से भागना पड़ा तो वे जितने कम सामान के साथ होंगे उतनी ही तेज़ वे वहॉ से भाग सकेंगे। और अगर वे जीत गये तो वे वापस आ कर उस सामान को वापस ले जायेंगे।

इस तरह सारा इन्तजाम करके वे सब पहाड़ के नीचे की तरफ चल दिये। जब वे आधे रास्ते पहुॅचे तो कीरोबोटो और शिन्डानो दोनों डर गये।

एमका जीचोनी ने उनको ढॉढस बॅधाया और कहा — “डरते क्यों हो? सबको जीना है और सबको मरना है। डरने की कोई बात नहीं है चलो।” सो सब चल दिये।

चलते चलते वे उस जानवर के काफी पास पहुॅच गये। उन्होंने देखा कि वह सो रहा था। उसको देख कर सबने कहा कि वह नूनडा ही था।

एमका जीचोनी बोला — "इस समय सूरज डूब रहा है। क्या कहते हो हम लोग सब एक साथ गोली अभी चलायें या सुबह का इन्तजार करें?" सब लोगों ने कहा कि वे उसको अभी मारना ज़्यादा पसन्द करेंगे बजाय इसके कि वे सारी रात परेशान रहें।

सो वे सब एक साथ गोली मारने के लिये तैयार हो गये। वे उसके और पास आ गये और एमका जीचोनी का इशारा मिलते ही सबने एक साथ उसके ऊपर गोली चला दी। नूनडा बिल्कुल नहीं हिला। उसके लिये तो एक ही गोली काफी थी।

उसको मार कर वे सब पहाड़ के ऊपर आ गये, खाना खाया और खाना खा कर सो गये। सुबह उन्होंने रात के बचे चावल खाये और फिर यह देखने के लिये नीचे गये कि वहाँ क्या हाल था। उन्होंने देखा कि वह जानवर अभी भी वहीं मरा पड़ा था।

दोपहर को उन्होंने फिर चावल खाये और उस जानवर को घसीट कर घर ले जाने लगे। चौथे दिन उसकी लाश में सड़ने के लक्षण पैदा हो गये पर एमका जीचोनी ने कहा कि वे उसको गाँव तक तब तक खींचते रहेंगे जब तक उसकी एक भी हड्डी बाकी है।

जब वे गाँव के पास आये तो एमका जीचोनी ने गाना शुरू कर दिया। "माँ माँ देखो मैं आ गया हूँ। सुनो माँ मैं आ गया हूँ। मैं तुमको बताता हूँ कि मैं क्या लाया हूँ। ओ माँ देखो मैं उस नूनडा को मार कर ले आया हूँ जो लोगों को खाता है।"

यह सुन कर एमका जीचोनी की माँ फिर बाहर निकली और उस मरे हुए जानवर को देख कर बोली — "अरे यही तो नूनडा है जो आदमियों को खाता है।"

सारे लोग एमका जीचोनी को बधाई देने आ गये। उसका पिता अपने बेटे को नूनडा की लाश के साथ देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने अपने बेटे को ऊँचा ओहदा दिया और उसकी शादी एक बहुत ही अमीर और सुन्दर लड़की से कर दी। जब सुलतान मर गया तो एमका जीचोनी सुलतान बन गया और वह हमेशा ही लोगों का बहुत प्यारा रहा।

8 जादूगर और सुलतान के बेटे[47]

एक बार एक सुलतान था जिसके तीन छोटे छोटे बेटे थे। ऐसा लगता था कि वे किसी से भी पढ़ने वाले नहीं थे। इस बात से सुलतान और उसकी पत्नी बहुत ही दुखी रहते थे।

एक दिन एक जादूगर को इस बात का पता चला तो वह सुलतान के पास आया और बोला — "अगर मैं आपके बच्चों को लिखना पढ़ना सिखा दूँ और उनको होशियार बना दूँ तो आप मुझे क्या देंगे?"

सुलतान तुरन्त बोला — "मैं अपना आधा राज्य तुमको दे दूँगा।"

जादूगर बोला —"इससे मेरा काम नहीं चलेगा।"

सुलतान बोला — "मेरे पास जितने भी शहर हैं उनमें से आधे शहर मैं तुमको दे दूँगा।"

जादूगर बोला — "मेरा काम इससे भी नहीं चलेगा।"

सुलतान ने पूछा — "तो फिर तुम्हें क्या चाहिये?"

जादूगर बोला — "जब मैं आपके तीनों बेटों को पढ़ा लिखा कर लाऊँ तो जिन दो बेटों को आप चाहें आप रख लें और तीसरे बेटे को मुझे मेरे साथ के लिये दे दें। क्योंकि मुझे भी अपने साथ के लिये एक आदमी चाहिये।"

---

[47] The Magician and the Sultan's Sons – a folktale ftom Zanzibar, Eastern Africa

सुलतान बोला ठीक है और जादूगर सुलतान के तीनों बेटों को ले कर चला गया। बहुत ही कम दिनों में वह सुलतान के तीनों बेटों को पढ़ना लिखना सिखा कर सुलतान के पास ले आया और बोला — "सुलतान, यह लीजिये आपके तीनों बेटे पढ़ने लिखने में बराबर के होशियार हो गये। अब आप इनमें से कोई से दो बेटे अपने लिये चुन लीजिये और तीसरा बेटा मुझे दे दीजिये।"

सुलतान ने अपने वायदे के अनुसार दो बेटे चुन लिये और तीसरा बेटा जिसका नाम कीजाना[48] था जादूगर के लिये छोड़ दिया। जादूगर उसको ले कर अपने घर चला गया। जादूगर का घर बहुत बड़ा था।

उस जादूगर का नाम ऐमचावी[49] था। घर आने पर उसने अपने सारे घर की सारी चाभियाँ उस लड़के कीजाना को दे दीं और उसको कह दिया कि वह उन चाभियों से जो कमरा चाहे वह खोल सकता था।

उसने उससे यह भी कहा कि अब वही उसका पिता था और वह एक महीने के लिये बाहर जा रहा था।

जादूगर के जाने के बाद कीजाना ने घर को देखना शुरू किया। उसने एक कमरा खोला वह पूरा कमरा पिघले सोने से भरा हुआ था। उसने उस पिघले सोने में अपनी उँगली डाली तो वह उस

---

[48] Keejaanaa – name of one of the three princes

[49] Mchaawee – name of the magician

की उँगली में चिपक गया। उसने अपनी उँगली को खूब मला खूब रगड़ा खूब धोया पर वह तो सोना था निकला ही नहीं सो उसने अपनी उँगली के चारों तरफ एक कपड़ा बाँध लिया।

जब उसका जादूगर पिता वापस आया और उसने बेटे की उँगली पर कपड़ा बँधा देखा तो उससे पूछा कि वह अपनी उँगली से क्या कर रहा था।

लड़का डर गया और डर के मारे उसने उससे कह दिया कि उसकी उँगली कट गयी थी इसलिये उसने अपनी उँगली पर पट्टी बाँध ली थी।

कुछ दिन बाद जादूगर ऐमचावी फिर से बाहर गया और कीजाना को फिर से अपने घर की सारी चाभियाँ दे गया। कीजाना ने फिर से उसका घर देखना शुरू किया।

इस बार जो कमरा उसने खोला वह पूरा बकरों की हड्डियों से भरा हुआ था। दूसरा कमरा भेड़ों की हड्डियों से भरा हुआ था। तीसरा कमरा बैलों की हड्डियों से भरा हुआ था।

चौथा कमरा गधों की हड्डियों से भरा हुआ था। पाँचवाँ कमरा घोड़ों की हड्डियों से भरा हुआ था और छठा कमरा आदमियों की खोपड़ियों से भरा हुआ था। सातवें कमरे में एक ज़िन्दा घोड़ा था।

घोड़ा बोला — "ओ ऐडम के बेटे, तुम कहाँ से आये हो?"

कीजाना बोला — "यह मेरे पिता का घर है।"

घोड़ा बोला — "अच्छा क्या सच में? तुम्हारे पिता तो बहुत ही अच्छे हैं। पर क्या तुमको यह भी पता है कि तुम्हारे पिता को जो कुछ भी मिल जाये वह वही खा लेते है चाहे वह घोड़ा हो या बैल, या गधा हो या बकरा। और अब तुम और मैं केवल दो ही लोग इस घर में ज़िन्दा रह गये हैं।"

कीजाना तो यह सुन कर बहुत डर गया। वह बोला — "तो फिर अब हम क्या करें।"

घोड़े ने पूछा — "तुम्हारा नाम क्या है?"

"कीजाना।"

घोड़ा बोला — "मेरा नाम फारासी[50] है। अच्छा कीजाना पहले तुम मुझे खोलो फिर मैं बताता हूँ कि तुमको क्या करना है।"

लड़के ने उसको खोल दिया।

घोड़ा बोला — "अब तुम वह कमरा खोलो जिसमें सोना भरा है। मैं उस सारे सोने को निगल जाऊँगा। फिर मैं बाहर सड़क पर थोड़ी दूर जा कर पेड़ के नीचे तुम्हारा इन्तजार करूँगा।

जब जादूगर आयेगा तो वह तुमसे कहेगा "चलो, आग जलाने के लिये लकड़ी ले आयें।" तो तुम उससे कहना कि तुम यह काम नहीं जानते सो वह फिर अपने आप ही लकड़ी लाने चला जायेगा।

जब वह लकड़ी ले कर वापस आयेगा तो वह एक बहुत बड़ा बर्तन एक कॉटे पर टॉग देगा और तुमसे उसके नीचे आग जलाने के

[50] Faaraasee – name of the horse

लिये कहेगा। तुम उससे कहना कि तुमको आग जलानी नहीं आती सो फिर वह अपने आप ही आग जला लेगा।

फिर वह बहुत सारा मक्खन ले कर आयेगा और उसको तुमसे उस बड़े बर्तन में डालने के लिये कहेगा तो तुम कहना कि तुम्हारे अन्दर इतनी ताकत नहीं है कि तुम उसे उठा कर उस बर्तन में डाल सको तो वह खुद ही उस मक्खन को उस बर्तन में डाल देगा।

जब वह मक्खन गर्म हो रहा होगा तो वह एक झूला वहाँ ला कर रखेगा और तुमसे कहेगा आओ मैं तुमको झूला झुलाऊँ। तुम उससे कहना कि तुम पहले कभी नहीं झूले इसलिये पहले वह तुमको झूल कर दिखाये कि झूले पर कैसे झूलते हैं।

वह उठेगा और तुमको झूल कर दिखायेगा। उसी समय तुम उसको उस बड़े बर्तन में धक्का दे देना जिसमें मक्खन गर्म हो रहा होगा और जितनी जल्दी हो सके दौड़ कर मेरे पास आ जाना।" यह सब उस लड़के को समझा कर वह घोड़ा चला गया।

उस दिन ऐमचावी ने अपने कुछ दोस्तों को शाम को खाने पर बुलाया था सो उस दिन वह कुछ जल्दी ही घर वापस आ गया। आ कर उसने कीजाना से कहा कि चलो आग जलाने के लिये लकड़ी ले आयें।

कीजाना ने घोड़े के सिखाये अनुसार उसको जवाब दिया कि उसको यह काम नहीं आता सो वह अपने आप ही लकड़ी लाने चला गया। वह लकड़ी ले कर आया तो उसने एक बड़ा सा बर्तन एक

कॉटे पर टॉग दिया और कीजाना से उस बर्तन के नीचे आग जलाने के लिये कहा। कीजाना बोला कि उसको आग जलानी नहीं आती।

यह सुन कर जादूगर ने खुद ही लकड़ियॉ उस बर्तन के नीचे रखीं और फिर खुद ही आग जलायी। फिर वह काफी सारा मक्खन ले कर आया और कीजाना से कहा कि वह उस मक्खन को उस बर्तन में डाल दे।

कीजाना बोला कि वह उतना सारा मक्खन नहीं उठा सकता था क्योंकि वह इतना ताकतवर नहीं था तो उसने खुद ही वह मक्खन उठा कर उस बर्तन में डाल दिया।

ऐमचावी फिर बोला — "क्या तुमने हमारे गॉव का एक खेल देखा है?"

"शायद नहीं।"

ऐमचावी ने कहा — "तो चलो जब तक यह मक्खन गर्म होता है तब तक वह खेल खेलते हैं।"

उसने एक झूला लगाया और कीजाना से बोला — "आओ यहॉ आओ मैं तुमको यह खेल सिखाऊॅ।"

कीजाना बोला — "पहले आप इस खेल को खेलिये और मैं देखता हॅू। ऐसे मैं यह खेल जल्दी सीख जाऊॅगा।"

सो जादूगर ने जैसे ही झूले पर बैठ कर झूले को हिलाना शुरू किया कि कीजाना ने तुरन्त ही उसको उस बड़े बर्तन में धक्का दे

दिया जिसमें मक्खन गर्म हो रहा था और वहॉ से तेज़ी से पेड़ के नीचे भाग गया जहॉ घोड़ा उसका इन्तजार कर रहा था।

फारासी उसको देखते ही बोला — "आओ जल्दी से मेरी पीठ पर बैठ जाओ। अब हम यहॉ से चलते हैं।" सो कीजाना उसकी पीठ पर बैठ गया और वह घोड़ा हवा की चाल से दौड़ने लगा।

शाम को उस जादूगर के दोस्त खाना खाने के लिये आये तो उनको वह जादूगर कहीं दिखायी नहीं दिया। उन्होंने इधर देखा उधर देखा पर उनको वह कहीं भी दिखायी नहीं दिया।

उन्होंने कुछ देर तो इन्तजार किया पर फिर उनको ज़ोर की भूख लगने लगी तो उन्होंने फिर कुछ खाने के लिये ढूँढा तो उनको आग पर रखे बर्तन में रखा हुआ मॉस खाने को मिल गया। बस सबने मिल कर वह सारा मॉस खत्म कर लिया।

खाना खा लेने के बाद उन्होंने ऐमचावी को फिर से ढूँढना शुरू किया। इस ढूँढने में उनको और बहुत सारा खाने का सामान मिल गया सो वे वहॉ दो दिन तक रहे, वह सारा खाने का सामान खत्म किया, ऐमचावी का इन्तजार किया और जब वह फिर भी वापस नहीं आया तो वहॉ से चले आये।

इस बीच में वह घोड़ा कीजाना को ले कर भागता रहा और काफी दूर निकल आया। एक बड़ा सा शहर देख कर वे वहॉ रुक गये।

कीजाना बोला — “चलो यहीं रुक जाते हैं और रहने के लिये एक घर बनाते हैं।”

फारासी तैयार हो गया और उसने वह सारा सोना उगल दिया जो वह जादूगर के घर में से निगल कर लाया था। उस सोने से उन्होंने नौकर चाकर, जानवर और जो कुछ भी उनको जरूरत थी वह सब खरीदा।

जब लोगों ने पड़ोस में एक बहुत बड़ा मकान, इतने सारे नौकर चाकर, जानवर और अमीरी देखी तो वे अपने सुलतान के पास गये और उससे कहा कि ऐसा आदमी तो बहुत खास होना चाहिये जिसके पास यह सब हो और उससे तो उसको मुलाकात करनी ही चाहिये।

यह सुन कर सुलतान ने कीजाना को बुलाया और उससे पूछा कि वह कौन था।

कीजाना बोला — “मैं तो एक आम आदमी हूँ जैसे और सब लोग हैं।”

“क्या तुम कोई यात्री हो?”

कीजाना बोला — “हॉ पहले था तो पर अब मुझे यह जगह पसन्द आ गयी है इसलिये मैंने यहीं रहने का विचार किया है।”

सुलतान बोला — “तो लो फिर यह शहर घूमो।”

“मुझे शहर घूमने में बहुत अच्छा लगेगा पर मुझे कोई शहर दिखाने वाला भी तो चाहिये।”

सुलतान को वह लड़का बहुत अच्छा लगा सो वह उत्सुकता से बोला — "चलो मेरे साथ चलो, मैं दिखाता हूँ तुमको शहर।"

सो सुलतान और कीजाना अच्छे दोस्त हो गये।

कुछ दिनों बाद सुलतान ने अपनी बेटी की शादी कीजाना से कर दी। उनके एक बेटा हुआ। वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे। कीजाना जब तक ज़िन्दा रहा फारासी को अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करता रहा।

9 हामदानी[51]

एक बार हामदानी नाम का एक आदमी था जो इतना गरीब था कि वह बेचारा दरवाजे दरवाजे भीख माँग कर गुजारा करता था।

कुछ दिनों बाद लोग उसको शक की नजर से देखने लगे और उन्होंने उसको भीख देना बन्द कर दिया ताकि वह उनके घर से दूर ही रह सके।

इसके बाद तो उसकी यह हालत हो गयी कि अब वह बेचारा सुबह सुबह कूड़े के ढेर पर जाता और वहाँ से उसको अगर खाने की कोई चीज़ मिलती तो वह खा लेता या फिर कुछ बाजरे के दाने उठा कर खा लेता नहीं तो भूखा ही रह जाता।

एक दिन वह जब कूड़े के ढेर में कुछ ढूँढ रहा था कि उसको एक 10 सैन्ट का सिक्का मिल गया। उसने उसको अपने फटे कपड़े के एक कोने में बाँध लिया। वह उस कूड़े के ढेर में बाजरे के दाने भी ढूँढता रहा पर वे उसको कहीं मिले ही नहीं।

उसने सोचा कि अब तो उसके पास 10 सैन्ट हैं सो वह अब घर जा कर सोयेगा। वह घर गया, ठंडा पानी पिया, ज़रा सा तम्बाकू अपने मुँह में रखा और सो गया।

---

[51] Haamdaanee –a folktales of Zanzibar, East Africa.
[My Note – This folktale is similar to several other folktales published in "Boot Pahne Hue Bille Jaisi Kahaniyan" by Sushma Gupta in Hindi language.]

अगली सुबह जब वह कूड़े के ढेर में फिर कुछ ढूँढ रहा था तो उसको एक आदमी डंडियों की बनी बहुत बड़ी टोकरी ले जाता हुआ दिखायी दे गया।

उसने उस आदमी को पुकार कर पूछा — "तुम्हारी इस टोकरी में क्या है?"

उस आदमी का नाम मुहादीम[52] था, वह बोला — "हिरन।"

हामदानी बोला — "यहाँ लाओ उनको, मैं ज़रा देखूँ तो।"

पास में ही तीन अमीर आदमी खड़े थे वे मुहादीम से बोले — "तुम बेकार में ही उनको हामदानी के पास ले जाने की तकलीफ कर रहे हो।"

मुहादीम ने पूछा — "क्यों जनाब?"

"क्योंकि इस आदमी के पास तो एक सैन्ट भी नहीं है। यह हिरन क्या खरीदेगा।"

मुहादीम बोला — "मुझे पता नहीं था कि इस आदमी के पास बिल्कुल ही पैसे नहीं हैं मुझे लगा कि इसके पास बहुत सारे पैसे होंगे।"

वे बोले — "नहीं, इसके पास कुछ भी नहीं हैं।"

[52] Muhadeem – name of the deer seller

एक बोला — "तुम देख नहीं रहे हो कि यह कूड़े के ढेर के पास बैठा है? यह यहाँ रोज आ कर इस कूड़े के ढेर को बाजरे के कुछ दानों के लिये मुर्गी की तरह कुरेदता है ताकि यह ज़िन्दा रह सके।

अगर इसके पास पैसे होते तो अपनी ज़िन्दगी में क्या यह अपने लिये एक वक्त का खाना नहीं खरीद लेता? यह एक हिरन क्या खरीदेगा? और फिर उसका यह करेगा भी क्या। यह अपने लिये तक तो खाना जुटा नहीं पाता फिर हिरन को क्या खिलायेगा?"

मुहादीम बोला — "जनाब, मैं तो यहाँ अपनी कुछ चीज़ बेचने आया था। जो भी मुझे बुलायेगा मुझे उसके पास तो जाना ही पड़ेगा। मेरा कोई प्रिय नहीं है और कोई मेरा दुश्मन भी नहीं है। इसने मुझे बुलाया तो मैं इसके पास जा रहा हूँ।"

पहला आदमी बोला — "ठीक है। तुम्हें हमारे ऊपर विश्वास नहीं है न तो तुम जाओ इसके पास पर हम इसके बारे में सब जानते हैं कि यह कहाँ रहता है और यह क्या खरीद सकता है।"

दूसरा आदमी बोला — "हाँ हाँ यही बात है। तुमको उससे बात करके पता चल जायेगा कि हम ठीक कह रहे हैं या गलत।"

इसके बाद तीसरा आदमी बोला — "बादलों से पता चलता है कि बारिश आने वाली है पर हमको कहीं कुछ ऐसा नहीं लगता कि यह कोई पैसा खर्च कर सकता है।"

मुहादीम बोला — "ठीक है। पर बहुत सारे लोग जो इस आदमी से देखने में कहीं ज़्यादा अमीर लगते हैं मुझे बुलाते हैं और जब मैं उनके पास जा कर अपने हिरन दिखाता हूँ तो कहते हैं कि ये बहुत मँहगे हैं। सो अगर यह आदमी भी यही कहेगा तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। इसलिये मैं इसके पास जाता हूँ।"

उन तीनों में से एक ने कहा — "देखते हैं यह भिखारी क्या खरीदता है।"

दूसरा बोला — "हुँह, वह क्या कुछ खरीदेगा? जहाँ तक मैं जानता हूँ उसने तीन साल में एक खाना तक तो खरीदा नहीं है वह हिरन क्या खरीदेगा। ऐसा आदमी हिरन खरीद भी कैसे सकता है। खैर, चलो चल कर देखते हैं। और अगर वह इस बेचारे आदमी को केवल यह बोझा ही यहाँ से वहाँ तक ले जाते हुए देखना चाहता है ताकि वह हिरन देख सके तो हम उसको कसके एक एक छड़ी मारेंगे ताकि वह सीखे कि किसी भले व्यापारी से कैसे बर्ताव किया जाता है।"

जब वे सब हामदानी के पास आये तो उन तीनों में से एक ने कहा — "ये रहे हिरन। अब एक खरीदो। तुम उनको केवल देख सकते हो पर खरीद नहीं सकते।"

लेकिन हामदानी ने उनके कहने पर कोई ध्यान नहीं दिया और उस आदमी से पूछा — "तुमने एक हिरन कितने का दिया है?"

तभी दूसरा आदमी बीच में बोला — "तुम बहुत भोले बन रहे हो। यह तो तुम भी जानते हो और हम भी जानते हैं कि हिरन तो रोज ही 25 सैन्ट के दो बिकते हैं।"

फिर भी हामदानी ने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया और उस आदमी से बोला — "मैं 10 सैन्ट में एक हिरन खरीदना चाहता हूँ, बोलो दोगे मुझे?"

वे तीनों हॅसे और बोले — "10 सैन्ट में एक हिरन? क्यों नहीं, क्यों नहीं। फिर कहोगे कि हिरन खरीदने के लिये मुझे 10 सैन्ट भी दो। क्यों?" और एक आदमी ने उसके गाल पर हाथ से हल्का सा चपत लगा दिया।

इस पर हामदानी ने उससे कहा — "तुमने मेरे गाल पर चपत क्यों मारी जबकि मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा? मैं तो तुमको जानता तक नहीं। मैंने तो इस आदमी को बुलाया था कुछ खरीदने के लिये और तुम अजनबी लोग हमारी खरीद खराब कर रहे हो।"

फिर उसने अपने फटे कोट के एक कोने में से 10 सैन्ट का एक सिक्का निकाला और मुहादीम को देते हुए कहा — "मेहरबानी करके मुझे 10 सैन्ट का एक हिरन दे दो।"

इस पर उस आदमी ने पिंजरे में से एक छोटा सा हिरन निकाला और यह कहते हुए उसको थमा दिया कि "यह लो, मैं इसको कीजी पा कह कर बुलाता हूँ।"

फिर वह हिरन बेचने वाला उन तीनों आदमियों की तरफ देख कर हॅसा और बोला — "कैसा रहा? तुम लोग जो बढ़िया सफेद कपड़े पहनते हो, पगड़ी बॉधते हो, तलवार रखते हो और पैरों में जूते पहनते हो और जिनके पास बहुत सारी जायदाद है।

और तुमने कहा था कि यह आदमी तो इतना गरीब है कि कुछ भी नहीं खरीद सकता फिर भी उसने 10 सैन्ट का एक हिरन खरीद लिया। मुझे लगता है कि तुम्हारे पास तो आधा हिरन खरीदने के लिये भी पैसे नहीं हैं अगर 5 सैन्ट का भी एक हिरन होता तो।"

उसके बाद मुहादीम और वे तीनों आदमी अपने अपने रास्ते चले गये।

हामदानी उस कूड़े के ढेर को तब तक उलटता पलटता रहा जब तक उसको उसमें से बाजरे के कुछ दाने नहीं मिल गये – कुछ अपने लिये और कुछ कीजी पा हिरन के लिये। फिर वह भी अपने घर चला गया। उसने अपनी चटाई बिछायी और दोनों साथ साथ सो गये।

कूड़े के ढेर पर जाना, बाजरे के दाने ढूढना और फिर घर आ कर चटाई बिछा कर सो जाना, यह सब करीब एक हफ्ते तक ही चला था कि एक रात हामदानी की ऑख कोई आवाज सुन कर खुल गयी। उसे लगा कि कोई पुकार रहा था "मालिक, मालिक"।

उसने जवाब दिया — "मैं यहॉ हूँ। कौन बुला रहा है मुझे?"

हिरन बोला — "मालिक, मैं पुकार रहा हूँ आपको।"

हामदानी ने चारों तरफ देखा तब भी उसे कोई नहीं दिखायी दिया। वह घबरा गया तभी वह हिरन फिर बोला — "मालिक, मैं पुकार रहा हूँ आपको। आपका हिरन।"

अब तो हामदानी की समझ में ही नहीं आया कि वह बेहोश हो जाये या उठ कर भाग जाये। उसको परेशान सा देख कर कीजी पा बोला — "क्या बात है मालिक, आप इतना क्यों परेशान हो रहे हैं?"

हामदानी बोला — "यह मैं क्या आश्चर्य देख रहा हूँ।"

हिरन बोला — "आश्चर्य? आपने ऐसा कौन सा आश्चर्य देख लिया मालिक जिसकी वजह से आप इतने परेशान हो गये?"

हामदानी बोला — "यह तो वाकई आश्चर्य है। मैं जाग रहा हूँ या सपना देख रहा हूँ? कौन विश्वास करेगा कि कोई हिरन भी बोल सकता है।"

कीजी पा हँसा और बोला — "बस इसी लिये? अभी तो इससे भी ज़्यादा आश्चर्यजनक चीज़ें हैं देखने के लिये। पर अब आप वह सुनिये जिस बात के लिये मैंने आपको पुकारा था।"

"यकीनन, मैं तुम्हारी हर बात सुनूँगा क्योंकि तुम्हारी बात सुने बिना तो मैं रह ही नहीं सकता।"

कीजी पा बोला — "तो हुआ यों कि मैंने ही आपको अपना मालिक चुना और मैं अब आपके पास से भाग भी नहीं सकता इस लिये मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे एक समझौता कर लें और मैं आप से एक वायदा कर लूँ जिसको मैं कभी नहीं तोड़ूँगा।"

हामदानी बोला — "बोलो, क्या बोलते हो?"

हिरन आगे बोला — "किसी को भी आपको बहुत ज़्यादा देर तक यह जानने की जरूरत नहीं है कि आप बहुत ही गरीब हैं।

ज़िन्दा रहने के लिये यह कूड़े के ढेर से रोज रोज बाजरे के दाने चुनना आपके लिये तो ठीक हो सकता है क्योंकि आपको इसकी आदत पड़ी हुई है क्योंकि इसके बिना आपका काम भी नहीं चल सकता।

पर अगर मैं आपके साथ कुछ दिन और रहा तो आपके पास कोई हिरन नहीं रह जायेगा क्योंकि मैं तो भूख से मर जाऊँगा। कीजी पा मर जायेगा मालिक।

इसलिये अपना खाना खाने के लिये मैं रोज बाहर जाना चाहता हूँ और मैं वायदा करता हूँ कि मैं रोज शाम को आपके पास वापस आ जाऊँगा।"

हामदानी ने बेमन से उसको बाहर जाने की इजाज़त दे दी।

इतने में सुबह हो गयी था सो कीजी पा बाहर भाग गया। हामदानी उसके पीछे पीछे गया। पर हिरन तो बहुत तेज़ भागता है

सो कुछ ही पल में वह हामदानी की नजर से गायब हो गया और हामदानी उसे वहीं खड़ा देखता रह गया।

उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे और वह अपने हाथ उठा कर चिल्लाया — "ओ मेरी मॉ, ओ मेरे बाप, मेरा हिरन तो गया।"

उसके पड़ोसियों ने जब उसका यह रोना चिल्लाना सुना तो बोले — "तुम बेवकूफ हो और एक बहुत ही बेकार के आदमी हो।"

एक पड़ोसी बोला — "तुम जाओ और उस कूड़े के ढेर के पास बैठ कर उसे ही कुरेदते रहो। पता नहीं कितनी देर तक, और हो सकता है तब तक जब तक कि तुम्हारी तकदीर से तुमको एक 10 सैन्ट का सिक्का और न मिल जाये।

और अगर तुमको एक 10 सैन्ट का सिक्का मिल भी गया तो भी तुमको तो इतनी भी समझ नहीं कि उससे जा कर कुछ अच्छा खाना खरीद लो। तुम तो उससे एक हिरन खरीद लाओगे और फिर उसको भी भाग जाने दोगे। अब तुम क्यों रो चिल्ला रहे हो? यह सब मुसीबत तो तुम्हारी अपनी बुलायी हुई है।"

हामदानी को यह हमदर्दी अच्छी लगी और वह तुरन्त ही फिर अपने कूड़े के ढेर के पास चला गया। वहॉ से कुछ बाजरे के दाने बीने और घर वापस आ गया। आज उसको अपना घर बहुत अकेला लग रहा था क्योंकि आज कई दिनों के बाद कीजी पा नहीं था न घर में।

शाम को कीजी पा दौड़ता हुआ घर आ गया। हामदानी उसको देख कर बहुत खुश हो गया “ओह मेरे दोस्त तुम वापस आ गये?”

कीजी पा बोला — “मैंने आपसे वायदा किया था न कि मैं रोज सुबह अपने खाने की तलाश में जाऊँगा और शाम को घर वापस आ जाऊँगा। सो मैं आ गया।

मुझे तभी लग रहा था जब आपने मुझे खरीदा था कि आपके पास उस समय जितना भी पैसा था वह सारा पैसा आपने मेरे ऊपर खर्च कर दिया था, चाहे वह 10 सैन्ट ही थे।

तब मैं आपको दुख क्यों दूँ? मैं तो ऐसा कर ही नहीं सकता। अगर मैं जाता भी हूँ तो मैं खाना खा कर हमेशा ही शाम को घर वापस आ जाऊँगा। आप बेफिक्र रहें।”

जब पड़ोसियों ने देखा कि हिरन रोज सुबह चला जाता है और रोज शाम को घर वापस आ जाता है तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हामदानी पर शक करना शुरू कर दिया कि वह जादूगर था।

इस सबको होते हुए भी पाँच दिन बीत गये। रोज सुबह हिरन बाहर चला जाता और शाम को घर वापस आ जाता। शाम को आ कर वह अपने मालिक को उन जगहों के हाल सुनाता जहाँ जहाँ वह दिन में हो कर आया था। फिर अपने खाने के बारे में बताता।

छठे दिन जब हिरन एक घने जंगल में कँटीली झाड़ियों में अपना खाना खा रहा था कि उसने उसके पास में उगे हुए एक बड़े

पेड़ की जड़ की घास में खुरचना शुरू किया। इत्तफाक से वहाँ उसको एक बड़ा सा चमकीला हीरा मिल गया।

तुरन्त ही उसके मुँह से निकला — "अरे यह तो बहुत बड़ा खजाना है। और अगर मैं गलत नहीं हूँ तो यह तो हीरा है और एक पूरा का पूरा राज्य खरीद सकता है।

उसने सोचा अगर मैं इसको ले जा कर अपने मालिक को दे दूँगा तो लोग उनको मार देंगे क्योंकि वे पूछेंगे कि इतने गरीब आदमी के पास इतना कीमती हीरा कहाँ से आया।

और अगर वह यह जवाब देगा कि मुझे यह पड़ा हुआ मिला तो भी उसका कोई विश्वास नहीं करेगा। और अगर उसने यह कहा कि मुझे किसी ने दिया तो भी कोई उसका विश्वास नहीं करेगा।

मैं अपने मालिक को किसी तरह की मुश्किल में नहीं डालना चाहता। मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना चाहिये। मैं किसी ऐसे बड़े आदमी को ढूँढता हूँ जो इसको ठीक से इस्तेमाल कर सके।"

सो कीजी पा ने वह हीरा एक पत्ते में लपेटा, अपने मुँह में दबाया और जंगल में दौड़ गया। वह दौड़ता गया, दौड़ता गया पर उस दिन उसको कोई शहर ही नजर नहीं आया सो उस दिन वह जंगल में ही सो गया।

सुबह उठ कर वह फिर अपने रास्ते पर चल दिया। पर दूसरा दिन भी पहले दिन की तरह ही गुजर गया।

तीसरे दिन वह फिर सुबह से अपने सफर पर चला। शाम को जा कर उसको कहीं छिटके छिटके घर दिखायी दिये। घर फिर धीरे धीरे बड़े होते गये और घने होते गये। इससे उसको लगा कि वह किसी शहर में पहुँच गया है।

चलते चलते वह शहर की एक बड़ी सड़क पर पहुँच गया जो सुलतान के महल को जाती थी। बस वहाँ से वह बहुत तेज़ी से भाग लिया।

सड़क पर आते जाते लोग हरे पत्तों में लिपटी किसी चीज़ को मुँह में दबाये एक तेज़ी से भागते हुए हिरन को बड़े आश्चर्य से देख रहे थे।

जब कीजी पा सुलतान के महल में पहुँचा तो सुलतान अपने महल के दरवाजे के पास ही बैठा हुआ था। कीजी पा महल के दरवाजे से कुछ दूरी पर ही रुक गया। उसने वह हीरा नीचे डाल दिया और खुद भी हाँफता हुआ उसके पास ही लेट गया।

फिर वह चिल्लाया — “कोई है? कोई है?”

उस देश में ऐसी आवाज बाहर खड़े हो कर कोई तभी लगाता था जब उसको घर में अन्दर घुसना होता था और वह बाहर तब तक इन्तजार करता था जब तक घर में से उसकी आवाज का कोई जवाब नहीं दे देता था।

हिरन को यह आवाज कई बार लगानी पड़ी तब कहीं जा कर सुलतान ने अपने नौकरों से कहा — “देखो तो बाहर यह कौन

पुकार रहा है?” एक नौकर ने देख कर बताया कि एक हिरन पुकार रहा है।

सुलतान ने कहा — “ठीक है, उस हिरन को अन्दर बुलाओ।”

सुलतान के तीन नौकर हिरन को बुलाने के लिये दौड़ पड़े और हिरन से बोले — “चलो, सुलतान ने तुमको अन्दर बुलाया है।”

सो हिरन अपने मुँह में हीरा दबाये अन्दर आया। उसने हीरा सुलतान के पैरों के पास रख दिया और बोला — “सलाम हुजूर।”

सुलतान बोला — “सलाम। अल्लाह तुम्हारा भला करे।”

फिर सुलतान ने अपने नौकरों को एक कालीन और एक बड़ा तकिया लाने के लिये कहा और हिरन को उस पर आराम से बैठने को कहा।

जब हिरन ने मना किया और कहा कि वह वहीं ठीक था जहाँ वह बैठा था तो सुलतान ने उससे उस कालीन पर बैठने की जिद की तो फिर तो कीजी पा को उस पर बैठना ही पड़ा। उस कालीन पर बैठा हुआ वह हिरन एक बड़ा खास इज़्ज़तदार मेहमान लग रहा था।

इसके बाद सुलतान के नौकर हिरन के खाने के लिये कुछ दूध और चावल ले आये। सुलतान ने हिरन से कहा कि वह पहले दूध और चावल खा ले फिर कुछ आराम कर ले तब वह उससे बात करेगा।

हिरन ने कुछ बोलना भी चाहा पर सुलतान उससे कुछ भी सुनने के लिये तैयार नहीं था जब तक कि उसने वे दूध और चावल नहीं खा लिये और थोड़ा आराम नहीं कर लिया।

जब सब कुछ हो चुका तब सुलतान ने हिरन से कहा — "अब बताओ मेरे दोस्त तुम्हें क्या कहना है।"

कीजी पा बोला — "मुझे मालूम नहीं कि आप इस खबर को कैसी समझेंगे पर सच तो यह है कि मैं आपको बेइज़्ज़त करने के लिये भेजा गया हूँ। मैं आपसे लड़ने के लिये भेजा गया हूँ। मैं आपके पास शादी का पैगाम ले कर आया हूँ।"

सुलतान बोला — "ओह हिरन, हिरन होते हुए भी तुम बहुत अच्छा बोलना जानते हो। मैं तो खुद ही कोई ऐसा आदमी ढूँढ रहा था जो मुझे बेइज़्ज़त करे, जो मेरे साथ लड़े। मैं तो शादी के लिये बहुत ही बेचैन हो रहा था। आगे बोलो।"

कीजी पा बोला — "तो आप मेरे लिये अपने मन में कुछ बुरा नहीं सोच रहे हैं न? मैं तो केवल पैगाम लाने वाला हूँ।"

सुलतान बोला — "नहीं नहीं, बिल्कुल नहीं। आगे बोलो।"

कीजी पा बोला — "तब आप इसको देखें जो मैं यह ले कर आया हूँ।"

कह कर उसने पत्तों में लिपटा वह हीरा सुलतान की गोद में डाल दिया। सुलतान ने पत्ता खोला तो उसमें एक बड़ा सा चमकदार हीरा देख कर आश्चर्यचकित हो गया और बोला "सो?"

कीजी पा बोला — "मैं यह हीरा अपने मालिक सुलतान दाराई[53] की तरफ से ले कर आया हूँ। उन्होंने सुना है कि आपके घर में शादी लायक एक बेटी है इसी लिये उन्होंने यह हीरा आपको भेजा है और आपसे वह यह उम्मीद करते है कि आप उनको इस छोटी सी भेंट से ज़्यादा कीमती भेंट न भेजने के लिये माफ करेंगे।"

सुलतान ने मन में सोचा — "क्या? वह सुलतान इसको छोटी सी भेंट कहते हैं?"

फिर वह हिरन से बोला — "ओह, यह ठीक है, यह ठीक है। मैं राजी हूँ। सुलतान दाराई मेरी बेटी से शादी कर सकते हैं और मुझे उनसे और कोई भी चीज़ नहीं चाहिये। वह खाली हाथ भी मेरी बेटी से शादी करने आ सकते हैं।

और अगर उनके पास ऐसी छोटी छोटी भेंटें और हैं भी तो भी वह उनको अपने घर पर छोड़ कर आ सकते हैं। यही मेरा जवाब है। मुझे उम्मीद है कि तुम अपने मालिक को यह सब बातें साफ साफ कह दोगे।"

हिरन ने सुलतान को भरोसा दिलाया कि वह उसकी बात ठीक से कह देगा। फिर वह बोला — "ठीक है अब मैं सीधा अपने मालिक के पास जाता हूँ और **11** दिन के अन्दर अन्दर हम वापस लौट कर आते हैं।" दोनों ने एक दूसरे को सलाम किया और हिरन वहाँ से चला गया।

---

[53] Daraaee – name of Hamdani given to him by the deer

इस बीच का हामदानी का समय बहुत ही मुश्किल से निकला। कीजी पा के गायब हो जाने के बाद वह कई दिनों तक उसको ढूँढता हुआ इधर से उधर घूमता रहा। पड़ोसी उसके ऊपर फिर हँसे। हिरन के खोने और पड़ोसियों के हँसने से तो वह पागल सा ही हो गया था।

एक शाम जब वह सोने जा रहा था तो कीजी पा घर में घुसा। उसको देख कर वह अपने बिस्तर से कूद पड़ा और अपने हिरन को गले लगा लिया। उसको गले लगा कर वह काफी देर तक रोता रहा।

जब हिरन ने देखा कि मालिक का अब काफी रोना हो गया तो वह बोला — "मालिक, अब आप यहाँ चुपचाप बैठिये। आज मैं आपके लिये एक बहुत ही अच्छी खबर ले कर आया हूँ।"

लेकिन वह भिखारी तो अपने हिरन को गले से लगाये हुए रोये ही जा रहा था "मैं सोच रहा था कि मेरा कीजी पा मर गया।"

हिरन बोला — "देखिये मालिक, मैं मरा नहीं हूँ ज़िन्दा हूँ। अब आप मेरी खुशखबरी सुनने के लिये ज़रा सँभल जाइये और फिर जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही कीजिये।"

भिखारी बोला — "बोलो बोलो मुझे क्या करना है मैं वही करूँगा जो तुम कहोगे। अगर तुम कहोगे कि तुम पीठ के बल लेट जाओ और पहाड़ी से लुढ़क जाओ तो मैं वह भी कर लूँगा।"

हिरन बोला — "अभी मैं बहुत सारी बातें आपको नहीं समझा सकता लेकिन मैं अभी केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैंने बहुत किस्म के खाने देखे हैं, जो खाने लायक हैं वह भी और जो नहीं खाने लायक हैं वह भी, पर जो खाना आज मैं आपको खिलाने जा रहा हूँ वह बहुत मीठा है।"

हामदानी बोला — "क्या दुनियाँ में कोई ऐसी चीज़ भी है जो पूरी तरीके से अच्छी हो? क्योंकि हर चीज़ में अच्छाई और बुराई दोनों ही होते हैं। खाना जो तीखा और मीठा दोनों होता है वही अच्छा होता है लेकिन जिस खाने में केवल मिठास होती है क्या वह नुकसान नहीं करता?"

हिरन जँभाई लेते हुए बोला — "मैं अभी आपसे बहुत सारी बातें नहीं कर सकता क्योंकि मुझे नींद आ रही है। अभी सोते हैं। कल सुबह उठ कर बस आपको मेरे पीछे पीछे चलना है।" यह कह कर हिरन तो वहीं सो गया तो हामदानी भी सोने चला गया।

सुबह उठते ही दोनों चल दिये हिरन आगे आगे, और भिखारी पीछे पीछे। पाँच दिन तक वे जंगल में चलते रहे। पाँचवें दिन वे एक नदी के पास आये। वहाँ आ कर हिरन ने भिखारी से कहा — "अब आप यहाँ पर लेट जाइये।"

भिखारी लेट गया तो हिरन ने उसको बहुत मारा, और इतना मारा कि वह बेचारा चिल्ला पड़ा — "रुक जाओ, रुक जाओ, तुम मुझे इतना क्यों मार रहे हो?"

हिरन रुक गया और बोला — "ठीक है ठीक है अब मैं आपको और नहीं मारता। अब मैं चलता हूँ पर जब तक मैं लौटूँ नहीं आप यहीं रहियेगा और किसी भी हालत में यह जगह नहीं छोड़ियेगा।"

कह कर हिरन भाग गया और 10 बजे सुबह ही सुलतान के महल पहुँच गया।

जिस दिन से कीजी पा सुलतान के महल से गया था उसी दिन से सुलतान ने अपनी सड़कों पर इस उम्मीद में अपने बहुत सारे आदमी खड़े कर रखे थे कि पता नहीं सुलतान दाराई कब आ जायें।

सो जैसे ही एक आदमी ने हिरन को आते देखा वह सुलतान से कहने गया — "सुलतान, ओ सुलतान, सुलतान दाराई आ रहे हैं। मैंने अभी अभी कीजी पा को इधर ही आते देखा है।" सुलतान और उसके आदमी सब सुलतान दाराई को मिलने के लिये तैयार हो गये।

पर जब सुलतान सुलतान दाराई को लेने के लिये शहर से कुछ दूरी पर गया तो देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि हिरन तो अकेला ही चला आ रहा था। हिरन जब पास आ गया तो बोला — "सलाम मालिक।"

सुलतान ने बड़ी नम्र आवाज में उसके सलाम का जवाब दिया और उससे उसकी खबर पूछी। कीजी पा बोला — “बस कुछ न पूछिये मालिक। मैं बड़ी मुश्किल से चल कर यहाँ तक आया हूँ और खबर भी अच्छी नहीं है।”

सुलतान ने उसे तसल्ली दे कर पूछा — “कीजी पा कुछ बोलो तो सही कि हुआ क्या है।”

कीजी पा बोला — “बहुत बुरा हुआ है सुलतान बहुत बुरा हुआ है। सुलतान दाराई और मैं दोनों यहाँ आ रहे थे। काफी दूर तक तो हम लोग ठीक ही आ गये पर जब हम घने जंगल में पहुँचे तो रास्ते में हमें कुछ डाकू मिल गये।

डाकुओं ने मेरे मालिक को पकड़ लिया और बाँध कर उनको खूब मारा। उन्होंने हम जो शादी के लिये सामान ले कर आ रहे थे वह सब भी लूट लिया। यहाँ तक कि वे उनके शरीर के कपड़े भी ले गये। उफ़, यह सब क्या हो गया।”

सुलतान बेचारा तो यह सब सुन कर बहुत परेशान हो उठा। वह बोला — “हमें तुरन्त ही सुलतान दाराई की सहायता के लिये चलना चाहिये।” और वह तुरन्त ही घर की तरफ वापस चल दिया।

वहाँ जा कर उसने अपने एक आदमी को उसके अस्तबल का सबसे अच्छा घोड़ा तैयार करने और उस पर सबसे अच्छी जीन कसने के लिये कहा। और एक

दासी को अपनी आलमारी में से पहनने के कपड़ों का एक थैला लाने के लिये कहा।

जब वह कपड़ों का थैला ले आयी तो उसने उस थैले में से एक नीचे पहनने वाला कपड़ा, एक सफेद लम्बा चोगा, एक काली जैकेट कपड़ों के ऊपर पहनने के लिये, एक शाल कमर में बाँधने के लिये और एक पगड़ी निकाल ली। वे सब बहुत बढ़िया कपड़ों के थे।

फिर उसने सोने की मूठ की एक तलवार, सोने का बारीक काम की गयी एक छोटी कटार[54] और एक बहुत ही बढ़िया छड़ी भी साथ में ले ली।

फिर वह कीजी पा से बोला — "मेरे कुछ सिपाही साथ ले लो जो ये सब चीजें सुलतान दाराई को ले जा कर दे देंगे ताकि वह ठीक से तैयार हो कर मेरे पास आ सकें।"

कीजी पा बोला — "क्या मैं ये सिपाही अपने सुलतान के सामने ले जा कर उनको शर्मिन्दा करूँगा? नहीं नहीं सुलतान, नहीं। वह वहाँ पर लुटे हुए और पिटे हुए पड़े हैं। ऐसी हालत में तो मैं उनको किसी को देखने भी नहीं दूँगा। यह सब मैं उनके लिये खुद ही ले कर जाऊँगा।"

सुलतान बोला — "पर यह घोड़ा है, ये कपड़े हैं, ये हथियार हैं। तुम एक छोटे से हिरन इतना सब कैसे ले कर जाओगे?"

[54] Translated for the word "Dagger". See its picture above.

कीजी पा बोला — “आप यह सब सामान इस घोड़े की पीठ पर लाद दीजिये। घोड़े की लगाम का एक सिरा उसकी गरदन से बाँध दीजिये और दूसरा सिरा मेरे मुँह में दे दीजिये। बस मैं यह सब सामान ले जाऊँगा।”

सुलतान ने ऐसा ही किया और सबके देखते देखते कीजी पा वह सब सामान ले कर वहाँ से चल दिया। यह सब देख कर लोग उसकी बहुत तारीफ करने लगे।

जब कीजी पा अपने मालिक के पास आया तो उसने अपने मालिक को वहीं नदी के पास लेटा पाया। वह कीजी पा को देख कर बहुत खुश हुआ।

कीजी पा आते ही बोला — “देखिये मालिक मैंने आपको जिस मीठे खाने का वायदा किया था वह मैं ले आया हूँ। अब आप उठ जायें और नहा धो कर ये कपड़े पहन कर तैयार हो जायें।”

भिखारी को तो नहाने धोने की आदत थी नहीं सो वह बड़ी हिचक के साथ नदी में घुस कर थोड़े से पानी से अपने आपको भिगोने लगा।

कीजी पा बोला — “मालिक इस थोड़े से पानी से कुछ नहीं होगा। आप पानी के अन्दर ठीक से घुस कर नहाइये।”

भिखारी बोला — “यहाँ तो बहुत सारा पानी है और जहाँ बहुत सारा पानी होता है वहाँ बहुत भयानक किस्म के जानवर होते हैं।”

कीजी पा आश्चर्य से बोला — "जानवर? किस किस्म के जानवर?"

"यही जैसे मगर, पानी की छिपकलियाँ, साँप, मेंढक आदि और वे लोगों को काट लेते हैं। मुझे उनसे बहुत डर लगता है।"

कीजी पा बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है। आप जो चाहें करें पर अपने आपको ठीक से मल मल कर साफ कर लें। हाँ अपने दाँत भी बालू से मल कर ठीक से साफ कर लें वे बहुत गन्दे हैं।"

जल्दी ही भिखारी ठीक से नहा लिया और उसने अपने दाँत भी ठीक से साफ कर लिये। नहाने के बाद तो उसकी शक्ल ही बदल गयी थी।

कीजी पा ने उसको वे कपड़े पहनने को कहा जो सुलतान ने उसके लिये दिये थे। वह बोला — "सूरज डूबने वाला है और हमको इससे पहले ही यहाँ से चल देना चाहिये था।"

भिखारी ने जल्दी से सुलतान के भेजे हुए कपड़े पहने, उसके भेजे हुए घोड़े पर सवार हुआ और चल दिया – कीजी पा आगे आगे और भिखारी घोड़े पर पीछे पीछे।

कुछ दूर जाने पर हिरन रुक गया और भिखारी से बोला — "जो कोई भी आपको यहाँ देखेगा उसको यह पता नहीं होगा कि आप वही आदमी हैं जो कूड़े के ढेर में से बाजरे के दाने बीन कर खाया करते थे।

और अगर वे आपके शहर जा कर भी आपके बारे में पूछताछ करेंगे तो भी वे आपको पहचान नही पायेंगे क्योंकि आज आपका चेहरा और दाँत बहुत साफ हैं। आपकी शक्ल तो ठीक ठाक है पर एक बात के लिये सावधान रहियेगा।

जहाँ हम जा रहे हैं वहाँ के सुलतान की बेटी से मैंने आपकी शादी पक्की कर दी है। जो भेंट देनी होती है वह भी मैंने दे दी है। आप बस वहाँ चुप रहियेगा।

"आप कैसे हैं?" और "और क्या खबर है?" के सिवाय और कुछ मत कहियेगा। आपकी तरफ से मैं ही बात कर लूँगा।"

भिखारी बोला — "ठीक है, यह मेरे लिये बिल्कुल ठीक है।"

कीजी पा बोला — "क्या आपको मालूम है कि आपका नाम क्या है?"

"हाँ हाँ मुझे मालूम है मेरा नाम क्या है।"

"क्या है आपका नाम?"

"मेरा नाम हामदानी है।"

कीजी पा हँसा और बोला — "नहीं, अब नहीं। अब आपका नाम हामदानी नहीं है बल्कि अबसे आपका नाम सुलतान दाराई है।"

"ठीक है।"

वे लोग फिर आगे चले। थोड़ी ही दूर चलने के बाद उनको सुलतान के सिपाही दिखायी देखने लगे। उनमें से **14** सिपाही उनके

साथ साथ चल दिये। कुछ और आगे जाने पर उनको सुलतान, वज़ीर, अमीर, जज आदि भी दिखायी दिये। ये सब उनसे मिलने के लिये वहाँ आये हुए थे।

कीजी पा बोला — "अब आप अपने घोड़े पर से उतर कर अपने ससुर जी को सलाम करिये। वह वहाँ बीच में हल्के नीले रंग की जैकेट पहने खड़े हैं।"

भिखारी बोला — "ठीक है।" और वह अपने घोड़े पर से उतरा और दोनों सुलतानों ने एक दूसरे से हाथ मिलाये, एक दूसरे को चूमा और फिर दोनों सुलतान के महल की तरफ चल दिये।

सब लोगों की बहुत बड़ी दावत हुई, खुशियाँ मनायी गयीं और वे सब लोग रात गये तक बातें करते रहे। इस बीच सुलतान दाराई और हिरन अन्दर के कमरे में थे। तीन सिपाही उनकी सेवा और हिफाजत के लिये उनके कमरे के बाहर खड़े थे।

सुबह होने पर कीजी पा सुलतान के पास गया और बोला — "अब हम लोग वह काम कर लें जिसके लिये हम यहाँ आये हैं। आपकी बेटी की शादी सुलतान दाराई से कर दी जाये। जितनी जल्दी आप शादी कर देंगे सुलतान को अच्छा लगेगा।"

सुलतान बोला — "बिल्कुल ठीक। दुलहिन तैयार है। म्वाली मू[55] को बुलाया जाये और शादी का इन्तजाम किया जाये।" म्वाली

[55] Mwaalee Moo, the priest

मू आया तो सुलतान ने उसको अपनी बेटी की शादी सुलतान दाराई से करने को कहा। म्वाली मू ने दोनों की शादी करा दी।

अगले दिन सुबह कीजी पा अपने मालिक से बोला — "मालिक मैं करीब एक हफ्ते के लिये बाहर जा रहा हूँ। जब तक मैं लौटूँ तब तक आप यहीं रहियेगा।"

फिर वह सुलतान के पास गया और बोला — "सुलतान जी, यह सब तो हो गया। अब मुझे मेरे सुलतान ने हुक्म दिया है कि मैं उनके घर जाऊँ और उसे ठीक करके आऊँ। उन्होंने मुझे एक हफ्ते के अन्दर अन्दर आने के लिये कहा है। जब तक मैं लौट कर आऊँ वे यहीं रहेंगे।"

सुलतान ने पूछा — "तुमको कुछ सिपाही तो अपनी सहायता के लिये नहीं चाहिये?"

हिरन बोला — "नहीं, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मुझे अब किसी की जरूरत नहीं है। बस जब तक मैं लौट कर आऊँ तब तक आप मेरे सुलतान का ख्याल रखियेगा।"

"ठीक है।" और सुलतान से विदा ले कर हिरन अपने सफर पर चल दिया।

लेकिन कीजी पा अपने पुराने गाँव नहीं गया। वह वहाँ से दूसरी सड़क पकड़ कर एक दूसरे बहुत ही अच्छे शहर में गया।

वहॉ सब कुछ बहुत अच्छा था परन्तु उसने देखा कि वहॉ कोई रहता नहीं था। उसे वहॉ न तो कोई आदमी दिखायी दिया, न ही कोई औरत और न ही कोई बच्चा।

बड़ी सड़क पर चल कर उसके आखीर में वह एक बहुत ही बड़े और सुन्दर मकान के सामने आ खड़ा हुआ। ऐसा मकान तो उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह मकान नीलम, फिरोजा और कीमती पत्थरों[56] का बना हुआ था।

उसने सोचा कि यही मकान उसके मालिक के लिये ठीक रहेगा। देखूॅ तो कि यह मकान भी इस शहर के दूसरे मकानों की तरह से खाली है या कोई यहॉ रहता है? सो उसने उस मकान का दरवाजा खटखटाया।

कीजी पा के "कोई है? कोई है?" कई बार पुकारने पर भी अन्दर से कोई नहीं बोला तो कीजी पा ने सोचा — "यह बड़ी अजीब सी बात है। अगर कोई अन्दर नहीं है तो घर का दरवाजा बाहर से बन्द होना चाहिये और अगर कोई अन्दर है तो वह अन्दर से बोला क्यों नहीं?

हो सकता है कि यहॉ रहने वाले घर के किसी दूसरे हिस्से में हों या सो रहे हों। मैं थोड़ा ज़ोर से पुकारता हूॅ।"

उसने फिर ज़ोर से पुकारा तो तुरन्त ही एक बुढ़िया ने अन्दर से ही जवाब दिया — "कौन है जो इतनी ज़ोर से चिल्ला रहा है?"

---

[56] Translated for the words "Sapphire, turquoise, and precious stones"

कीजी पा बोला — "मैं हूँ आपका पोता दादी माँ।"

उस बुढ़िया ने जवाब दिया — "अगर तुम मेरे पोते हो तो तुरन्त अपने घर वापस चले जाओ। यहाँ आ कर तुम खुद भी मत मरो और मुझे भी मत मारो।"

कीजी पा बोला — "दादी माँ, मुझे अन्दर आने दो मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।"

वह बुढ़िया फिर बोली — "मेरे प्रिय पोते, मैं तुम्हारे लिये दरवाजा इसलिये नहीं खोल रही क्योंकि दरवाजा खोलने पर मेरी और तुम्हारी दोनों की ज़िन्दगी के लिये खतरा है।"

कीजी पा फिर बोला — "दादी माँ, चिन्ता न करो। हम दोनों कम से कम कुछ देर के लिये तो सुरक्षित हैं ही इसलिये आप दरवाजा खोलें और मुझे अन्दर आ कर वह कहने दें जो मैं कहना चाहता हूँ।" सो उस बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया और हिरन अन्दर चला गया।

आपस में एक दूसरे के बारे में पूछने के बाद उस बुढ़िया ने कीजी पा से पूछा — "प्रिय पोते, अब बताओ कि तुम यहाँ क्या कहने आये हो।"

हिरन बोला — "दादी माँ हमारे यहाँ तो सब ठीक है आपके यहाँ कैसा है?"

वह बुढ़िया रोती हुई बोली — "यहॉ के हाल तो बहुत बुरे हैं बेटा। अगर तुम मरना चाहते हो तो यहॉ रह सकते हो। और मुझे तो यह लगता नहीं कि तुम आज मरना चाहते हो।"

कीजी पा बोला — "एक मक्खी के लिये शहद में मरना कोई बुरी बात नहीं है और इससे शहद को भी कोई नुकसान नहीं पहुँचता।"

बुढ़िया फिर बोली — "तुम्हारे लिये यह सब ठीक हो सकता है पोते, पर जब वे लोग नहीं बच सके जिनके पास तलवार और ढाल थे तो तुम जैसी छोटी चीज़ का क्या कहना? मैं तुमसे फिर कहती हूँ कि तुम जहॉ से आये हो वहीं वापस चले जाओ। मुझे तुम्हारी सुरक्षा की तुमसे ज़्यादा चिन्ता है।"

कीजी पा बोला — "दादी मॉ, अभी तो मैं यहॉ से वापस नहीं जा सकता। मैं इस जगह के बारे में कुछ और जानना चाहता हूँ। यह जगह है किसकी?"

बुढ़िया बोली — "ओह मेरे पोते, यहॉ बहुत सारा खजाना है, बहुत सारे आदमी हैं, सैंकड़ों घोड़े हैं। और इसके मालिक का नाम है नीओका एमकू[57], एक बहुत बड़ा सॉप। असल में वही इस सारे शहर का भी मालिक है।"

[57] Neeokaa Mkoo – the name of the python

कीजी पा बोला — "अच्छा तो यह बात है। दादी माँ क्या आप मुझे किसी ऐसी जगह रख सकती हैं जो उस साँप के पास हो और जब वह मेरे पास हो तब मैं उसको वहाँ से मार सकूँ?"

यह सुन कर वह बेचारी बुढ़िया की तो सिट्टी पिट्टी ही गुम हो गयी। वह बोली — "अरे अरे ऐसी बात मत करो पोते। तुमने तो बहुत पहले से ही मुझे खतरे में डाल रखा है क्योंकि मुझे यकीन है इस घर में जो कुछ भी कहा जाता है उसको वह साँप कहीं भी हो सब सुन लेता है।

तुम देख रहे हो न कि मैं एक गरीब बुढ़िया हूँ और मुझे उसने यहाँ ये बर्तन दे कर अपने लिये खाना बनाने के लिये रखा है। जब वह साँप आता है तब हवा चलनी शुरू हो जाती है। धूल ऐसे उड़नी शुरू हो जाती है जैसे आँधी आने वाली है।

वह जब आँगन में आ जाता है तो यहाँ से वह तभी हटता है जब उसका पेट भर जाता है। फिर वह अन्दर पानी पीने जाता है। जब वह यह सब कर लेता है तो फिर चला जाता है। जब सूरज सिर पर चढ़ आता है तब वह फिर यही सब करता है।

मैं तुम्हें उसके बारे में एक बात और बता दूँ, और वह यह कि उसके सात सिर हैं। उसके बारे में यह सब सुन कर अब तुम क्या सोचते हो कि क्या तुम उसका मुकाबला कर सकते हो?"

कीजी पा बोला — "देखिये दादी माँ, आप मेरी बिल्कुल चिन्ता न करें। आप मुझे बस यह बतायें कि क्या इस बड़े साँप के पास कोई तलवार भी है?"

"हाँ है न। यह लो।" कह कर वह बुढ़िया अन्दर गयी और एक चमचमाती तेज धार वाली तलवार निकाल लायी और कीजी पा को थमा दी।

फिर बोली — "इसमें चिन्ता करने की क्या बात है, हम लोग तो पहले से ही मरे हुए हैं।"

कीजी पा बोला — "देखते हैं क्या होता है।"

तभी ज़ोर की हवा चलने लगी और धूल ऐसे उड़ने लगी जैसे कि आँधी आने वाली हो। यह देख कर वह बुढ़िया चिल्लायी — "तुम सुन रहे हो न यह आँधी की आवाज, वह आ रहा है।"

कीजी पा बोला — "हुँह, अगर वह बड़ा है तो मैं भी बड़ा हूँ बल्कि मुझे तो यह भी फायदा है कि मैं घर के अन्दर हूँ। जानवरों के एक बाड़े में दो साँड़ नहीं रह सकते। इस घर में या तो वह रहेगा या मैं।"

बुढ़िया बेचारी समझ ही नहीं पा रही थी कि वह किस मुश्किल में आ फँसी थी फिर भी वह छोटे से हिरन के भरोसे पर मुस्कुरा दी। वह बार बार हिरन को याद दिलाती रही कि इस साँप ने तलवार और ढाल लिये हुए कितने सारे लोग मार दिये हैं।

हिरन बार बार यह सब सुन कर झल्ला गया और बोला — “आप अपनी ये बातें बन्द करिये दादी माँ। आप केले का रंग और साइज़ देख कर केले का अन्दाज नहीं लगा सकतीं। ज़रा इन्तजार कीजिये और फिर देखिये कि क्या होता है।”

थोड़ी ही देर मे वह बड़ा साँप नीओका एमकू अपने आँगन में आ गया और चारों तरफ घूम घूम कर सारे बरतनों का सामान खा गया। फिर वह दरवाजे के पास आया और बोला — “ओ बुढ़िया, यह अन्दर आज किसी नयी तरह की खुशबू कैसी आ रही है?”

बुढ़िया बोली — “किसी तरह की भी नहीं। मैं तो यहाँ इतनी देर से काम कर रही थी कि मुझे अपने आपको देखने का भी समय नहीं मिला। हाँ आज सुबह ही मैंने थोड़ी सी खुशबू अपने कपड़ों में जरूर लगायी थी आपको उसी की खुशबू आ रही होगी।”

इस समय कीजी पा ने अपनी तलवार बाहर खींच ली थी और वह दरवाजे के अन्दर की तरफ खड़ा था सो जैसे ही साँप ने अपना सिर घर के अन्दर किया कीजी पा ने उसका सिर इतनी जल्दी से काट दिया कि साँप को पता ही नहीं चला।

फिर साँप ने अपना दूसरा सिर अन्दर किया तो कीजी पा ने उसको भी वैसे ही काट दिया। इस बार साँप को कुछ लगा तो वह बोला — “अन्दर कौन है जो मुझे इस तरह खुजला रहा है?”

फिर उसने अपना तीसरा सिर अन्दर किया तो वह भी इसी तरह काट दिया गया। इस तरह कीजी पा ने उसके छह सिर काट दिये।

अब सॉप ने अपना सातवॉ सिर अन्दर किया तो हिरन चिल्लाया — "अब तुम्हारा समय आ गया है। तुम बहुत सारे पेड़ों पर चढ़ चुके हो पर तुम इस पेड़ पर नहीं चढ़ सकते।" और यह कह कर उसने उसका आखिरी सिर भी काट दिया।

पर फिर वह खुद बेहोश हो गया।

हालॉकि वह बुढ़िया **75** साल की थी फिर भी सॉप को मरते देख कर वह एक नौ साल की बच्ची की तरह खुशी से कूद पड़ी, चिल्ला पड़ी और हॅसने लगी। फिर वह पानी लाने गयी और पानी ला कर हिरन के ऊपर छिड़का। उसका सिर तब तक इधर उधर घुमाया जब तक कि उसको छींक नहीं आ गयी।

फिर उसने हिरन की हवा की, उसका शरीर सहलाया और तब तक देखभाल की जब तक उसको ठीक से होश नहीं आ गया। जैसे ही उसको होश आया वह बुढ़िया बहुत खुश हो गयी और बोली — "मेरे पोते, कौन जानता था कि तुम उसका मुकाबला कर सकते हो?"

कीजी पा बोला — "चलिये दादी मॉ, अब सब खत्म हो गया। अब आप मुझे वह सब कुछ दिखाइये जो इस घर में है।"

बुढ़िया ने हिरन को ऊपर से ले कर नीचे तक सब कुछ दिखा दिया। उसने कीजी पा को मँहगे खाने के सामान से और दूसरे सामान से और बहुत सारे लोगों से भरे सारे कमरे दिखाये। बहुत सारे लोग उस सॉप ने बन्दी बना कर रखे हुए थे उसने हिरन को वे भी दिखाये।

कीजी पा ने बुढ़िया से पूछा कि सॉप के मरने के बाद उसके सामान पर कब्जा करने वाला और कोई तो नहीं है। वह बोली "नहीं और कोई नहीं है अब यह सब तुम्हारा ही है।"

कीजी पा बोला — "ठीक है। जब तक मैं अपने मालिक को ले कर आता हूँ तब तक आप इस सबकी देखभाल कीजिये। यह जगह अब मेरे मालिक की है।"

कीजी पा ने तीन दिन तक वहॉ ठहर कर उस घर को देखा और सोचा "मैंने अपने मालिक के लिये जो कुछ किया है उसे देख कर वह बहुत खुश होंगे और जैसी ज़िन्दगी वह बिता रहे थे उसके मुकाबले में इस ज़िन्दगी की बहुत तारीफ करेंगे।

और जहॉ तक उनके ससुर का सवाल है उनके तो शहर भर में इस जैसा एक भी मकान नहीं है।"

चौथे दिन वह वहॉ से चल दिया और ठीक समय से अपने मालिक के पास आ गया। सुलतान उसको देख कर बहुत खुश हुआ और उसका अपना मालिक तो इतना खुश हुआ जैसे उसको नयी

ज़िन्दगी मिल गयी हो क्योंकि कीजी पा के बिना वह बहुत अकेला महसूस कर रहा था।

कुछ देर बाद कीजी पा ने अपने मालिक से कहा कि आज से चार दिन बाद वह अपनी पत्नी के साथ अपने घर चलने के लिये तैयार हो जायें।

फिर वह सुलतान के पास गया और उससे कहा — "सुलतान दाराई चार दिन के बाद अपनी पत्नी के साथ अपने राज्य जाना चाहेंगे।"

यह सुन कर पहले तो सुलतान ने मना किया पर फिर अपने दामाद[58] की इच्छा के अनुसार अपनी बेटी को विदा करने को तैयार हो गया।

जाने वाले दिन सुलतान दाराई को छोड़ने के लिये बहुत सारे लोग जमा हुए – दुलहिन की नौकरानियाँ, नौकर, घुड़सवार और कीजी पा उन सबके आगे था।

वे लोग तीन दिन तक सफर करते रहे। जब दोपहर होती तो वे आराम करते और हर शाम पाँच बजे खाने और सोने के लिये रुक जाते। सुबह जल्दी ही उठते, खाना खाते और फिर चल देते।

इस बीच कीजी पा ने बहुत कम आराम किया। वह सारा दिन काफिले के सभी आदमियों और जानवरों की देखभाल करने में लगा रहता कि सबको खाना ठीक से मिला कि नहीं, सबने ठीक से आराम

---

[58] Translated for the word "Son-in-Law" – means the husband of the daughter

किया कि नहीं, किसी को कोई तकलीफ तो नहीं है। इसलिये सारा काफिला उसको बहुत प्यार करता था।

चौथे दिन तीसरे पहर के समय कुछ मकान दिखायी देने शुरू हुए तो कारवॉ ने कीजी पा का ध्यान उधर खींचा। कीजी पा बोला — "हॉ यही हमारा शहर है। और तुम लोग वह बड़ा वाला मकान देख रहे हो न? वही हमारे सुलतान दाराई का महल है।"

उस महल का ऑगन तो काफिले के सारे लोगों से भर गया और सुलतान और उसकी पत्नी महल में अन्दर चले गये।

जब उस बुढ़िया ने कीजी पा को देखा तो उसने तो खुशी से नाचना और चिल्लाना शुरू दिया जैसे वह जब नाची थी जब कीजी पा ने नीओका एमकू सॉप को मारा था। उसने उसका पैर उठा कर चूम लिया।

कीजी पा बोला — "दादी मॉ, यह मेरा नहीं बल्कि हमारे मालिक सुलतान दाराई का काम था। आप जा कर उनके पैर चूमिये। जब भी वह मौजूद हों तो पहली इज़्ज़त उन्हीं को मिलनी चाहिये।"

बुढ़िया ने सुलतान को न जानने के लिये कीजी पा से माफी मॉगी। कीजी पा और सुलतान फिर सारा मकान देखने गये।

सुलतान ने सारे कमरे साफ करवाये, कुर्सियॉ और मेज आदि साफ करवाये, सारे बन्दियों को आजाद किया, घोड़ों को घास खाने

के लिये घास के मैदान भेज दिया गया। नौकरों ने इसी बीच खाना तैयार कर दिया।

सबको उनके रहने की जगह बता दी गयी। सब लोग बहुत खुश थे। कुछ दिन रहने के बाद सुलतान की पत्नी की नौकरानियों ने अपने घर जाने की इजाज़त चाही। कीजी पा ने उन्हें और कुछ दिन के लिये रोक लिया पर फिर वे चली गयीं।

कीजी पा ने उन सबको बहुत सारी भेंटें दे कर भेजा। इससे उनके दिल में कीजी पा के लिये अपने सुलतान से भी ज़्यादा इज़्ज़त बढ़ गयी। अब वहाँ सब लोग खुशी से रहने लगे।

एक दिन कीजी पा बुढ़िया से बोला — "मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मालिक बहुत ही भोले हैं। जबसे मैं उनके साथ हूँ मैंने उनका भला ही किया है। मैंने यहाँ इस शहर में आ कर उनके लिये बहुत से खतरे मोल लिये। और जब सब कुछ हो गया तो मैंने उनको वह सब कुछ दे दिया।

पर उन्होंने कभी यह नहीं पूछा कि "तुमको यह घर कैसे मिला? या तुमको यह शहर कैसे मिला? या इस घर का मालिक कौन था? या तुमने ये सब चीज़ें किराये पर लीं या फिर तुमको किसी ने दीं? यहाँ के रहने वालों का क्या हुआ? मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ।

इसके अलावा हालाँकि मैंने उनके लिये अच्छे के अलावा और कुछ नहीं किया फिर भी उन्होंने मेरे लिये एक भी अच्छा काम नहीं किया। देखा जाये तो यहाँ उनका अपना तो कुछ भी नहीं है।

उन्होंने ऐसा घर, ऐसा शहर तो जिस दिन से वह पैदा हुए हैं कभी देखा ही नहीं।

मुझे लगता है कि बड़े बूढ़े लोग ठीक कहते थे "जब तुम किसी के लिये कुछ अच्छा करो तो उसके लिये बहुत ज़्यादा अच्छा मत करो। कभी कभी उसका थोड़ा सा नुकसान भी करो तभी वह तुम्हारी अच्छाइयों को पहचानेगा।"

खैर अब तक जो कुछ मैं कर सकता था मैंने कर दिया पर अब मैं देखता हूँ कि वह मेरे लिये बदले में क्या करते हैं।"

अगली सुबह हिरन की पुकार ने बुढ़िया को जल्दी ही जगा दिया — "माँ माँ।"

जब बुढ़िया उठ कर उसके पास गयी तो उसने देखा कि कीजी पा बहुत बीमार था। उसको बुखार था, उसकी टाँगें और पेट दोनों दर्द कर रहे थे। उसने माँ को सुलतान से जा कर यह कहने को कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं थी।

सो वह ऊपर गयी जहाँ सुलतान और उसकी पत्नी हिन्दुस्तान के बनी सिल्क की चादर ओढ़े संगमरमर के काउच पर बैठे थे। सुलतान ने पूछा — "ओ बुढ़िया क्या बात है?"

बुढ़िया बोली — "मालिक, कीजी पा की तबियत ठीक नहीं है।"

सुलतान की पत्नी तो यह सुन कर घबरा गयी। वह तुरन्त बोली — "क्या हुआ उसको?"

बुढ़िया बोली — "उसका सारा बदन दर्द कर रहा है और वह तो पूरे का पूरा ही बीमार लग रहा है।"

सुलतान बोला — "तो मैं क्या कर सकता हूँ। लाल बाजरा ले लो जो हम लोग जानवरों को खिलाते हैं और उसका दलिया बना कर उसको खिला दो।"

सुलतान की पत्नी आश्चर्य से बोली — "अरे क्या आप उसको वह खिलाना चाहते हैं जो एक घोड़ा बहुत भूखा होने पर भी नहीं खायेगा। यह आपके लिये ठीक नहीं है।"

सुलतान बोला — "जाओ, तुम्हारा तो दिमाग खराब हो गया है। चावल तो हम लोग खाते हैं। क्या 10 सैन्ट का लाल बाजरा उसके लिये काफी नहीं होगा?"

पत्नी बोली — "पर वह कोई मामूली हिरन नहीं है। वह तो आपको अपनी ऑख के तारे जितना प्यारा होना चाहिये। जैसे आगर ऑख में रेत का एक कण भी पड़ जाये तो तकलीफ देता है उसी तरह से उसको तकलीफ में देख कर आपको भी तकलीफ होनी चाहिये।"

सुलतान अपनी पत्नी से बोला — "तुम बोलती बहुत हो।"

फिर वह उस बुढ़िया से बोला — "जाओ और वैसा ही करो जैसा कि मैंने तुमको करने को कहा है।" सो बुढ़िया नीचे चली गयी और हिरन को देख कर रोने लगी।

हालाँकि बुढ़िया कीजी पा को सुलतान की बात बताना नहीं चाहती थी पर कीजी पा ने भी उसको वह कहने पर मजबूर कर दिया जो सुलतान ने उससे कहा था।

उसको अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ सो उसने दोबारा दादी माँ से पूछा — "माँ, क्या उन्होंने ऐसा कहा कि मुझे लाल बाजरे का दलिया बना कर दे दिया जाये?"

बुढ़िया बोली — "अगर उन्होंने ऐसा नहीं कहा होता तो क्या मैं तुमसे ऐसा कहती पोते?"

कीजी पा फिर बोला — "मुझे लगता है कि बड़े लोग ठीक ही कहते थे। पर ठीक है हम उनको दूसरा मौका देंगे। आप दोबारा उनके पास जायें और उनसे कहें कि मैं इतना ज़्यादा बीमार हूँ कि लाल बाजरे का दलिया भी नहीं खा सकता।"

सो वह बुढ़िया फिर ऊपर गयी। इस बार उसने देखा कि दोनों पति पत्नी खिड़की के पास बैठे काफी पी रहे थे। सुलतान ने बुढ़िया को फिर से वहाँ देख कर पूछा — "अब क्या बात है बुढ़िया?"

बुढ़िया बोली — "मालिक मुझे कीजी पा ने फिर भेजा है। लगता है कि वह वाकई बहुत बीमार है क्योंकि जैसा दलिया आपने मुझ से बनाने के लिये कहा था मैंने वैसा ही दलिया उसको बना कर दिया पर उससे वह भी नहीं खाया गया।"

सुलतान नाराज हो कर बोला — "अपनी जीभ को काबू में रखो, टाँगें जमा कर रखो, आँखें बन्द कर के रखो और कानों में रुई

लगा लो। अबकी बार अगर वह हिरन तुमसे ऊपर आने को कहे तो उसको बोल देना कि तुम्हारी टॉगें अकड़ गयीं हैं।

और अगर वह तुमसे कुछ सुनने के लिये कहे तो कह देना कि तुम बहरी हो गयी हो। और अगर वह तुमसे कुछ देखने के लिये कहे तो कहना कि तुमको कुछ दिखायी नहीं देता।

अगर वह तुमसे कोई बात करना चाहे तो उससे बात नहीं करना, कहना कि तुम्हारी जीभ को लकवा मार गया है।"

बुढ़िया ने जब यह सुना तो वह तो वहीं की वहीं सुलतान को देखती खड़ी की खड़ी रह गयी, हिल भी न सकी। सुलतान की पत्नी का चेहरा भी उदास हो गया और उसकी ऑखों से ऑसू बहने लगे।

सुलतान यह देख कर बोला — "ओ सुलतान की बेटी, तुमको क्या हुआ? तुम क्यों रो रही हो?"

पत्नी बोली — "जो आदमी दूसरों का उपकार नहीं मानता वह पागल होता है।"

सुलतान ने पूछा — "तुम ऐसा कैसे सोचती हो?"

पत्नी बोली — "जिस तरीके से आप कीजी पा के साथ बर्ताव कर रहे हैं मैं उससे बहुत दुखी हॅू। जब भी मैं उस हिरन के बारे में कुछ अच्छा बोलती हॅू वह आपको सुनने में अच्छा नहीं लगता। मुझे आपके ऊपर दया आती है कि आपकी समझ को क्या हो गया है।"

सुलतान बोला — "तुम मुझसे इस तरह से बात क्यों करती हो?"

पत्नी बोली — "क्यों, सलाह मिलनी तो बहुत ही अच्छी बात है अगर उसको ठीक से लिया जाये तो। पति को पत्नी से सलाह लेनी चाहिये और पत्नी को पति से। यही दोनों के लिये अच्छा है।"

सुलतान ने जल्दी से कहा — "इस सबसे साफ जाहिर है कि तुम्हारी समझ बिल्कुल ही खत्म हो गयी है। तुमको तो बॉध देना चाहिये।"

फिर उसने बुढ़िया से कहा — "तुम इसकी बातों को मत सुनना और जहॉ तक इस हिरन का सवाल है उसको कहना कि वह मुझे परेशान करना बन्द करे। इससे तो ऐसा लगता है जैसे सुलतान मैं नहीं वह है। मैं खा नहीं सकता, मैं पी नहीं सकता, मैं सो नहीं सकता। उसकी इन बातों ने तो मुझे परेशान कर रखा है।

पहले तो वह बीमार है और फिर वह वह खा नहीं सकता जो उसे खाने को दिया जाता है। अगर वह यह सब नहीं कर सकता तो बन्द कर दो उसको। अगर वह कुछ खाना पसन्द करता है तो उसको खाने दो और अगर वह कुछ नहीं खाना चाहता तो मरे।

मेरी मॉ मर गयी मेरे पिता मर गये और मैं अभी भी ज़िन्दा हूॅ और खा रहा हूॅ। क्या मैं उस हिरन के लिये मर जाऊॅ जिसको मैंने **10** सैन्ट में खरीदा था और जो मुझसे यह कह रहा है कि मुझे यह चाहिये और वह चाहिये।

जाओ और जा कर उससे कह दो कि उसको अपने बड़ों से ठीक से बर्ताव करना सीखना चाहिये।"

यह सब सुन कर बुढ़िया बेचारी नीचे चली गयी। नीचे जा कर उसने देखा कि हिरन के मुँह से तो बुरी तरह से खून निकल रहा है। वह उसको इस हालत में देख कर केवल इतना ही कह सकी — "मेरे बच्चे, तुमने सुलतान के लिये जो कुछ भी अच्छा किया लगता है कि वह सब बेकार गया पर धीरज रखो।"

और जब उस बुढ़िया ने उसको यह बताया कि ऊपर क्या हुआ था तो उसको तो सुन कर हिरन बहुत रोया और बोला — "माँ, मैं मर रहा हूँ केवल इसलिये नहीं कि मैं बीमार हूँ बल्कि आदमी की बेवफाई पर शर्म और गुस्से की वजह से भी मुझे मौत आ रही है।"

कुछ देर बाद कीजी पा ने बुढ़िया को फिर ऊपर भेजा और उससे कहा कि वह सुलतान से जा कर कह दे कि ऐसा लगता है कि कीजी पा मरने वाला है।

अबकी बार जब बुढ़िया ऊपर गयी तो सुलतान गन्ना खा रहा था। उसने ऊपर जा कर कहा — "मालिक, हिरन की हालत तो खराब होती जा रही है। उसकी हालत तो बजाय अच्छे होने के और ज़्यादा खराब हो गयी है। लगता है कि वह तो मर ही जायेगा।"

सुलतान ने अबकी बार उसको डाँट कर कहा — "मैंने तुमसे कितनी बार कहा कि मुझे तंग मत करो।"

यह सुन कर उसकी पत्नी बोली — "एक बार नीचे जा कर आप उस बेचारे हिरन को देख तो आइये न। अगर आप नहीं जाना चाहते तो मुझे जाने दीजिये मैं देख आती हूँ। उस बेचारे हिरन ने आपसे कभी कोई अच्छी चीज़ नहीं पायी।"

सुलतान ने उस बुढ़िया से कहा — "जाओ और जा कर उस हिरन से कह दो कि वह अगर **11** बार मरना चाहता है तो मरे।"

इस बार उसकी पत्नी बोली — "उस हिरन ने आपका क्या बिगाड़ा है? क्या उसने आपका कुछ नुकसान किया है जो आप उसके लिये ऐसे शब्द इस्तेमाल कर रहे हैं?

ऐसे शब्द तो लोग केवल अपने दुश्मनों के लिये ही इस्तेमाल करते हैं। और इतना मैं यकीन के साथ कह सकती हूँ कि यह हिरन आपका दुश्मन नहीं है।

सारे लोग जो उसको जानते हैं चाहे वे अमीर हों या गरीब सभी उसको बहुत प्यार करते हैं। और अगर आप उसके साथ ऐसा बर्ताव करेंगे तो वे सब आप ही को बुरा कहेंगे। सो ओ सुलतान, मेहरबानी करके उसके साथ कुछ तो दया का बर्ताव कीजिये।"

परन्तु सुलतान दाराई ने अपनी पत्नी की बात बिल्कुल नहीं सुनी। वह बुढ़िया बेचारी एक बार फिर वापस नीचे चली गयी और उसने हिरन को और भी बुरी हालत में पाया।

इस बीच सुलतान की पत्नी ने अपने एक नौकर को हिरन के लिये थोड़ा चावल पकाने के लिये दे दिया। एक मुलायम शौल

उसके ओढ़ने के लिये और एक मुलायम तकिया उसके लेटने के लिये भी भिजवा दिया।

साथ में उसने उसको यह भी कहलवा दिया कि अगर वह चाहेगा तो वह अपने पिता का सबसे अच्छा डाक्टर उसके इलाज के लिये बुलवा देगी।

पर यह सब बहुत देर से पहुँचा। जब तक यह सब पहुँचा तब तक तो कीजी पा मर गया था। जैसे ही लोगों ने यह सुना कि कीजी पा मर गया वे इधर उधर भागने लगे और रोने लगे।

पर सुलतान दाराई पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह बोला — "तुम लोगों ने यह सब इतना हंगामा क्यों किया हुआ है? और वह भी इस छोटे से हिरन पर जिसको मैंने 10 सैन्ट में खरीदा था। तुम्हारे हंगामे से तो ऐसा लगता है जैसे हिरन नहीं बल्कि मैं मर गया हूँ।"

पर उसकी पत्नी बोली — "यही वह हिरन था जो आपके लिये मेरे पिता से मेरा हाथ माँगने गया था। यही वह हिरन था जो मुझे मेरे पिता के घर से यहाँ तक ले कर आया था। यही वह हिरन था जिसको मेरे पिता ने मुझको दिया था।

उसने आपको हर अच्छी से अच्छी चीज़ दी। आपके पास अपनी तो कोई चीज़ है ही नहीं, सब उसी की दी हुई हैं। आपकी सहायता करने के लिये वह जो भी कर सकता था उसने किया और आपने बदले में उसे क्या दिया? अपना यह बेरहम बर्ताव।

पर अब क्या। अब तो वह मर गया है और आपने अपने आदमियों को उसके शरीर को कुँए में फेंकने के लिये बोल दिया है। अब तो हम केवल उसके लिये रो ही सकते हैं।" सुलतान के हुक्म से हिरन को एक कुँए में फेंक दिया गया।

सुलतान की पत्नी ने तब अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी कि वह उस चिट्ठी को मिलते ही उसके पास चले आयें और अपने खास आदमियों के हाथ उस चिट्ठी को अपने पिता के पास भेज दिया। चिट्ठी मिलते ही सुलतान अपनी बेटी से मिलने के लिये आ गया।

वहाँ आ कर उसे पता चला कि हिरन मर गया है और उसके शरीर को कुँए में फेंक दिया गया है तो वह और उसके साथ आये सब लोग बहुत रोये।

फिर वे सब उस कुँए में गये और कीजी पा के शरीर को कुँए में से निकाल कर लाये। उसको वहाँ से ले जा कर उन्होंने उसके शरीर को दूसरी जगह ठीक से दफ़न कर दिया।

उसी रात को सुलतान की पत्नी को सपना आया कि वह अपने पिता के घर में है और जब सुबह हुई तो उसने देखा कि वह तो वाकई अपने पिता के घर में अपने ही बिस्तर पर सोयी हुई थी।

उधर उसके पति ने भी सपना देखा कि वह कूड़े के ढेर में से कुछ ढूँढ रहा है। और जब वह सुबह उठा तो उसके दोनों हाथ धूल से भरे हुए थे और वह कूड़े के ढेर में से बाजरे के दाने ढूँढ रहा था।

पागलों की तरह से इधर उधर देखते हुए वह चिल्लाया — "अरे मेरे साथ यह चाल किसने खेली? मैं यहाँ वापस कैसे आ गया?"

उसी समय कुछ बच्चे उधर से गुजर रहे थे। उसको देख कर वे हँस पड़े, आवाजें निकालने लगे और बोले — "अरे हामदानी तुम अब तक कहाँ थे और कहाँ से आ गये? हमको तो लगा कि तुम बहुत पहले मर गये।"

इस तरह सुलतान की बेटी अपने घर में खुशी से रहने लगी और वह भिखारी फिर से कूड़े के ढेर से बाजरे के दाने चुनने लगा और तब तक चुनता रहा जब तक वह मरा।

10 डाक्टर का बेटा और साँपों का राजा[59]

एक बार एक शहर में एक बहुत बड़ा डाक्टर रहता था। वह अपनी पत्नी और एक छोटे बेटे को छोड़ कर मर गया। जब वह बेटा बड़ा हो गया तो उसकी माँ ने उसके पिता की इच्छा के अनुसार उसका नाम हसीबू करीमुद्दीन[60] रखा।

जब हसीबू ने स्कूल में पढ़ना लिखना सीख लिया तब उसकी माँ ने उसको एक दर्जी के पास सिलाई का काम सीखने के लिये भेजा पर वह दर्जी का काम नहीं सीख सका। फिर उसकी माँ ने उसको एक चाँदी की चीज़ें बनाने वाले के पास भेजा पर वह वह काम भी नहीं सीख सका।

इसके बाद वह कई और जगह भी कुछ कुछ काम सीखने के लिये गया पर वह वहाँ भी कुछ नहीं सीख सका। तब उसकी माँ ने कहा कि वह अब कुछ दिन घर बैठे। यह उसको ठीक लगा।

एक दिन हसीबू ने अपनी माँ से पूछा कि उसके पिता क्या काम करते थे तो उसकी माँ ने उसको बताया कि वह एक बहुत ही अच्छे डाक्टर थे।

"तो फिर उनकी किताबें कहाँ हैं?"

---

[59] The Physician's Son and the King of the Snakes – a folktale of Zanzibar, Eastern Africa.

[60] Haseeboo Kareemuddeen – a Muslim name

मॉ बोली — “काफी दिनों से मैंने उनको देखा नहीं है पर वे यहीं कहीं होंगी, शायद पीछे पड़ी होंगी। देख लो।”

उसने उनको इधर उधर ढूँढा। काफी देर तक ढूँढने को बाद आखिर में वे किताबें उसको मिल गयीं पर वे करीब करीब सारी की सारी कीड़ों ने खा ली थीं और वह उनमें से बहुत कम पढ़ सका।

एक दिन उनके चार पड़ोसी उनके घर आये और उसकी मॉ से कहा कि अपने बेटे को हमारे साथ जंगल में लकड़ी काटने के लिये भेज दो। वे लोग वहीं पास में ही काम करते थे। वे जंगल से लकड़ी काटते थे, गधों पर लादते थे और शहर जा कर उसे बेच देते थे। लोग उस लकड़ी से आग जलाते थे।

उसकी मॉ ने हॉ कर दी और कहा — “कल मैं उसके लिये एक गधा खरीद दूँगी और फिर वह तुम्हारे साथ तुम्हारे काम धन्धे में लग जायेगा।”

अगले दिन हसीबू की मॉ ने उसके लिये एक गधा खरीद दिया और वह अपने गधे को ले कर उन चारों आदमियों के साथ लकड़ी काटने चला गया।

उस दिन उन लोगों ने बहुत काम किया और बहुत सारा पैसा कमाया। यह सब छह दिनों तक चला पर सातवें दिन बहुत तेज़ बारिश हो गयी और उन सबको बारिश से भीगने से बचने के लिये एक गुफा में जाना पड़ा।

हसीबू गुफा में एक तरफ अकेला बैठा था। उसके पास कुछ करने को तो था नहीं सो वह एक पत्थर उठा कर उसे जमीन पर मारने लगा। उसने वह पत्थर दो चार बार ही मारा था कि उसको वहाँ से कुछ ऐसी आवाज आयी जैसी कि खोखली जमीन पर मारने पर आती है।

उसने अपने साथियों को आवाज लगायी और बोला कि ऐसा लगता है कि यहाँ कोई छेद है। पहले तो किसी ने उसकी आवाज ही नहीं सुनी पर जब उसने दोबारा आवाज लगायी तो वे लोग आये और यह जानने के लिये कि वह खोखली जमीन की आवाज कहाँ से आ रही थी उन्होंने वहाँ खोदना शुरू किया।

वे लोग बहुत देर तक नहीं खोद पाये थे कि उनको कुँए की तरह का एक बहुत बड़ा गड्ढा दिखायी दिया जो शहद से भरा था। उस दिन उन्होंने कोई लकड़ी नहीं काटी बल्कि सारा दिन शहद इकट्ठा करने और उसको बेचने में ही लगा दिया।

सारा शहद जल्दी से जल्दी निकालने के चक्कर में उन्होंने हसीबू को उस शहद के कुँए में नीचे उतार दिया और उससे शहद ऊपर देने के लिये कहा और वे खुद उस शहद को बरतनों में इकट्ठा कर करके बाजार बेचने के लिये ले जाते रहे।

आखीर में जब वहाँ बहुत कम शहद रह गया तो उन्होंने उस लड़के से उसको भी इकट्ठा करने के लिये कहा और वे खुद एक रस्सी लाने चले गये ताकि वे उस लड़के को बाहर निकाल सकें।

पर बाद में उन्होंने उस लड़के को उसी कुँए में छोड़ दिया और शहद बेचने से जो पैसा उन्होंने कमाया था उसे भी केवल आपस में ही बाँट लिया। उस लड़के को कुछ भी नहीं दिया।

लड़के ने भी जब सारा शहद बटोर लिया तो रस्सी के लिये आवाज लगायी। पर वहाँ कोई होता तो बोलता। वे लोग तो सब वहाँ से चले गये थे।

तीन दिन तक वह लड़का उसी कुँए में पड़ा रहा। अब उसको यकीन हो गया था कि उसके साथी लोग उसको छोड़ कर चले गये थे।

उधर उसके चारों साथी उसकी माँ के पास गये और उससे कहा कि उसका बेटा जंगल में उनसे बिछड़ गया। उसके बाद उन्होंने शेर की दहाड़ की आवाज भी सुनी। काफी ढूँढने पर भी लड़के और उसके गधे का कहीं पता नहीं चला। इससे ऐसा लगता है कि हसीबू और उसके गधे दोनों को शेर ने खा लिया है।

जाहिर है कि हसीबू की माँ अपने बेटे के लिये बहुत रोयी बहुत चिल्लायी पर क्या कर सकती थी। बेचारी रो पीट कर बैठ गयी। उसके पड़ोसियों ने उसके हिस्से का पैसा भी रख लिया था।

उधर हसीबू उस कुँए में इधर उधर चक्कर काटता रहा और सोचता रहा कि आखिर उसका होगा क्या? तब तक वह शहद खाता रहा, थोड़ा सोता रहा और बाकी समय में सोचता रहा।

चौथे दिन जब वह बैठा बैठा सोच रहा था तो उसने एक बहुत बड़ा बिच्छू उपर से गिरता हुआ देखा। उसने उस बिच्छू को मार तो दिया पर वह यह सोचने लगा कि यह बिच्छू आया कहाँ से? इसका मतलब है कि इस कुँए में किसी और जगह भी कोई छेद है जहाँ से यह आया है। मैं ढूँढता हूँ उस जगह को।

सो उसने चारों तरफ देखना शुरू किया तो उसने देखा कि एक पतली झिरी में से रोशनी आ रही है। उसने तुरन्त अपना चाकू निकाला और उस झिरी को बड़ा करने में लगा रहा जब तक कि वह छेद इतना बड़ा नहीं हो गया जिसमें से वह निकल सकता।

उस छेद में से फिर वह बाहर निकल आया। अब वह एक ऐसी जगह आ गया था जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसे एक सड़क दिखायी दी तो वह उसी सड़क पर चल दिया और एक बड़े मकान के सामने पहुँच गया।

उस मकान का दरवाजा खुला था सो वह उस मकान के अन्दर घुस गया। वहाँ उसने सोने के दरवाजे देखे जिनमें सोने के ताले लगे थे और मोती की चाभियाँ लगीं थीं। वहाँ उसने सुन्दर कुर्सियाँ भी देखीं जिनमें बेशकीमती पत्थर जड़े हुए थे।

बाहर वाली बैठक में उसने एक बहुत सुन्दर काउच देखा जिसके ऊपर एक बहुत कीमती चादर पड़ी थी। वह उस काउच पर जा कर लेट गया।

पर तभी उसको लगा कि किसी ने उसको उठा कर कुर्सी पर बिठा दिया और सुना कि कोई कह रहा था — "देखो इसको चोट न लगे, इसको सँभाल कर जगाओ।"

तभी उसकी आँख खुल गयी और उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो बहुत सारे साँप थे और उनमें से एक साँप ने तो शाही कपड़े भी पहन रखे थे।

वह लड़का बोला — "तुम लोग कौन हो?"

वह साँप बोला — "मैं सुलतानी वानीओका[61] हूँ, साँपों का राजा, और यह मेरा घर है। तुम कौन हो?"

लड़का बोला — "मैं हसीबू करीमुद्दीन हूँ।"

"तुम कहाँ से आये हो?"

"मुझे नहीं मालूम मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ।"

साँपों का राजा बोला — "खैर, अभी तुम इसकी चिन्ता मत करो। पहले तुम कुछ खा लो। मुझे लग रहा है कि तुम बहुत भूखे हो और मुझे भी बहुत भूख लगी है।"

राजा ने हुक्म दिया तो कई साँप बहुत सारे बहुत बढ़िया फल ले आये। वे उन्हें खाते रहे और बात करते रहे। जब खाना खत्म हो गया तो राजा ने हसीबू की कहानी सुननी चाही। हसीबू ने अपनी सारी कहानी सुना दी और फिर राजा से उसकी कहानी सुननी चाही।

---

[61] Sultaanee Waaneeokaa – the King of the Snakes

सॉपों के राजा की कहानी

सॉपों के राजा ने कहा — "मेरी कहानी थोड़ी लम्बी है फिर भी मैं तुमको उसे सुनाऊँगा। काफी दिन पहले मैं हवा पानी की बदली के लिये यह जगह छोड़ कर अल काफ पहाड़[62] पर चला गया। एक दिन मैंने एक अजनबी को आते देखा तो उससे पूछा कि तुम कहॉ से आ रहे हो?"

तो उसने जवाब दिया — "मैं तो ऐसे ही जंगलों में भटकता घूम रहा हूॅ।"

मैंने उससे पूछा — "तुम किसके बेटे हो?"

वह बोला — "मेरा नाम बोलूकिया[63] है। मेरे पिता एक सुलतान थे। जब वह मर गये तो मैंने उनकी एक छोटी सी सन्दूकची खोली। उस सन्दूकची में एक थैला था और उस थैले में एक पीतल का बक्सा था।

जब मैंने वह पीतल का बक्सा खोला तो उसमें ऊनी कपड़े में लिपटी हुई कुछ लिखी हुई चीज़ रखी थी। वह किसी धर्मदूत[64] की तारीफ में लिखी हुई थी।

उनमें वह एक बहुत ही अच्छा आदमी दिखाया गया था सो मुझे उस आदमी को देखने की इच्छा हुई। पर जब मैंने उसके बारे में

[62] Al Kaaf Mountain

[63] Bolukiya

[64] Translated for the word "Prophet"

पूछताछ की तो पता चला कि वह धर्मदूत तो अभी पैदा ही नहीं हुआ था।

तभी मैंने सोच लिया कि मैं तब तक घूमता रहूँगा जब तक मैं उससे मिल नहीं लूँगा। सो मैंने अपना देश छोड़ा, अपना घर छोड़ा और तब से मैं घूमता ही फिर रहा हूँ।"

मैंने पूछा — "अगर वह अभी तक पैदा ही नहीं हुआ है तो तुम उसे कहाँ देखने की उम्मीद रखते हो? हाँ अगर तुम्हारे पास "साँप का पानी" हो तो तुम शायद तब तक ज़िन्दा भी रह सको जब तक वह पैदा हो और तुम उसको देख सको। पर उस पानी की बात करने से भी क्या फायदा क्योंकि वह तो बहुत दूर है।"

उसने कहा — "मुझे तो घूमते ही रहना है।" और मुझसे विदा ले कर वह चला गया।

घूमते घूमते वह मिश्र[65] पहुँच गया जहाँ किसी ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

उसने जवाब दिया — "मैं बोलूकिया हूँ तुम कौन हो?"

उस आदमी ने कहा — "मैं अल फान[66] हूँ तुम कहाँ जा रहे हो?"

"मैंने अपना देश छोड़ा अपना मकान छोड़ा और मैं धर्मदूत को ढूँढ रहा हूँ।"

---

[65] Egypt

[66] Al Faan – name of a Muslim man

अल फान बोला — "मैं तुमको एक ऐसे आदमी को ढूँढने की बजाय जो अभी तक पैदा भी नहीं हुआ और अच्छा काम बता सकता हूँ। चलो पहले हम साँपों के राजा के पास चलते हैं और उससे कोई जादुई दवा लेते हैं।

फिर हम राजा सोलोमन के पास चलते हैं और उससे उसकी अँगूठी लेते हैं। उस अँगूठी से हम उसके जिनी[67] को अपना नौकर बना लेंगे और फिर उससे जो चाहे वह काम ले लेंगे।"

बोलूकिया बोला — "मैं साँपों के राजा से अल काफ पहाड़ पर मिल चुका हूँ।"

अल फान बोला — "तो चलें।"

अब अल फान तो सोलोमन की अँगूठी लेना चाहता था ताकि वह एक बहुत बड़ा जादूगर बन जाये और जिनी और चिड़ियों आदि को अपने बस में कर सके जबकि बोलूकिया तो केवल धर्मदूत से ही मिलना चाहता था।

सो दोनों साँपों के राजा के पास चल दिये। जब वे जा रहे थे तो अल फान बोला — "एक पिंजरा बना लेते हैं उसमें हम साँपों के राजा को कैद कर लेंगे और उसको साथ में ले चलेंगे।"

"ठीक है।"

[67] King Solomon was a great King of Jews. He had the control on many creatures. He had Genie or Jinn to work for him.

सो दोनों ने एक पिंजरा बनाया, उसमें एक प्याला दूध रखा और एक प्याला शराब रखी और उसको अल काफ पहाड़ पर ले आये।

मैंने बेवकूफ की तरह वह सारी शराब पी ली और नशे में धुत हो गया। उसी हालत में उन्होंने मुझे पिंजरे में बन्द किया और अपने साथ ले गये।

जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको एक पिंजरे में बन्द पाया और मैंने देखा कि बोलूकिया उस पिंजरे को ले जा रहा था। मैं बोला — "तुम आदमी के बच्चे बहुत खराब हो। तुम क्या चाहते हो मुझसे?"

वे बोले — "हमें कोई ऐसी दवा चाहिये जिसको हम अपने पैरों पर लगा कर जहाँ भी हमें अपने सफर में पानी पर चलने की जरूरत हो हम उस पर चल सकें।"

"ठीक है, चलो।"

चलते चलते हम एक ऐसी जगह आ गये जहाँ बहुत सारे और बहुत तरीके के पेड़ थे। जब उन पेड़ों ने मुझको देखा तो कहने लगे "मैं इस चीज़ की दवा हूँ, मैं उस चीज़ की दवा हूँ। मैं हाथों की दवा हूँ, मैं पैरों की दवा हूँ।"

उसी समय एक पेड़ ने कहा — "अगर मुझे कोई पैरों पर लगा ले तो वह पानी पर चल सकता है।"

जब मैंने उन दोनों को यह बताया तो वे बोले यही तो हम चाहते थे सो उन्होंने उस पेड़ से बहुत सारी वह दवा ले ली। इसके बाद वे मुझे पहाड़ वापस ले गये, आजाद कर दिया और चले गये।

मुझे छोड़ कर वे अपने रास्ते चले गये और समुद्र के किनारे तक पहुँच गये। वहाँ उन्होंने वह दवा अपने पैरों पर लगायी और पानी पर काफी दिनों तक चलते रहे जब तक वे सोलोमन की जगह के पास तक नहीं पहुँच गये। वहाँ उन्होंने एक जगह इन्तजार किया जहाँ अल फान ने फिर से दवाएँ बनायीं।

फिर वे सोलोमन के पास पहुँचे। उस समय वह सो रहा था और उसका जिनी उसका पहरा दे रहा था। उसका वह हाथ उसकी छाती पर रखा था जिसमें वह वह ॲगूठी पहनता था।

जैसे ही बोलूकिया सोलोमन की ॲगूठी लेने के लिये उसकी तरफ बढ़ा तो एक जिनी ने पूछा — "तुम कहाँ जा रहे हो?"

बोलूकिया बोला — "मैं अल फान के साथ हूँ और अल फान सोलोमन की ॲगूठी लेने आया है।"

जिनी बोला — "जाओ यहाँ से। वह आदमी तो मरने वाला है।"

जब अल फान की तैयारियाँ पूरी हो गयीं उसने बोलूकिया से कहा — "तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं अभी आता हूँ।" और वह ॲगूठी लेने चला गया।

जैसे ही वह अँगूठी लेने के लिये बढ़ा तो उसे एक बहुत ज़ोर से चिल्लाहट सुनायी दी और किसी अनदेखी ताकत ने उसको उठा कर बहुत दूर फेंक दिया।

किसी तरह वह उठा और अभी भी अपनी दवा में विश्वास रखते हुए वह फिर अँगूठी लेने के लिये बढ़ा। तभी साँस का एक ज़ोर का झोंका उसके चेहरे पर लगा और वह जल कर राख हो गया।

जब बोलूकिया यह सब देख रहा था एक आवाज बोली — "जाओ यहाँ से। देखो यह आदमी मर चुका है।"

वह आवाज सुन कर बोलूकिया वहाँ से लौट पड़ा और समुद्र तक आया। वहाँ आ कर उसने फिर से अपने पैरों पर पानी पर चलने वाली दवा लगायी और समुद्र पार कर समुद्र के दूसरी तरफ आ गया। उसके बाद भी वह कई सालों तक इधर उधर घूमता रहा।

एक सुबह उसने एक आदमी देखा जिससे उसने कहा — "सलाम।"

उस आदमी ने भी उसको सलाम किया।

बोलूकिया ने उससे पूछा — "तुम कौन हो?"

वह आदमी बोला — "मेरा नाम जान शाह[68] है। तुम कौन हो?"

---

[68] Jan Shah – a Muslim name of a man

बोलूकिया ने उससे उसकी कहानी सुनाने की प्रार्थना की। वह आदमी जो कभी हँस रहा था कभी रो रहा था उसने बोलूकिया से

पहले उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा।

बोलूकिया की कहानी सुनने के बाद जान शाह बोला — "बैठो, मैं तुमको शुरू से अपनी कहानी सुनाता हूँ। मेरा नाम जान शाह है। मेरे पिता ताईगेमस[69] सुलतान थे। वह रोज जंगल में शिकार खेलने जाया करते थे।

एक दिन मैंने उनसे कहा कि मैं भी आपके साथ शिकार पर जाना चाहता हूँ। वह बोले — "नहीं बेटा, तुम अभी घर में ही रहो, तुम अभी यहीं ठीक हो।"

इस पर मैंने बहुत जोर से रोना शुरू कर दिया। मैं क्योंकि अपने माता पिता का अकेला बच्चा था और मेरे पिता मुझे बहुत प्यार करते थे, वह मेरा रोना नहीं देख सके सो वह बोले — "अच्छा अच्छा चलो, रोओ नहीं।"

इस तरह हम सब जंगल गये। हमारे साथ बहुत सारे नौकर चाकर थे। जब हम जंगल पहुँच गये तो वहाँ जा कर हम लोगों ने खाना खाया और शराब पी और फिर सब शिकार के लिये निकल गये। मैं अपने सात नौकरों के साथ शिकार पर गया।

हमें एक सुन्दर हिरन दिखायी दिया। हम उसके पीछे समुद्र तक भागते चले गये। भागते भागते वह हिरन पानी में चला गया तो मैंने

[69] Taaeeghamus

और मेरे चार नौकरों ने भी एक नाव ली और उस हिरन का पीछा किया। बाकी बचे मेरे तीन नौकर मेरे पिता के पास लौट गये।

हम उस हिरन का पीछा करते करते समुद्र में काफी दूर तक निकल गये पर किसी तरह हमने उसे पकड़ लिया और मार दिया। उसी समय बहुत तेज़ हवा चलने लगी और हम समुद्र में रास्ता भटक गये।

जब वे तीन नौकर मेरे पिता के पास पहुँचे तो मेरे पिता ने उनसे पूछा — "तुम्हारे मालिक कहाँ है?"

उन्होंने मेरे पिता को हिरन, उसके समुद्र में भाग जाने, और हमारा नाव में उसका पीछा करने के बारे में बताया तो वह रोकर बोले — "मेरा बेटा तो गया, मेरा बेटा तो गया।" और घर लौट कर मुझे मरा हुआ समझ कर वह बहुत रोये।

कुछ समय समुद्र में इधर उधर घूमने के बाद हम एक टापू पर आये जहाँ बहुत सारी चिड़ियाँ थीं। वहाँ हमें फल और पानी मिल गया था सो हमने फल खाये और पानी पिया। रात हमने एक पेड़ के ऊपर सो कर गुजारी।

सुबह को हम फिर से अपने सफर पर चल दिये और एक दूसरे टापू पर आये। पिछले टापू की तरह से हमको यहाँ भी फल और पानी मिल गया सो हमने फल खाये और पानी पिया और रात पेड़ के ऊपर गुजारी। रात में कुछ जंगली जानवरों की आवाजें आती रहीं।

सुबह जितनी जल्दी हो सकता था हमने वह टापू भी छोड़ दिया और अपने सफर पर निकल पड़े। चलते चलते हम एक तीसरे टापू पर आये। वहाँ भी हमने खाना ढूँढने की कोशिश की तो हमें एक पेड़ दिखायी दिया जो लाल धारी वाले सेबों से लदा हुआ था।

जैसे ही हमने एक सेब तोड़ने की कोशिश की हमें किसी की आवाज सुनायी दी — "इस पेड़ को नहीं छूना। यह पेड़ राजा का है।" हम रुक गये।

रात के समय वहाँ बहुत सारे बन्दर आये जो हमें ऐसा लगा कि हमको देख कर बहुत खुश थे। वे हमारे लिये बहुत सारे फल लाये जिनको हम खा सकते थे।

तभी मैंने उनमें से एक बन्दर को यह कहते हुए सुना — "हम इस आदमी को अपना सुलतान बना लेते हैं।"

दूसरा बोला — "हमें इसको अपना सुलतान बनाने से क्या फायदा? ये सब तो सुबह होने पर भाग जायेंगे।"

तीसरा बोला — "पर अगर हम उनकी नाव तोड़ दें तब वे नहीं भाग सकते न।"

और वही हुआ। जब हम सुबह अपनी नाव में जाने के लिये तैयार हुए तो हमने देखा कि हमारी नाव तो टूटी पड़ी है। अब हमारे पास वहाँ रुकने और उन बन्दरों के साथ खेलने के अलावा और कोई चारा नहीं था। बन्दर हम लोगों से काफी खुश दिखायी देते थे।

एक दिन मैं उस टापू पर टहल रहा था कि मुझे एक पत्थर का बहुत बड़ा मकान दिखायी दिया। उसके दरवाजे पर लिखा हुआ था — “जब भी कोई आदमी इस टापू पर आता है तो उसके लिये इस टापू को छोड़ना मुश्किल है क्योंकि यहाँ के बन्दर किसी आदमी को अपना राजा बनाना चाहते हैं।

अगर वह यहाँ से भागने का रास्ता ढूँढने की कोशिश करता है तो उसको लगता है कि ऐसा कोई रास्ता है ही नहीं, पर एक रास्ता है और वह रास्ता यहाँ से उत्तर की तरफ है।

अगर तुम उस तरफ जाओगे तो तुमको एक मैदान मिलेगा जहाँ बहुत सारे शेर और साँप रहते हैं। तुमको उन सबसे लड़ना होगा और जब तुम उनको जीत लोगे तभी तुम आगे जा सकते हो।

आगे जा कर तुम्हें एक और मैदान मिलेगा जहाँ कुत्तों जितनी बड़ी चींटियाँ रहतीं हैं। उनके दाँत भी कुत्तों के दाँत जैसे हैं और वे बड़ी भयानक हैं। तुमको उनसे भी लड़ना होगा और अगर तुमने उनको जीत लिया तो बस फिर आगे का रास्ता साफ है।”

मैंने यह खबर अपने नौकरों को बतायी तो हम लोग इस नतीजे पर पहुँचे कि मरना तो हमें दोनों तरीके से है तो क्यों न हम अपनी आजादी को पाने के लिये लड़ते हुए मरें।

हम सबके पास हथियार थे सो हम लोग उत्तर की तरफ चल दिये। जब हम पहले मैदान में पहुँचे तो शेर चीतों और साँपों से लड़ाई में हमारे दो नौकर मारे गये। फिर हम दूसरे मैदान में पहुँचे।

वहॉ भी हमारे दो नौकर मारे गये सो मैं अकेला ही वहॉ से बच कर निकल पाया।

उसके बाद मैं बहुत दिनों तक घूमता रहा। जो कुछ मिल जाता था वही खा लेता था। आखिर मैं एक शहर में आ पहुँचा जहॉ मैं कुछ दिन रहा। वहॉ मैंने नौकरी ढूँढने की भी कोशिश की पर कोई नौकरी मुझे मिली ही नहीं।

एक दिन एक आदमी मेरे पास आया और बोला — "क्या तुम काम की तलाश में हो?"

"हॉ? हूँ तो।"

"तो मेरे साथ आओ।" और मैं उसके साथ उसके घर चला गया।

वहॉ पहुँचने पर उसने मुझे एक ऊँट की खाल दिखायी और बोला — "मैं तुमको इस खाल में बन्द कर दूँगा और एक बहुत बड़ा चिड़ा तुमको दूर के एक पहाड़ पर ले जायेगा। जब वह तुमको वहॉ ले जायेगा तो वहॉ वह तुम्हारी इस खाल को फाड़ देगा।

उस समय तुम उसको भगा देना और कुछ जवाहरात जो तुमको वहॉ मिलेंगे उनको नीचे फेंक देना। जब वे सब जवाहरात नीचे आ जायेंगे तो मैं तुमको नीचे ले आऊँगा।"

सो उसने मुझे उस ऊँट की खाल में बन्द कर दिया और एक चिड़ा मुझे एक पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहॉ वह मुझे खाने ही वाला था कि मैं उस खाल में से कूद पड़ा और मैंने उसको डरा कर

भगा दिया। उसके बाद मैंने बहुत सारे जवाहरात नीचे की तरफ फेंक दिये।

जवाहरात फेंकने के बाद मैंने उस आदमी को कई बार पुकारा पर उसने कोई जवाब नहीं दिया। वह आदमी वे जवाहरात ले कर चला गया था और मैं उस पहाड़ पर ही रह गया।

मैंने तो अपने आपको मरा हुआ ही समझ लिया था। मैं वहाँ उस बड़े जंगल में बहुत दिनों तक घूमता रहा कि मुझे एक अकेला घर मिला।

उस घर में एक बूढ़ा रहता था उसने मुझे खाना और पानी दिया जिससे मेरी जान में जान आयी। मैं वहाँ काफी समय तक रहा। वह बूढ़ा मुझे अपने बेटे की तरह से प्यार करता था।

एक दिन वह बूढ़ा कहीं बाहर गया तो उसने मुझे अपनी सारी चाभियाँ देते हुए कहा कि मैं उसके घर का कोई भी कमरा खोल सकता हूँ सिवाय एक कमरे के।

और जैसा कि अक्सर होता है कि अगर किसी आदमी को किसी काम करने से मना करो तो वह आदमी सबसे पहले वही काम करता है सो जैसे ही वह बूढ़ा चला गया मैंने उसका वही कमरा सबसे पहले खोला जिसको उसने मुझसे खोलने के लिये मना किया था।

मैंने वह कमरा खोला तो वहाँ मुझे एक बड़ा सा बागीचा दिखायी दिया जिसमें एक छोटी सी नदी बह रही थी। उसी समय

वहॉ तीन चिड़ियॉ उड़ कर आयीं और उस नदी के किनारे बैठ गयीं।

बैठते ही वे तीनों चिड़ियॉ तीन बहुत सुन्दर लड़कियों में बदल गयीं। तीनों ने अपने कपड़े उतार कर किनारे पर रखे, नदी में नहायीं, फिर कपड़े पहने और फिर से चिड़ियों में बदल कर फुर्र से उड़ गयीं। मैं यह सब देखता रहा।

मैंने दरवाजे को ताला लगा दिया और चला गया। पर मेरी भूख गायब हो गयी थी। मैं इधर उधर बिना किसी काम के घूमता रहता। जब वह बूढ़ा घर वापस लौटा तो उसने मेरा यह अजीब हाल देखा तो मुझसे पूछा — "क्या बात है तुम ऐसे क्यों घूम रहे हो?"

मैंने उसे बता दिया कि मैंने वे तीन लड़कियॉ देखीं थीं जिनमें से एक मुझे बहुत अच्छी लगी। अगर मैं उससे शादी नहीं कर पाया तो मैं मर जाऊॅगा।

उस बूढ़े आदमी ने बताया कि यह तो मुमकिन ही नहीं था क्योंकि वे तीनों लड़कियॉ जिनी के राजा की लड़कियॉ थीं और जहॉ हम थे वे वहॉ से तीन साल की दूरी पर रहतीं थीं।

मैंने उससे कहा कि मेरा मन इस बात को नहीं मानता और किसी तरह वह मेरी शादी उस लड़की से करा दे नहीं तो मैं मर जाऊॅगा। आखिर उसने मुझे एक सलाह दी।

वह बोला जब तक वे दोबारा आती हैं तब तक तुम उनका इन्तजार करो और जब वे आयें तो जिसको तुम सबसे ज़्यादा चाहते हो छिप कर उसके कपड़े चुरा लेना।

सो मैंने उनका इन्तजार किया। जब वे आयीं तो मैंने उस लड़की के कपड़े चुरा लिये जिससे मुझको शादी करनी थी। जब वह नहा कर पानी में से बाहर निकली तो उसे उसके कपड़े नहीं मिले।

वह इधर उधर देखने लगी तो मैंने आगे बढ़ कर उससे कहा — "तुम्हारे कपड़े मेरे पास हैं।"

उसने मुझसे अपने कपड़े माँगे — "मेरे कपड़े दे दीजिये मैं जाना चाहती हूँ।"

मैंने उससे कहा कि मैं तुमको बहुत प्यार करता हूँ और तुमसे शादी करना चाहता हूँ। वह बोली मैं अपने पिता के पास जाना चाहती हूँ। मैंने कहा तुम अब अपने पिता के पास नहीं जा सकतीं।

उसकी बहिनें तो अपने अपने कपड़े पहन कर उड़ गयीं पर वह नहीं जा सकी क्योंकि उसके कपड़े मेरे पास थे। मैं उसको घर के अन्दर ले आया। उस बूढ़े ने हमारी शादी करवा दी और मुझसे उसके कपड़े जो मैंने चुरा लिये थे देने के लिये मना कर दिया।

बल्कि उसने मुझसे कहा कि मैं उनको छिपा कर रख दूँ क्योंकि अगर उसको वे कपड़े मिल गये तो वह फिर उड़ कर अपने पिता के घर चली जायेगी और फिर मुझे वापस नहीं मिलेगी। सो मैंने उसके कपड़ों को एक गड्ढा खोद कर उस गड्ढे में दबा दिया।

लेकिन एक दिन जब मैं घर में नहीं था तो उसने वे कपड़े गड्ढे में से निकाल लिये और पहन लिये और एक नौकरानी से जो मैंने उसकी सेवा के लिये दे रखी थी बोली — "जब तुम्हारे मालिक लौट कर आयें तो उनको बोलना कि मैं घर चली गयी हूॅ। अगर वह मुझसे सच्चा प्यार करते होंगे तो मेरे पीछे पीछे चले आयेंगे।" और वह उड़ गयी।

जब मैं घर आया तो उन लोगों ने मुझे यह सब बताया। मैं कई सालों तक उसकी तलाश करता रहा। आखिर मैं एक शहर में आया जहॉ मुझसे एक आदमी ने पूछा — "तुम कौन हो?"

मैंने कहा — "जान शाह।"

"और तुम्हारे पिता का नाम?"

"ताईगैमस।"

वह फिर बोला — "क्या तुम ही वह आदमी हो जिसने हमारी मालकिन से शादी की थी?"

मैंने पूछा — "कौन है तुम्हारी मालकिन?"

"सैदाती शम्स[70]।"

मैं खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ मैं ही तो हूॅ वह।"

वह मुझे अपनी मालकिन के पास ले गया। यह वही लड़की थी जिससे मैंने शादी की थी। वह मुझे अपने पिता के पास ले गयी और

---

[70] Sayadaatee Shams – name of the daughter of the King of Jinni

उसको बताया कि मैं ही उसका पति था। सब लोग बहुत खुश हुए।

फिर हमने सोचा कि हम एक बार अपना पुराना घर देख कर आयें तो उसके पिता का जिनी हमको तीन दिन में वहाँ ले गया। हम वहाँ एक साल रहे और फिर लौट आये। लेकिन कुछ ही समय बाद मेरी पत्नी मर गयी।

उसके मरने के बाद मैं बहुत दुखी हो गया। उसके पिता ने मुझे बहुत समझाने की कोशिश की। अपनी दूसरी बेटी की शादी भी मुझ से करनी चाही पर मुझे उसके बिना कुछ अच्छा नहीं लगता था और आज तक मैं उसी के दुख में दुखी हूँ। यही है मेरी कहानी।"

अपनी कहानी सुनाने के बाद बोलूकिया अपने रास्ते चला गया और इधर उधर घूमता रहा फिर मर गया।"

कहानी सुनने के बाद हसीबू ने साँपों के राजा से उसको घर भेजने की प्रार्थना की। पर साँपों के राजा सुलतानी वानीओका ने हसीबू से कहा — "जब तुम घर चले जाओगे तुम जरूर ही मुझे नुकसान पहुँचाओगे?"

हसीबू को उसका यह विचार बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा पर वह बोला — "मैं किसी भी तरह आपको किसी भी तरह का नुकसान पहुँचाने की सोच भी नहीं सकता। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे मेरे घर भेज दीजिये।"

सॉपों का राजा बोला — "मैं तुमको घर भेज तो दूँगा पर मुझे यकीन है कि तुम वापस जरूर आओगे और मुझे मार डालोगे।"

हसीबू फिर बोला — "मैं इतना बेवफा कभी नहीं हो सकता कि मैं आपको मारने के लिये यहॉ वापस आऊॅ। मैं कसम खाता हूॅ कि मैं आपको कभी कोई नुकसान नहीं पहुॅचाऊॅगा।"

सॉपों के राजा ने कहा — "ठीक है, मैं तुम्हारी बात माने लेता हूॅ पर मेरी एक बात का ख्याल रखना कि जहॉ बहुत सारे लोग वहॉ कभी नहीं नहाना।"

हसीबू बोला — "ठीक है मैं वहॉ नहीं नहाऊॅगा।" और राजा ने उसको उसके घर भेज दिया।

हसीबू अपनी मॉ के पास गया। उसकी मॉ तो उसको देख कर बहुत ही खुश हो गयी कि उसका बेटा ज़िन्दा है।

अब हुआ क्या कि जहॉ हसीबू रहता था वहॉ का सुलतान बहुत बीमार पड़ा। वहॉ के डाक्टरों ने कहा कि केवल सॉपों के राजा को मार कर उसको उबाल कर उसके सूप को राजा को पिलाने से ही वह ठीक हो सकता था।

राजा का वजीर जादू के बारे में कुछ जानता था सो उसने बाहर सड़कों पर जो नहाने के घर बने हुए थे वहॉ बहुत सारे आदमी खड़े कर दिये और उनको कह दिया कि अगर कोई ऐसा आदमी यहॉ नहाने आये जिसके पेट पर कोई निशान हो तो उसको पकड़ कर मेरे पास ले आना।

इधर हसीबू को सॉपों के राजा के पास से लौटे तीन दिन हो गये थे। वह सॉपों के राजा की इस बात को बिल्कुल ही भूल गया था कि उसको जहॉ बहुत सारे आदमी हों वहॉ नहीं नहाना था सो वह भी दूसरे लोगों के साथ उस जगह नहाने चला गया जहॉ और बहुत सारे लोग नहा रहे थे।

तभी अचानक उसको कुछ सिपाहियों ने पकड़ लिया और उसको वजीर के पास ले आये।

वजीर ने कहा — "तुम मुझे सॉपों के राजा के पास ले चलो।"

हसीबू बोला — "मैं नहीं जानता वह कहॉ है।"

वजीर ने कहा — "बॉध दो इसको।"

फिर उन्होंने उसको इतना पीटा गया कि उसकी पीठ इतनी घायल हो गयी कि वह बेचारा ठीक से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था।

वह चिल्लाया — "रुक जाओ, मैं तुमको वह जगह दिखाता हूॅ।"

इस प्रकार हसीबू वजीर को सॉपों के राजा के घर ले गया। सॉपों का राजा उसको देखते ही बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि तुम मुझे मारने के लिये वापस आओगे।"

हसीबू चिल्लाया —"मैं क्या करता। ज़रा मेरी पीठ तो देखिये। पीट पीट कर क्या हाल कर दिया है उन्होंने मेरी पीठ का।"

"किसने मारा तुमको इतनी बेदर्दी से?"

"इस वजीर ने।"

साँपों का राजा एक लम्बी साँस ले कर बोला अब मेरे लिये कोई उम्मीद नहीं रह गयी है पर तुम खुद मुझे वहाँ ले कर जाओगे।

जब वे लोग शहर जा रहे थे तो साँपों के राजा ने हसीबू से कहा — "जब हम शहर पहुँच जायेंगे तो वहाँ जा कर मुझे मार दिया जायेगा और मुझे पकाया जायेगा। उसका पहला रस यह वजीर तुमको पिलायेगा पर तुम उस रस को पीना नहीं बल्कि एक बोतल में रख लेना।

फिर वह तुमको दूसरा रस देगा। उसका दूसरा रस तुम पी लेना। उस रस को पी कर तुम बहुत बड़े डाक्टर बन जाओगे। उसका तीसरा रस वह दवा होगी जो सुलतान को ठीक करेगी।

जब वजीर तुमसे यह पूछे कि क्या तुमने वह पहले वाला रस पी लिया तो तुम उसको बोलना कि हाँ मैंने वह रस पी लिया। यह कह कर वह पहले रस वाली बोतल निकाल कर उस रस को वजीर को देना और कहना कि यह दूसरा रस तुम्हारे लिये है।

जैसे ही वह पहला वाला रस पियेगा वह मर जायेगा। इस तरह से हम दोनों का बदला पूरा हो जायेगा।

हसीबू ने वैसा ही किया जैसा कि साँपों के राजा ने उसे करने के लिये कहा था।

सॉपों के राजा को पकाने के बाद उस वजीर ने उसका पहला रस पीने के लिये हसीबू को दिया पर सॉपों के राजा की बात याद करके उसने वह रस एक बोतल में रख लिया।

जब उसको दूसरा रस दिया गया तो वह उसने पी लिया जिसने उसको एक बहुत बड़ा डाक्टर बना दिया। तीसरा रस उसने रख लिया क्योंकि वह तो राजा को ठीक करने वाला रस था।

जव वजीर ने उससे पूछा कि क्या उसने वह पहला वाला रस पी लिया तो उसने झूठ बोल दिया कि हॉ मैंने वह रस पी लिया और उसने पहली वाली बोतल निकाल कर उसको दे दी और उससे कहा कि "लो यह दूसरी बोतल तुम्हारे लिये है।"

वजीर ने दूसरी बोतल का रस पी लिया और मर गया। तीसरी बोतल के रस को उसने सुलतान को पिला दिया जिससे सुलतान ठीक हो गया।

यह देख कर और सारे डाक्टर हसीबू की एक अच्छे डाक्टर की हैसियत से बहुत इज़्ज़त करने लगे।

Classic Books of African Folktales in Hindi
Translated by Sushma Gupta

1901 **Zanzibar Tales.**
No 1 by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.

1910 **Folktales From Southern Nigeria.**
No 15 By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.

1917 **West African Folk-Tales**
No 20 By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.

1947 **The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14 By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.

1962 **Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8 By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales

1998 **African Folktales.**
No 12 By Alessandro Ceni. 18 tales.

2001 **Orphan Girl and Other Stories.**
No 13 By Buchi Offodile. 41 tales

2002 **Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7 ed Nelson Mandela. 32 tales

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales.
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. The Facetious Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales.
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt.   1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. 1903.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022